श्री नवग्रह शांति विधान

रचनाकार :
आर्ष मार्ग संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी दिगम्बर
जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

संपादन :
वात्सल्यमूर्ति गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी

प्रकाशक :
श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन
श्री अतिशय क्षेत्र धर्मतीर्थ
धर्मतीर्थ क्षेत्र कचनेर के पास, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
Email : dharamrajshree@gmail.com

Created by Universal Document Converter

पुस्तक का नाम	:	श्री नवग्रह शांति विधान
आशीर्वाद	:	गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव
रचनाकार	:	प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव
सहयोग	:	मुनिश्री सुयशगुप्तजी, मुनिश्री चन्द्रगुप्तजी
संपादन	:	वात्सल्यमूर्ति गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी
सहयोगी	:	मुनि श्री विमलगुप्तजी, मुनि श्री विनयगुप्तजी गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी आर्यिका आस्थाश्री माताजी क्षुल्लक श्री धर्मगुप्तजी, क्षुल्लक श्री शांतिगुप्तजी क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी, क्षुल्लिका तीर्थश्री माताजी ब्र. केशरबाई
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	रचनाकाराधीन
संस्करण	:	प्रथम - सन् 2004 : 2100 प्रतियाँ द्वितीय - सन् 2005 : 2100 प्रतियाँ तृतीय - सन् 2006 : 5500 प्रतियाँ चतुर्थ - सन् 2010 : 5500 प्रतियाँ पंचम - सन् 2015 : 7000 प्रतियाँ षष्ठम - सन् 2020 : 2000 प्रतियाँ
प्रकाशन	:	श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, धर्मतीर्थ क्षेत्र कचनेर के पास, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) Email : dharamrajshree@gmail.com
प्राप्ति स्थानः		1. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ 2. श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332 3. श्री नितिन नखाते, नागपुर, 9422147288 4. श्री राजेश जैन (केबल वाले), नागपुर 9422816770 5. श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922 6. श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687
मुद्रक	:	राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर मो.नं. : 9829050791 E-mail : rajugraphicart@gmail.com

Created by Universal Document Converter

कहाँ क्या है....

1.	आशीर्वाद	4
2.	शुभ संदेश व मंगल कामनायें	5
3.	प्रस्तावना	7
4.	संपादकीय	13
5.	दो शब्द	18
6.	श्री नवग्रह शांति विधान का माण्डला	21
7.	विनय पाठ, पूजा प्रारम्भ	22
8.	श्री नित्यमह पूजा	27
9	ऋद्धि मंत्र	31
10.	श्री नवदेवता पूजन	32
11.	नवग्रहारिष्ट निवारक समुच्चय पूजा	35
12.	नवग्रह शांति स्तोत्र एवं विधान स्तोत्र	40
13.	नवग्रहारिष्ट निवारक समुच्चय पूजा	43
14.	रविग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु पूजा	47
15.	चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभु पूजा	54
16.	भौमग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य पूजा	61
17.	बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री शांतिनाथ पूजा	67
18.	गुरुग्रहारिष्ट निवारक श्री आदिनाथ पूजा	76
19.	शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत पूजा	85
20.	शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा	92
21.	राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ पूजा	99
22.	केतुग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ पूजा	106
23.	समुच्चय जयमाला	113
24.	प्रशस्ति	115
25.	आरती संग्रह	116
26.	नवग्रह होम (हवन) कुंड मंडप	122
27.	पंचम श्रुतकेवली आचार्यश्री भद्रबाहु स्वामी की पूजा	123
28.	प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव की पूजा, आरती	127
29.	नवग्रहारिष्ट निवारक यंत्र-मंत्र	141
30.	समुच्चय अर्घ	143
31.	शांतिपाठ (हिन्दी), विसर्जन पाठ	144-145
32.	साहित्य सूची	146

Created by Universal Document Converter

आशीर्वाद

बड़ी प्रशंसा की बात है कि आचार्य गुप्तिनंदी महाराज के द्वारा '' श्री नवग्रह शांति विधान'' लिखा गया। अब वह प्रकाशित होने जा रहा है। इस विधान में एक-एक ग्रह की पृथक्-पृथक् पूजा है। उस पूजा में एकेक तीर्थंकर की पूजा यक्ष-यक्षिणी के सत्कार का नियम है। इस प्रकार की पूजा से समस्त ग्रहों की शांति होती है। आपने पूजा लिखने में बहुत अच्छा प्रयत्न किया है। आपकी मेहनत सराहनीय है। इसी प्रकार जिनवाणी की सेवा करते रहो ऐसी मैं मंगल कामना करता हूँ। समाज को ग्रहों की शांति के लिए यह विधान करना चाहिए तथा लाभ उठाना चाहिए।

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य कुन्थुसागरजी

दिनांक 26 जुलाई, 2004 **कुंथुगिरी**

Created by Universal Document Converter

शुभ संदेश व मंगल कामनायें

(पूजा का स्वरूप व फल)

(चाल - यमुना किनारे...)

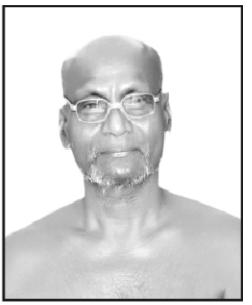

पूज्य पुरुषों की पूजा सदा ही करो।
पूज्य गुण स्मरण व कीर्तन करो॥
यथायोग्य पूज्य गुण ग्रहण करो।
सातिशय पुण्य से स्वर्ग-मोक्ष को वरो॥1॥

देव-शास्त्र-गुरु हैं पूज्य हमारे।
वीतरागी देव बनना लक्ष्य हमारे॥
लक्ष्य प्रतिपादक है शास्त्र हमारे।
लक्ष्य के साधक हैं गुरु हमारे॥2॥

तन-मन-वचन से पूजा विधेय।
कृत-कारित-अनुमत से यह विधेय॥
ख्याति-पूजा-लाभ परे पूजा विधेय।
श्रद्धा-भक्ति-शक्ति से यह विधेय॥3॥

पूजा से परिणाम को निर्मल/पावन करो।
सातिशय पुण्य बान्धो व पाप विनाशो॥
संकट-संक्लेश-संताप विनाश करो।
स्वर्ग-मोक्ष-सुख को पाया ही करो॥4॥

भाव सहित पूजा करते हैं श्रावक।
श्रमण होता मुख्यतः भाव पूजक॥
पूजा से पूज्य बनना है लक्ष्य सभी का।
आत्मोपलब्धि करना है लक्ष्य 'कनक' का॥5॥

Created by Universal Document Converter

गुप्तिनंदी शिष्य रचते विविध विधान।
उनके लिये प्रतिनमोऽस्तु है मम॥
सहायक प्रकाशक पूजक जनों को।
शुभाशीर्वाद मंगल कामना सभी को॥6॥

हर मनुष्य को पूज्य पुरुषों की पूजा करना चाहिये। हम पूजा में पूज्य पुरुषों के गुण स्मरण और उनका कीर्त्तन करते हैं। पूज्य पुरुषों से उनके गुण ग्रहण करते हैं। इस पूजा से सातिशय पुण्य का बंध होता है। यह पूजा स्वर्ग व परम्परा से मोक्ष दिलाती है। मन, वचन, काय और कृतकारित अनुमोदना से पूजा करना चाहिये। ख्याति लाभ मान-प्रतिष्ठा से दूर रहकर पूजा करना चाहिये। पूजा से अपने परिणाम निर्मल बनाना चाहिये, शुद्धि से की गई पूजा ही पाप को नष्ट करती है।

श्रावक द्रव्य सहित पूजा करता है और श्रमण भाव से पूजा करते हैं। पूजा से पूज्य बनना ही हमारा लक्ष्य है। ऐसे पवित्र भावना से हमारे प्रिय शिष्य आचार्य गुप्तिनंदी ने अनेक विधानों की रचना की है। उन विधानों में एक अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाला 'नवग्रह शांति विधान' है। हमारे आचार्यों ने नवग्रह के विषय में अनेक ग्रंथों में बताया है। तत्त्वार्थ सूत्र के 4 अध्याय में ज्योतिष देवों का वर्णन आया है। यह विधान करने वाले सभी भक्त आत्मोपलब्धि को प्राप्त करें। वही मेरा भी लक्ष्य है।

आचार्य गुप्तिनंदी को प्रति नमोऽस्तु। सहायक, पूजक, प्रकाशक सभी को शुभाशीर्वाद।

-आचार्य कनकनंदीजी
23-12-2015, सागवाड़ा

Created by Universal Document Converter

प्रस्तावना

जन्म जन्म कृतं पापं, जन्म कोटि समार्जितं।
जन्म मृत्यु जरा रोगं, हन्यते जिन वंदनात्॥

श्री जिनेन्द्र प्रभु की वंदना करने से कोटि जन्म–जन्मान्तरों के संचित पाप जन्म, जरा (बुढ़ापा) मृत्यु आदि शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक आदि सर्व रोग विनाश को प्राप्त होते हैं।

करणानुयोग ग्रंथों में आचार्यों ने प्रत्येक कर्म के बंध व उदय में तद्योग्य द्रव्य चतुष्टय का सद्भाव व विरोधी द्रव्य चतुष्टय का अभाव बताया है। इसके बिना प्रत्येक कर्म अपने फलदान में असमर्थ है।

द्रव्य चतुष्टय का तीसरा घटक काल है। ज्योतिषी देवों के भ्रमण से व्यवहार काल के परिवर्तन का ज्ञान होता रहता है। आचार्य श्री उमास्वामी जी ने तत्त्वार्थ सूत्र के चतुर्थ अध्याय में ज्योतिष देवों के पाँच भेद इस प्रकार बताये हैं–

ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च॥12॥
तत्कृतः काल विभागः॥14॥

इनके कारण व्यवहार काल का विभाग होता है अर्थात् घड़ी, घंटा, मिनिट, दिन–रात, सप्ताह, पक्ष, मास, वर्ष आदि इनके गमनागमन से परिवर्तित होते हैं। चराचर जगत की नवीनता, प्राचीनता, मनुष्यादि जीव के आयु की गणना भी इससे होती है। ग्रहों के गमनागमन से जीव जगत पर उनकी अनुकूल व प्रतिकूल दृष्टि भी पड़ती है।

जीव के जन्म के समय प्रवर्तमान राशि नक्षत्र के चरणानुसार उसकी महादशा, अंतर, प्रत्यंतर दशा का ज्ञान हो जाता है। ज्योतिष के गूढ़ अभ्यासी जातक की कुंडली को देखकर उसका बहुतांश शुभाशुभ भविष्य जान लेते हैं। **हमें यह अच्छी तरह जान लेना चाहिए कि कुण्डली या ग्रह हमारा तनिक भी शुभाशुभ या हिताहित करने में समर्थ नहीं है। वह मात्र हमारे भूतकाल का**

Created by Universal Document Converter

लेखाजोखा और भविष्य का सूचक है। उसके माध्यम से हमें यह जानकारी मिलती है कि हमारा यह समय अच्छा या बुरा है, यदि बुरे या कमजोर समय में हम सावधानी रखे भगवान की पूजा, भक्ति, मंत्र–जाप, सद्कार्य, सद्भावना, सत्पात्र को दानादि करते हैं तो वही समय अच्छा हो जाता है और सामान्य अशुभ कर्म भी शुभ कर्म में परिणत हो जाता है। इसलिए प्रयत्नपूर्वक अशुभ द्रव्य–क्षेत्र–काल–भाव को त्यागकर शुभ द्रव्य–क्षेत्र–काल–भाव का आश्रय लेना चाहिए। मुहूर्त व ज्योतिष ग्रंथों के महत्त्व को जैनाचार्यों ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है। जिसके अनेक उद्धरण प्रसंग प्रथमानुयोग ग्रन्थों में आते हैं। श्री धवला ग्रन्थकर्त्ता वीरसेनाचार्य के शिष्य श्री जिनसेनाचार्य जिन्होंने श्री जयधवला, श्री पार्श्वाभ्युदय, श्री वर्धमान पुराण व श्री महापुराण (आदिपुराण) जैसे महान् ग्रंथों की रचना की, उनके श्री आदिपुराण ग्रन्थ के अनुसार ''श्री आदि तीर्थंकर राजा वृषभनाथ के समय जब कर्मभूमि का आरम्भ हुआ तब स्वयं सौधर्म इन्द्र ने उत्तम मुहूर्त में जिनालय निर्माण से नगर निर्माण आरम्भ किया। यथा–

शुभ दिने सुनक्षत्रे, सुमुहूर्त्ते शुभोदये।
स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषुच्चैरानुकूल्ये जगद्गुरौ॥ (149)

कृत प्रथम मांगल्ये, सुरेन्द्रों जिनमंदिरम्।
न्यवेशयत् पुरस्थास्य, मध्ये दिक्ष्वप्यनुक्रमात्॥ (150)

–आदिपुराण, प्रथम खण्ड, 16 पर्व, पृ. 359

अर्थात् शुभ दिन, शुभ नक्षत्र, शुभ मुहूर्त्त और शुभ लग्न के समय तथा सूर्यादि ग्रहों के अपने–अपने उच्च स्थानों में स्थित रहने और जगद्गुरु भगवान के हर एक प्रकार की अनुकूलता होने पर इन्द्र ने प्रथम ही मांगलिक कार्य किया। फिर उसी अयोध्यापुरी के बीच में जिनमंदिर की रचना की। इसके बाद पूर्व, दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर इस प्रकार चारों दिशाओं में यथाक्रम से जिनमंदिरों की रचना की''।

वैसे तीर्थंकर आदि महापुरुषों पर काल आदि का अधिक प्रभाव नहीं पड़ता है। जिस काल में उनके गर्भ, जन्म, दीक्षा केवलज्ञान व निर्वाण कल्याणक होते हैं वही उनके लिए शुभ हो जाता है तथा वह काल हमारे लिए भी मंगल व कल्याणकारी हो जाता है। लेकिन सामान्य जीवों को उत्तम समय का उल्लंघन न

Created by Universal Document Converter

करते हुए अपना मांगलिक कार्य शुभ मुहूर्त में ही करना चाहिए। आचार्यश्री भद्रबाहु स्वामी ने श्री 'भद्रबाहु क्रियासार' में स्पष्ट कहा है कि बिना मुहूर्त्त की दीक्षा मारती है– पदच्युत कराती है। यथा–

इय सम्मं णाऊणं लग्गबलं दिज्जए णरे दिक्खा।
लग्गेण विणा दिक्खा मारइ णासे फेडेइ। (31)–श्री भद्रबाहु क्रियासार

इस प्रकार मनुष्य में लग्न बल ठीक प्रकार से जानकर दीक्षा दी जाती है। लग्न के बिना दी गई दीक्षा मारती है, नाश करती है या स्फेटन करती है।

समाधिमरण के श्रेष्ठतम ग्रंथ श्री भगवती आराधना, मरण कण्डिका ग्रंथ में समाधि ग्रहण के योग्य काल व समाधि के बाद जघन्य–मध्यम–उत्तम नक्षत्रों व उनसे क्षपक के परलोकगमन, आचार्य संघ व राज्य पर प्रभाव इत्यादि पर विस्तृत वर्णन किया है। इस प्रकार जैन वांग्मय में जन्म से लेकर जिनालय निर्माण, प्रतिष्ठा, दीक्षा और समाधि आदि तक मुहूर्त्त व ज्योतिष शास्त्र का महत्त्व व उपयोग बताया है।

ज्योतिषवेत्ता आचार्य वराहमिहिर के अनुसार– हमारा शरीर भी ग्रहों का कक्षा वृत्त है। इसमें शरीर के 12 विभाग किये जाते हैं– (1) मस्तिष्क (2) मुख (3) वक्षस्थल (दोनों हाथ) (4) हृदय व पीठ (5) उदर (6) कमर (7) वस्ति (8) लिंग (9) जंघा (10) घुटना (11) पिंडली और (12) पैर। इन पर क्रमानुसार (1) मेष (2) वृषभ (3) मिथुन (4) कर्क (5) सिंह (6) कन्या (7) तुला (8) वृश्चिक (9) धनु (10) मकर (11) कुंभ (12) मीन इन राशियों का प्रभाव पड़ता है।

इन बारह राशियों में भ्रमण करने वाले ग्रहों में सूर्य–आत्मा कारक, चन्द्रमा–मन कारक, मंगल–पराक्रम, नेतृत्व व धैर्यकारक, बुध–वाणी, लेखन व व्यापार कारक, गुरु–विवेक, सद्ज्ञान व गांभीर्य कारक, शुक्र–सृजन व वीर्यकारक, शनि–वैराग्य व संवेदना कारक माना गया है। हमारे शरीर स्थित सौर चक्र का भ्रमण, खगोल स्थित ग्रह मंडल के नियम अनुसार होता है, ग्रहों की गति अनुसार जीव के शरीर पर उनका अनुकूल व प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

Created by Universal Document Converter

ज्योतिर्विज्ञान अनुसार जीव जिस नक्षत्र, ग्रह, राशि, लग्न में तथा प्रभावी प्रदेश में जन्म लेता है, वह तत्त्व उसमें विशेष रूप से पाये जाते हैं, ग्रहों की गति, स्थिति अनुसार उन तत्त्वों पर भी हीनाधिक प्रभाव पड़ता है, ग्रहों का प्रभाव मानव के साथ-साथ पशु, पक्षी, प्रकृति, पर्यावरण प्रदेश आदि पर भी पड़ता है। नभगामी ग्रहों नक्षत्रों में अमृत व विष दोनों ही तत्त्व होते हैं तथा वे सदा एक समान नहीं रहते। उनमें गति व स्थानानुसार परिवर्तन होता रहता है। उनके विशेष तत्त्वों अमृत दृष्टि व शुभ प्रभाव की प्राप्ति हेतु ही मुहूर्त्त साधन का विधान है।

फलित ज्योतिष में ग्रहों के दुष्प्रभाव, अरिष्ट से बचने के लिए रत्न धारण का विधान भी बताया है, वह भी विज्ञान सम्मत है। सर्व जगत् को विदित ही है- तथा पूर्व में भी यह सिद्ध किया था कि सर्व ग्रहों का प्रभाव अभीष्ट पाषाण, रंग, रूप, आकार, देश, पुष्प, फल, प्रकृति, धातु, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति आदि पर मुख्य रूप से पड़ता है तथा अभीष्ट राशि के योग्य रत्न धारण करने से हमारे शरीर में उन तत्त्वों का संतुलन बन जाता है तथा अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

बहुमूल्य रत्नों को पहचानना उन्हें खरीदना व धारण करना सर्व सामान्य प्राणी के लिए असंभव व दुष्कर है। अतः सर्वत्र सुलभ और सरल मार्ग भी ज्योतिर्ग्रन्थों में बताया है जिसे हर एक प्राणी सहजता से कर सकता है। नवग्रहों की अरिष्ट शांति हेतु प्रत्येक ग्रहों के लिए अलग-अलग वर्ण के पुष्प व फल घर से अपने हाथ में लेकर जिनालय में भगवान को समर्पित किये जायें। उनके समक्ष पूजा व जाप की जाये तो विवक्षित ग्रहारिष्ट स्वयमेव शांत हो जाता है।

जैन पूजा विधान ग्रंथों में ग्रहों की अरिष्ट शांति हेतु अलग-अलग तीर्थंकरों की पूजा उनके नाम मंत्र का जाप बताया है। यथा-

क्र.	ग्रह	तीर्थंकर	परमेष्ठी	पुष्प व फल
1.	सूर्य	श्री पद्मप्रभु	श्री सिद्ध परमेष्ठी	रक्त व पीत वर्ण
2.	चन्द्र	श्री चन्द्रप्रभु	श्री अरिहंत परमेष्ठी	श्वेत वर्ण
3.	भौम (मंगल)	श्री वासुपूज्य	श्री सिद्ध परमेष्ठी	रक्त वर्ण
4.	बुध	श्री विमलादि 8 प्रभु	श्री उपाध्याय परमेष्ठी	हरित वर्ण

Created by Universal Document Converter

5.	गुरु	श्री वृषभादि 8 प्रभु	श्री आचार्य परमेष्ठी	पीत वर्ण
6.	शुक्र	श्री पुष्पदंत	श्री अरिहंत परमेष्ठी	श्वेत वर्ण
7.	शनि	श्री मुनिसुव्रत	श्री साधु परमेष्ठी	कृष्ण व नील वर्ण
8.	राहू	श्री नेमीनाथ	श्री साधु परमेष्ठी	कृष्ण वर्ण
9.	केतु	श्री मल्लिनाथ व श्री पार्श्वनाथ	श्री साधु परमेष्ठी	कृष्ण वर्ण

प्रत्येक नक्षत्र के 4 चरण होते हैं तथा सवा दो नक्षत्र की एक राशि होती है, राशि के स्वामी ग्रह होते हैं। ग्रहों के अधिपति तीर्थंकर बताये गये हैं। अतः चाहे 27 नक्षत्र, 12 राशि, 9 ग्रह, 12 भाव व महादशा, अंतर, प्रत्यंतर दशा आदि में से कोई भी प्रतिकूल हो अथवा कालसर्प, मूल दोष, बालारिष्टादि आदि कोई भी कुयोग हो उस समय हमें किसी भी प्रकार की मिथ्यात्व क्रियाओं में नहीं पड़ना चाहिए। अर्ध–ज्ञानी, अज्ञानी ज्योतिष तांत्रिक आदि के वाग्जाल व पाखंड से प्रयत्नपूर्वक बचना चाहिए। मिथ्या देवी–देवताओं की शरण में नहीं जाना चाहिए। अपितु कर्मोदय मानकर दृढ़ता और धैर्य के साथ संघर्ष का सामना करना चाहिए और नवग्रह की शांति हेतु नवग्रह विधान, चौबीस तीर्थंकरों की पूजा व चौबीस तीर्थंकरों के भक्त सेवक उनके शासन रक्षक सम्यग्दृष्टि 24 यक्ष–यक्षिणी देवी–देवताओं का आगमानुसार यथायोग्य सत्कार–सम्मान अर्घ समर्पण करना चाहिए। पंच परमेष्ठियों की आराधना व जीवंत 3 परमेष्ठियों की स्वयं सेवा, वैयावृत्ति गुरु संगति व आहार दानादि करके पाप, ग्रह व चित्त शांत करना चाहिए।

अतः ज्ञानी, दानी, सम्पन्न, विपन्न आदि जिनभक्ति रस में तन्मय होकर पाप से मुक्त हो निज पुण्य कोष भरें। वे किसी भी निमित्त से मिथ्यात्व की शरण में ना जाये। इसी मंगल भावना से पंचम श्रुतकेवली आचार्यश्री भद्रबाहु स्वामी के नवग्रह शांति स्तोत्र को आधार बनाकर उनके ही परोक्ष आशीष कृपा से वर्षायोग–2003 ईस्वी के अन्तर्गत श्री सहस्रकूट जिनालय फलटण में संघस्थ मूलनायक श्री शांतिनाथ भगवान की पुनीत चरण–शरण छांव में मुझे **''श्री नवग्रह शांति विधान''** लिखने का सौभाग्य मिला। श्रावण शुक्ला त्रयोदश, विक्रम संवत् 2060, वीराब्द 2530, रविवार, 10 अगस्त, 2003 श्री अमृत योग व रत्नांकुर योग में

Created by Universal Document Converter

इस विधान का शुभारंभ किया व आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा शुक्रवार, 2 जुलाई, 2004 (वर्षायोग-2004) श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, गांव-भाग, सांगली में यह विधान पूर्ण हुआ। इसी बीच में हमें ससंघ महाराष्ट्र एवं कर्नाटक के श्रवणबेलगोला जैसे अनेक भव्य तीर्थों के दर्शन प्राप्त हुए साथ ही आचार्यश्री सुबलसागरजी की समाधि देखने एवं सीखने का सौभाग्य मिला। यह सब इस विधान का ही सौभाग्य प्रतीत होता है। इस सृजन कार्य के मूल स्रोत अंतिम श्रुतकेवली आचार्यश्री भद्रबाहु स्वामी ही हैं। साथ ही दीक्षा गुरु प.पू.ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी एवं शिक्षागुरु आचार्य श्री कनकनंदीजी का वरद आशीष भी मुझ पर है। उन आचार्य भगवंतों को वंदन है। विधान लिखने की प्रेरणा देने वाली तथा सैद्धान्तिक साहित्यिक शब्दों के प्रयोग से उसकी शोभा बढ़ाने वाली सरस्वती पुत्री समाधिस्थ गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी है। आपने इस विधान का संपादन कर महान् पुण्य अर्जन किया है। इसके फलस्वरूप आपको निःश्रेयस सुख की प्राप्ति हो यही शुभाशीर्वाद है। विधान के लेखन, प्रूफ संशोधन कार्य में विशेष सहयोग आर्यिका क्षमाश्री माताजी, आर्यिका आस्थाश्री का है। साथ ही (क्षुल्लक द्वय) वर्तमान में मुनि सुयशगुप्त एवं मुनि चन्द्रगुप्त का भी सहयोग है।

इस विधान के पंचम संस्करण का प्रकाशन **श्री वर्षायोग समिति-2015, चितरी (राज.)** के संयोजन में चितरी के गुरुभक्त दातारों ने इसका अर्थ सौजन्य स्वप्रेरणा से किया है। एतदर्थ विधान के इन्द्र-इन्द्राणी, समिति, संयोजक, प्रकाशक व द्रव्यदाता सभी को मेरा शुभाशीष है।

यह विधान छोटा होते हुए भी जन-सामान्य के लिए बहुत ही उपयोगी, संकटमोचक और अभीष्ट फलदायक बने ऐसी मेरी भावना है। क्योंकि इसमें जिनभक्ति की शक्ति, श्री भद्रभाहु स्वामी की भावना, प्रेरणा, मार्गदर्शन एवं संबल व पूर्वाचार्यों का आशीष समाहित है। यावच्चन्द्र दिवाकर भव्यात्म जन इस विधान को करें, लाभ लें, दुःख संकट आपत्ति से मुक्त हो व सर्वार्थ सुख-संपत्ति, शांति को प्राप्त करें इसी मंगल कामना के साथ... !

-आचार्य गुप्तिनंदी

Created by Universal Document Converter

सम्पादकीय

कर्म की विचित्र दशा है। अनेक प्रकृतियों के द्वारा वह नाना रूप धारण करके जीव को चतुर्गति एवं नाना गतियों में भ्रमण कराता है। इस कर्म का कर्त्ता स्वयं जीव है और भोक्ता भी जीव है। अतः इस कर्मरूपी युद्ध भूमि में जब जीव प्रबल पुरुषार्थ करता है तब कर्म को मुँह की खानी पड़ती है और जब कर्म प्रबल हो जाता है तब जीव को हार माननी पड़ती है।

कर्म, विधी, विधान, विधाता, दैव, भाग्य, ब्रह्मा आदि कर्म के अनेक पर्यायवाची नाम नाममाला में बताये गये हैं। जीव के स्वतः बाँधे गये कर्मों के उदयानुसार वह उसके शुभ/अशुभ फल भोगता है। जिसके अनुसार ही उसे अनुकूल या प्रतिकूल भव, परिवार, शरीर, बाँधव, मित्र/शत्रु, आरोग्य/रोग, धन/निर्धन, वैभव/दारिद्रय, संपत्ति/विपत्ति, रूप/कुरूप, सौभाग्य/दुर्भाग्य, लाभ/हानि, यश/अपयश आदि प्राप्त होते हैं।

यह जीव द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के सहयोग से कर्म को बाँधता एवं भोगता है। यदि हम इनके प्रभाव का विभाग करें तो द्रव्य को 30%, क्षेत्र को 15%, काल को 15% और भाव को 40% दे सकते हैं। पूर्वकृत कर्मानुसार जीव के हस्तरेखा, चिह्न, सामुद्रिक शास्त्र, ज्योतिषादि कर्म नो-कर्म रूप में प्रगट होते हैं। निज-निज भाग्यानुसार शुभाशुभ काल में जीव का जन्म होता है। जन्म के समय अलग-अलग क्षेत्र से ग्रहों की दृष्टि उस जातक पर पड़ती है। जिस स्थान से, कोण से जितने अंश में ग्रहों की दृष्टि अर्थात् उनकी लाइट जातक पर पड़ती है उसके अनुसार ही जातक के जीवन, शरीर में ग्रहों से प्राप्त किरणों व उनके सूचक तत्त्वों की हीनाधिकता होती है।

जातक के जीवन में ग्रहों, राशियों का बल, स्थान बल, दिशा बल दृष्टि अनुकूल है तो जातक में तद्योग्य अनुकूल तत्त्व, गुण, स्वभाव की वृद्धि होती है

Created by Universal Document Converter

और प्रतिकूलता होने पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अज्ञानी जीव अनुकूल समय में धन–वैभव यशादि पाकर अपने आपको सर्वश्रेष्ठ एवं महान् समझता है और अपने झूंठे अहंकार में सारा समय व्यर्थ खो देता है। धर्म एवं कर्म को भूलकर भोग विषयों में लिप्त रहता है और जब प्रतिकूल समय आता है तब दुःख संकट की घड़ियों में स्वयं को दोष न देकर धर्म–कर्म एवं भगवान को दोष देता है। येन–केन–प्रकारेण स्वयं की प्रगति के लिए उचित–अनुचित का विचार छोड़कर अन्याय–अनीति करने लगता है। अहिंसा धर्म को छोड़ झूठे ज्योतिष, तांत्रिक, मांत्रिक, हस्तरेखा शास्त्रियों के चक्कर में पढ़कर विवेक शून्य हो मिथ्यात्व में फंसकर बलि जैसे खोटे कर्म करने में भी पीछे नहीं रहता है। मिथ्या तंत्र–मंत्र में पड़कर मिथ्या देवी–देवता की शरण में जाता है। ग्रहों के विषय में हमें यह सत्यता ज्ञात होनी चाहिए कि वे ग्रह स्वयं हमारे हिताहित करने में समर्थ नहीं है ये सिर्फ हमारे शुभाशुभ भविष्य के सूचक है।

(प्रत्येक ग्रहों के अरिष्ट परिहार और अभीष्ट की वृद्धि के लिए ज्योतिष ग्रंथों में विभिन्न वर्णों के पुष्प फलों से प्रभु की जाप पूजन बतायी है।)

अंतिम श्रुतकेवली श्री भद्रबाहू स्वामी ने भी श्री नवग्रह शांति स्तोत्र में नवग्रहों के अरिष्ट परिहार के लिए चौबीस तीर्थंकरों की पूजा–स्तुति मंत्र जाप का बहुत ही सुन्दर ढंग से विवेचन किया है। यथा–

सूर्यग्रहारिष्ट शांति हेतु श्री पद्मप्रभु।

चन्द्रग्रहारिष्ट शांति हेतु श्री चन्द्रप्रभु।

मंगलग्रहारिष्ट शांति हेतु श्री वासुपूज्य।

बुधग्रहारिष्ट शांति हेतु श्री विमल, अनंत, धर्म, शांति, कुंथु, अरह, नमि, वर्द्धमान स्वामी।

गुरुग्रहारिष्ट शांति हेतु श्री वृषभ, अजित, संभव, अभिनंदन, सुमति, सुपार्श्व, शीतल, श्रेयांसनाथ।

शुक्रग्रहारिष्ट शांति हेतु श्री पुष्पंदतजी।

Created by Universal Document Converter

शनि ग्रहारिष्ट शांति हेतु श्री मुनिसुव्रतनाथ।

राहुग्रहारिष्ट शांति हेतु श्री नेमिनाथ।

केतु ग्रहारिष्ट शांति हेतु श्री मल्लिनाथ, पार्श्वनाथ भगवान।

इन तीर्थंकरों की आराधना के अलावा यथाक्रम से इन तीर्थंकरों का मंत्र जाप भी करना चाहिए। यथा–

(1) ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः।

(2) ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः।

(3) ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।

(4) ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(5) ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(6) ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः।

(7) ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः।

(8) ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(9) ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

इसके अलावा विद्यानुवाद ग्रंथानुसार पंच परमेष्ठियों का ध्यान, जाप, मंत्र, स्तुति, पूजन आदि के द्वारा ग्रह–अरिष्ट निवारण किया जा सकता है। यथा–

सूर्य–ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं।

चन्द्र–ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं।

मंगल–ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं।

बुध–ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं।

गुरु–ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं।

शुक्र–ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं।

Created by Universal Document Converter

शनि–ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं।

राहु–ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं।

केतु–ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं।

नवग्रह की बाधा आने पर ग्रहानुसार उन तीर्थंकर एवं परमेष्ठी की आराधना की जाये तो नवग्रहारिष्ट बाधा के साथ–साथ आठों कर्मों का नाश होकर अष्टम पृथ्वी पर भी निवास हो सकता है; क्योंकि प्रभु और गुरु की भक्ति ही मुक्ति प्रदान करने वाली है। संसारी प्राणियों का चंचल चित्त मिथ्यामार्ग में ना लगे और दुष्कर्मों से बचे इस भाव से परम करुणावान दयामयी आचार्य भगवन्त ने प्रत्येक ग्रह की शांति हेतु अनेक विधान स्तोत्र पाठों की रचना की है।

इस विधान में उन्हीं पूर्वाचार्यों की परम्परा का पालन करते हुए दीक्षा गुरु परम पूज्य ग.ग. आचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव एवं शिक्षा गुरु वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव के शिष्य प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ने **''श्री नवग्रह शांति विधान''** की रचना गुरु आशीष से की है। बुध, गुरु, शनि, राहु और केतु इन पाँच ग्रहों की बाधा, गुरु की आराधना, भक्ति, पूजन, जाप स्तोत्र, आहारदानादिक शुभ क्रियाओं से दूर हो जाती है; तो फिर जो विधान स्वयं आचार्य परमेष्ठी ने लिखा हैं उनकी लेखनी एवं विशुद्ध परिणामों की ऊर्जा हमारे पापों का शमन अवश्य करायेगी; क्योंकि यह हमारे लिये उनका साक्षात् एवं परोक्ष वरद आशीष है।

प्रस्तुत ग्रन्थ अपने आप में बहुत ही अनूठा विधान है। इसमें आचार्यश्री ने अनेक छन्दों का सरल–सहज प्रयोग करते हुए आगमोक्त सिद्धांतों का समावेश किया है। इसमें तीर्थंकरों की जयमाला में उनके जन्म–केवलज्ञान तथा देवकृत अतिशय का जीवन्त वर्णन होने से पंचकल्याणक व समोशरण का दृश्य साक्षात् नयनों में समाहित हो जाता है। इसके साथ ही किस ग्रह के अरिष्ट निवारण हेतु किस तीर्थंकर या परमेष्ठी की आराधना में किस वर्ण का पुष्प व फल चढ़ाना चाहिए, इसका भी सुन्दर वर्णन किया है।

Created by Universal Document Converter

इस विधान के अलावा आपने **''श्री रत्नत्रय विधान''** व **''सावधान काव्य कृति''** नामक और भी अनेक प्रशंसनीय ग्रन्थों का सृजन किया है। बचपन से ही आपको ज्ञान प्राप्ति, संगीत व काव्य सृजन आदि कला में रुचि है। अल्प वय में आपने भजन, पूजा, कवितायें बनाई हैं। जिसके प्रेरणास्रोत शिक्षा गुरु आचार्य श्री कनंकनंदीजी गुरुदेव हैं। उनकी ही प्रेरणा से इस **''श्री नवग्रह शांति विधान''** की रचना हो सकी। यह ग्रन्थ मिथ्यात्व में भटकते प्राणियों को जैनधर्म की ओर ले आयेगा इस उद्देश्य से इस विधान की रचना हुई है।

इस विधान ग्रन्थ के संपादन का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। यह मेरे पूर्वोपार्जित पुण्यकर्म का ही फल है। इस कार्य में परम पूज्य मुनि श्री सुयशगुप्तजी, मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी, गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी एवं आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने सहयोग करके सातिशय पुण्य प्राप्त किया है।

''श्री नवग्रह शांति विधान'' सभी भव्यात्माओं के लिए शांति का मार्ग प्रशस्त करे तथा मेरे लिए प्रभु भक्ति एवं गुरु आशीष नवग्रह की बाधा से छुटकारा दिलवा कर नव क्षायिक लब्धियों को प्राप्त कराने में निमित्त बने। प्रभु एवं गुरु के इसी आशीर्वाद की कामना सहित...

–स.गणिनी आर्यिका राजश्री

(संघस्था–प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव)

Created by Universal Document Converter

दो शब्द

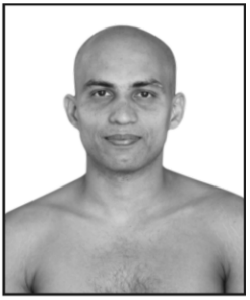

नमस्तस्यै सरस्वत्यै, विमलज्ञानमूर्त्तये।
विचित्रालोकयात्रेयं, यत्प्रसादात्प्रवर्तते॥

हमारे प्राचीन जैनाचार्य ज्ञान-विज्ञान के चलते-फिरते कोष रहे हैं, उनके सतत् चिन्तन, चरित्र और स्वाध्याय की प्रवृत्ति ने नये-नये ग्रन्थों को जन्म दिया है।

साहित्य के क्षेत्र में हमारे जैनाचार्यों का विशेष योगदान रहा है। आचार्यों की कृतियों से हमारे शास्त्र भण्डार सुशोभित हो रहे हैं। जहाँ संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश आदि भाषा के विविध विषयों पर रचे शास्त्रों के सहज ही दर्शन हो सकते हैं; लेकिन वर्तमान काल में हिन्दी भाषा सबसे सरल और सुबोध मानी जाती है तथा उसमें भी पद्यात्मक रचनाओं का अधिक प्रचलन है। प्रस्तुत विधान के रचयिता परम पूज्य प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव अपने दीक्षा गुरु गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी एवं शिक्षा गुरु वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव के प्रमुख शिष्यों में से एक हैं।

पूज्य गुरुदेव का गम्भीर, ज्ञान, शांत, सरल वृत्ति प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। आपकी ओजस्वी वाणी में अद्‌भुत आकर्षण है, आपके श्री मुख से निकला प्रत्येक शब्द श्रोता के हृदय में घर कर जाता है। आप युवा पीढ़ी के पथ-प्रदर्शक हैं। पूज्य गुरुवर का संकल्प है कि जीवन के अंतिम श्वास तक ''संस्कारों का शंखनाद'' करता रहूँगा। आप संस्कारों के माध्यम से व्यक्ति की विकृति दूर करते हुए

Created by Universal Document Converter

उन्हें धर्म और विज्ञान का महत्त्व बताकर जीवन जीने की कला सिखाते हैं, सम्यक् रत्नत्रय का बीजारोपण करते हैं, उनके जीवन को भक्ति, श्रद्धा के सूत्र में संगठित करके जीवन को नई दिशा व क्रांति प्रदान करते हैं।

आपने मध्यप्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, दिल्ली आदि प्रांत के अनेक गाँवों व शहरों में जो संस्कारों का शंखनाद किया है वह शब्दों के द्वारा वर्णन नहीं किया जा सकता है। समाज में नैतिक और सांस्कृतिक जागरण के पूर्व आपने 18 वर्ष की लघुवय में श्रमण चारित्र (दिगम्बर वेष) को धारण कर सिद्ध कर दिया– "Every man is the architect of his fortune" अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माता है। आप ध्यान, अध्ययन, स्वाध्याय, चिन्तन के साथ–साथ साहित्य सृजन के क्षेत्र में भी रत हैं। आप कविहृदय हैं, आपने अपनी काव्य रचना **''सावधान''** की कविताओं में राजनैतिक सामाजिक कुरीतियों, हिंसा, भ्रष्टाचार, गर्भपात, नारी पर होने वाले अत्याचारों पर अच्छा कुठाराघात किया है। आपके द्वारा रचित **''श्री रत्नत्रय आराधना''** (पूजन) व **''श्री रत्नत्रय विधान''** में नई–नई तर्जों, रस एवं अलंकारों से सहित छन्दबद्ध विभिन्न पूजाएँ हैं।

आज के काल में भगवान की भक्ति ही सांसारिक दुःखों से मुक्ति दिलाने में प्रमुख कारण है। आचार्यश्री समन्तभद्र, श्री वादिराजसूरि, श्री मानतुंगाचार्य, आचार्य भट्टाकलंकदेव, धनंजय कवि आदि ने भगवान की भक्ति को ही अपनी मुक्ति का सेतु बनाया था। आज का मानव भौतिकता में रचा–पचा हुआ है और प्रभु भक्ति को भूलकर दुःखों के सागर में डूबता जा रहा है तथा दुःखों से मुक्ति पाने के लिये तरह–तरह के अनायतनों में जाकर मिथ्यात्व का पोषण कर रहा है। अज्ञानतावश झूठे, ढोंगी, पंडितों के पास जाकर ज्योतिष तंत्र–मंत्र, टोना–टोटका आदि में उलझकर अपने अर्थ, समय और श्रद्धा को व्यर्थ गँवा रहा है।

Created by Universal Document Converter

आचार्यश्री द्वारा रचित यह **''श्री नवग्रह शांति विधान''** धर्म को भूले, राह से भटके, मिथ्यात्व की ओर बढ़ते हुए मानवों को सन्मार्ग पर लाने के लिये मार्गदर्शक व उनके जीवन में आने वाली बाधाओं, नवग्रह दोष, आपत्ति-विपत्ति व कष्टों को दूर करने के लिये तारणहार स्वरूप है। प्रस्तुत विधान में पूज्य गुरुदेव ने वर्तमान श्रावकों की रुचि को ध्यान में रखते हुए सरल व सरस पद्यों की रचना की है। इस विधान में 24 तीर्थंकरों एवं पंच-परमेष्ठियों की पूजा, अर्चा व भक्ति को ही नवग्रहों से छूटने का माध्यम बताया है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह विधान श्रावकों को नवग्रहों की बाधा से एवं अन्य सभी दुःखों से छूटने में तथा प्रभु भक्ति करते हुए सम्यक्त्व की प्राप्ति में कारण बनेगा।

पूज्य गुरुदेव की अनुकम्पा हम पर इसी प्रकार बनी रहे और उनकी कीर्ति दिग्दिगांतर तक फैलती रहे, इसी भावना के साथ... !

गुरु चरणार्विंद चंचरीक

- मुनि सुयशगुप्त

(संघस्थ : आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव)

Created by Universal Document Converter

श्री नवग्रह शांति विधान

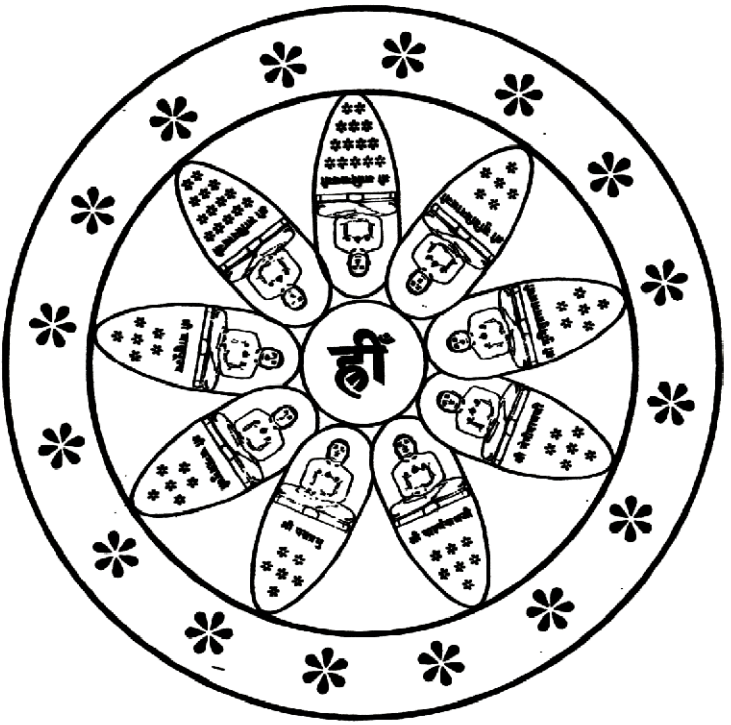

मांडला के अर्घ

(1) श्री पद्मप्रभु-7, (2) श्री चन्द्रप्रभु-7, (3) श्री वासुपूज्य-7, (4) श्री शांतिनाथजी-16, (5) श्री आदिनाथजी-16, (6) श्री नेमिनाथजी-7, (7) श्री पार्श्वनाथजी-8, इस प्रकार पूर्णार्घ्य सहित कुल 68 अर्घ हैं।

Created by Universal Document Converter

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे॥

3
2 卐 24
5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ॥1॥
केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार॥2॥
धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास॥3॥
कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल॥4॥
चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष॥5॥
प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय॥6॥
हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार॥7॥
बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार॥8॥
हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग–द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान॥9॥

Created by Universal Document Converter

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म।।10।।
चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश।।11।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें।।1।।
सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो।।2।।
अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी।।3।।
महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता।।4।।

Created by Universal Document Converter

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन-वच-काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता॥5॥
अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी॥6॥
जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता॥7॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥
त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥
अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है॥

Created by Universal Document Converter

त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है॥3॥
पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥
अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है॥
प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥
सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥
पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥
विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥
कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥
नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

Created by Universal Document Converter

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥
महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥2॥
अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥3॥
स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥4॥
फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥5॥
अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥6॥
मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥7॥
उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥8॥
आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥9॥
क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥10॥

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

Created by Universal Document Converter

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज– हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों॥
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा॥
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन–माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म–जरा–मृत हरता हूँ॥
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना॥ देव शास्त्र..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू॥ देव शास्त्र..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥4॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया॥ देव शास्त्र..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा॥ देव शास्त्र..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ॥ देव शास्त्र..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है॥ देव शास्त्र..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है॥ देव शास्त्र..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोडूँ सब अभिमान॥

शांतये शांतिधारा।

Created by Universal Document Converter

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय-जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर-नार॥

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ॥
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ॥1॥

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ॥
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि-सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले॥2॥

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत-शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन॥
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन॥3॥

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता॥

Created by Universal Document Converter

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन।।7।।

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

Created by Universal Document Converter

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो सव्व साहूणं
(णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।)

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

नोट - जहाँ भी ऋद्धि मंत्र डालते हैं उसमें 'णमो सव्व साहूणं' ये मंत्र लगा दो।

Created by Universal Document Converter

श्री नवदेवता पूजन

रचनाकार : गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी

(शंभु छन्द)

अरिहंत सिद्ध सूरी पाठक साधू परमेष्ठी गुणधारी।
जिनधर्म जिनागम चैत्य जिनालय सबके मन को सुखकारी॥
इन नवदेवों का आह्वानन कर ग्रह अरिष्ट का नाश करें।
तव गुण मन में धारण करके हम मोक्षपुरी में वास करें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पावन चरणों में हे प्रभुवर ! पावन जल भर कर लाया हूँ।
तव वीतराग मुद्रा लखकर मैं मन में अति हर्षाया हूँ॥
अरिहंत सिद्ध सूरी पाठक साधू को नमन हमारा है।
जिनधर्म जिनागम चैत्य जिनालय लगता सबको प्यारा है॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

भव-भाव अभाव हमारा हो यह भाव संजोकर लाया हूँ।
चंदन सम शीतलता पाने मैं चंदन घिसकर लाया हूँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... भवआतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

अक्षयपद की अभिलाषा से अक्षत का पुंज चढ़ाता हूँ।
भौतिकपद शिवपद मिलता है यह जान शरण में आता हूँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

अध्यात्म सुमन की सुरभि से जीवन उपवन बन जाता है।
जल-भूमिज सुमन लिए पूजक आगम युत भक्ति रचाता है॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... कामबाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

Created by Universal Document Converter

इस क्षुधा-तृषा की बाधा से जीवन में मैं अति अकुलाया।
अतएव सरस प्रासुक व्यंजन भक्तिरस से भरकर लाया॥
अरिहंत सिद्ध सूरी पाठक साधू को नमन हमारा है।
जिनधर्म जिनागम चैत्य जिनालय लगता सबको प्यारा है॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

अज्ञानभाव ही प्राणी को गति चार भ्रमण करवाता है।
सुज्ञान दीप की आरति से मिथ्यात्व मोह भग जाता है॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

तन-मन के रोग नशाने को कृष्णागुरु धूप चढ़ाता हूँ।
मैं कर्म बेड़ियाँ तोड़ सकूँ आशीष आपसे पाता हूँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

ताजे मीठे रसयुक्त सुफल जिनपूजन से अतिफल देते।
वटवृक्ष बीज सम पुण्य सहित शिवलक्ष्मी सा प्रतिफल देते॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

जल-चंदन आदिक अर्घ मिला पूजन की थाली लाया हूँ।
मैं पद अनर्घ को प्राप्त करूँ यह भाव हृदय भर लाया हूँ॥ अरिहंत...॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा- **त्रय धारा जल की करूँ, आत्म शांति के हेत।**
श्री जिनवर का दास बन, पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- **नवदेवों की अर्चना, करो भक्त त्रयकाल।**
गुण निधि पाने के लिए, गाओ प्रभु जयमाल॥

चौपाई

चार घातिया नाश किया है, गुणअनंत में वास किया है।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, परमौदारिक तन के वेषी॥1॥

Created by Universal Document Converter

समोशरण की महिमा न्यारी, आये देव-पशु नर-नारी।
अरिहंतों के गुण हम गायें, भक्तिभाव से शीश झुकायें॥2॥
अष्टकर्म बंधन को तोड़ा, निज स्वरूप से नाता जोड़ा।
तीन लोक के हो परमेश्वर, राजे लोक शिखर के ऊपर॥3॥
सिद्धप्रभु की पूजन कर लो, आधि-व्याधि विपदायें हर लो।
पंचाचारी आत्म विहारी, शिष्यगणों के संकटहारी॥4॥
दीक्षा देते पार लगाते, आत्मगुणों को जो विकसाते।
गुप्तित्रय का पालन करते, क्षमाभाव जो मन में धरते॥5॥
पठन और पाठन करवाते, उपाध्याय गुरुवर कहलाते।
रत्नत्रय को धारण करते, ज्ञान-ध्यान में रत जो रहते॥6॥
आठ बीस गुण पालन करते, विष समान विषयों को तजते।
प्राणी मात्र की रक्षा करता, जैनधर्म सबका दु:ख हरता॥7॥
श्री जिनवर ने इसे बताया, जैनधर्म जिससे कहलाया।
श्री जिनमुख से वाणी खिरती, द्वादशांग का रूप जो धरती॥8॥
अनेकांतमय रूप निराला, स्याद्वाद है जग में आला।
वीतराग प्रतिमा सुखकारी, नासादृष्टि लगती प्यारी॥9॥
पद्मासन खड्गासन धारी, जिनप्रतिमायें मंगलकारी।
कोटा-कोटी अशन समाना, जिनदर्शन का सुफल बखाना॥10॥
समोशरण की याद दिलाता, वो चैत्यालय है कहलाता।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय हैं, भक्त भक्ति में होते लय हैं॥11॥
नवदेवों का पूजन-दर्शन, हर लेता नवग्रह का बंधन।
'राजश्री' नित इनको ध्याये, ध्याते-ध्याते शिवपुर जाये॥12॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंतसिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- तारण-तरण जिहाज, इनकी भक्ति मैं करूँ।
पाऊँ शिवपुर 'राज', अक्षयसुख निश्चय वरूँ॥

इत्याशीर्वादः दिव्यपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Created by Universal Document Converter

नवग्रहारिष्ट निवारक समुच्चय पूजा

रचनाकार : गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी

गीता छन्द *(तर्ज : प्रभु पतित पावन....)*

प्रभु वीतरागी शांत छवि, मेरे हृदय में बस रही।
पावन घड़ी शुभ थापना की, विघ्न संकट हर रही।।
मल से रहित जिनदेव पूजा, ग्रह निवारण के लिए।
आह्वान पुष्पों से करूँ, निज भाव शोधन के लिए।।1।।

ॐ ह्रीं नवग्रहारिष्ट निवारक श्री नव जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

त्रय धार सलिल चरण चढ़ाता, गुण निधि के ईश को।
बस कामना आशीष की, त्रय रत्न मुझको प्राप्त हो।।
नवग्रह निवारण के लिये, शांति वृषभ पारस प्रभू।
वसुपूज्य सुविधी पद्म नेमि, चंद्र मुनिसुव्रत विभू।।

ॐ ह्रीं नवग्रहारिष्ट निवारकेभ्यो श्री नव जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

चंदन चढ़ा वंदन करूँ, भवक्लेश का क्रंदन हरूँ।
भवताप जेता नाथ का, शत बार अभिनंदन करूँ।। नवग्रह.....

ॐ ह्रीं.....संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

उज्ज्वल अखण्डित अक्षतों के, पुंज भर-भर ला रहा।
अक्षय परमपद प्राप्त हो यह, भाव मन से भा रहा।। नवग्रह.....

ॐ ह्रीं.....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

बहुवर्ण के सुरभित मनोहर, पुष्प अर्पण कर रहा।
जीवन खिले सुमनावलि सा, मन समर्पण कर रहा ।। नवग्रह.....

ॐ ह्रीं.....कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

षट्रसमयी पकवान ले, नैवेद्य से अर्चा करूँ।
निज भूख-तृष्णा नाश हित, जिनराज गुण चर्चा करूँ ।। नवग्रह.....

ॐ ह्रीं.....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

Created by Universal Document Converter

मैं आरती करता प्रभु, अज्ञान तम का नाश हो।
अक्षय अखण्डित ज्ञानमय, कैवल्य ज्योति प्रकाश हो॥
नवग्रह निवारण के लिये, शांति वृषभ पारस प्रभू।
वसुपूज्य सुविधी पद्म नेमि, चंद्र मुनिसुव्रत विभू॥

ॐ ह्रीं.....मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

सुरभित सुगंधित धूप अग्नि, में चढ़ा पूजन करूँ।
पुरुषार्थ से मैं श्रमण बन, सब पाप का भंजन करूँ॥ नवग्रह.....

ॐ ह्रीं.....अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

मैं मोक्षफल के राज हेतु, आज आया चाव से।
अंगूर आम अनार आदिक, फल चढ़ाता भाव से ॥ नवग्रह.....

ॐ ह्रीं.....महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

उपमा रहित अक्षय अखण्डित, पद प्रभु मम दीजिए।
मैं अर्घ अर्पण कर रहा, मुझको शरण में लीजिए॥ नवग्रह.....

ॐ ह्रीं.....अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

पंच कल्याणक

झीनी झीनी उड़ी रे गुलाल चालो रे नगरियाँ में–2।

माता सोलह सपने देखे–2 मन ही मन हर्षाये। चालो रे.....।
सुरगण रत्न वृष्टि करते हैं–2 माँ की भक्ति रचाय। चालो रे.....।
गर्भ में प्रभुवर जिस क्षण आये–2 तीन लोक हर्षाये। चालो रे.....।
गर्भ दिवस की महिमा गाये–2 भव–भव भ्रमण मिटाय। चालो रे.....।

ॐ ह्रीं गर्भमंगलमंडिताय श्री नव जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

(तर्ज : ना कजरे की धार...)

हम आये प्रभु के द्वार, तीर्थंकर का अवतार ।
करें वंदन बारम्बार, जय–जय तीर्थंकर भगवान–2॥
तुम मात–पिता के प्यारे, हो जग में सबसे न्यारे–2।
जन्मत दश अतिशय धारें, प्रभु तीन ज्ञान को धारें–2।
नाचें–गायें, धूम मचायें–2, करें तेरी जय–जयकार॥हम आये...

Created by Universal Document Converter

सौधर्म शचि संग आये, मेरू पर न्हवन कराये-2।
छवि बालप्रभु की लखकर, निज नेत्र हजार बनाये-2।
दृश्य प्यारा, था निराला-2, प्रभु जन्म महोत्सव आज॥ हम आये...

ॐ ह्रीं जन्ममंगलमंडिताय श्री नव जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

(तर्ज : ईंजन की सीटी... सगला...)

आओ-आओ रे ! दीक्षा का दृश्य हम देखें-2
स्वयंभू प्रभू की दीक्षा देखें-2
धन-वैभव को नश्वर जाना, छोड़ी उनकी माया।
मन इन्द्रिय को वश में करना, प्रभु के मन को भाया॥
आओ-आओ रे...
केशों का लोचन करते हैं, पाप विमोचन करते।
पंच महाव्रत धारण करके, शिवरमणी को वरते॥
आओ-आओ रे...

ॐ ह्रीं तपोमंगलमंडिताय श्री नव जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

(तर्ज : ज्योति से ज्योति जलाते चलो...)

ज्ञान की ज्योति जलाते चलो, ज्ञान कल्याणक मनाते चलो।
ज्ञान सुधा का पान करो, ज्ञान रश्मि को पाते चलो॥
ज्ञान की ज्योति...
परमौदारिक तन से भूषित, समोशरण के स्वामी।
मोक्षमार्ग के तुम हो नेता, मोक्ष महल पथगामी॥ ज्ञान सुधा...
चार घातिया कर्म जलाकर, वीतरागी कहलाते।
हित उपदेशी बन कर प्रभुवर, शिवरमणी को पाते॥ ज्ञान सुधा...

ॐ ह्रीं ज्ञानमंगलमंडिताय श्री नव जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

(तर्ज : रेशमी सलवार...)

तीर्थंकर अष्टम वसुधा को गमन करें,
उनके चरणों में पापों का वमन करें।

Created by Universal Document Converter

हम प्रभुवर के गुण गायें, भावों से अर्घ चढ़ायें।
वे मोक्ष महल को पायें, सब उनका पर्व मनायें॥
आज हम नमन करें....

प्रभु आत्म गुणों को वरते, भक्तों का संकट हरते।
ये केवलज्ञान प्रकाशी, संसार भ्रमण के नाशी॥
भक्त गण भजन करें.... उनके चरणों.....

ॐ ह्रीं मोक्षमंगलमंडिताय श्री नव जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

दोहा – समोशरण के ईश को, तन-मन अर्पण आज।
शांतिधारा से करें, शांति पथ पर राज॥

शांतये शांतिधारा।

सुमन-सुमन सम मम हृदय, सुमनाञ्जलि कर आज।
अर्चन-पूजन कर रहा, नाना विधि ले साज॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र :- ॐ ह्रीं नवग्रहारिष्ट निवारकेभ्यो श्री नव जिनेन्द्रेभ्यो नमः। (9,27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा– नवग्रह शांति विधान है, सर्व सुखों की खान।
उसकी जयमाला पढ़ें, बनने सिद्ध समान॥

शंभु छन्द *(तर्ज : दिल लूटने वाले...)*

जय-जय ध्वनि की जयमाला से जिनवर के गुण हम गाते हैं।
नवग्रह की बाधा हरने को सब तीर्थंकर को ध्याते हैं॥
रविग्रह की बाधा होने पर हम पद्म प्रभु को ध्यायेंगे।
श्री सिद्ध प्रभु के मंत्रों से संकट को दूर भगायेंगे॥1॥

चन्दाप्रभु के दर्शन करके हम चन्द्रारिष्ट निवारेंगे।
अरिहन्तों का सुमरण करके सब विघ्न ताप विनशायेंगे॥

Created by Universal Document Converter

जब मंगल ग्रह पीड़ा देता तब वासुपूज्य का नाम लिया।
अविचल अविनाशी सिद्धों की अर्चा ने अघ परिहार किया।।2।।
मैं विमल अनंत धर्म शांति कुंथू अरह नमी वीर भजूँ।
इस बुधग्रह की बाधा हरने श्री उपाध्याय को नित्य जजूँ।।
ऋषभाजित संभव सुमति प्रभु, श्रेयांस सुपार्श्व अभिनंदन।
शीतल स्वामी आचार्य विभो, हरलो गुरुग्रह का दु:ख क्रंदन।।3।।
हाथों में पुष्पांजलि लेकर, श्री पुष्पदंत को ध्याऊँगा।
मैं शुक्र अरिष्ट निवारण हित, अरिहंत प्रभु गुण गाऊँगा।।
मुनियों के स्वामी मुनिसुव्रत, शनिग्रह की बाधा हरते हैं।
इस ग्रह की सारी पीड़ायें, निर्ग्रन्थ गुरु भी हरते हैं।।4।।
राहु ग्रह कृत संकट हरने, श्री नेमिनाथ को ध्याऊँगा।
चौसठ ऋद्धिधर यतियों की, इस हेतु भक्ति रचाऊँगा।।
केतु ग्रहरिष्ट मिटाने को, श्री मल्लि पार्श्वजिन को ध्याऊँ।
उपसर्ग विजेता मुनियों की, भक्ति पूर्वक शरणा पाऊँ।।5।।
चौबीसों प्रभु वैभव दाता, सुख समता शांति प्रदाता हैं।
नवग्रह अरिष्ट नाशक प्रभुवर, हरते सब रोग असाता हैं।।
जयमाला प्रभु की गा करके, इन्द्रिय जय पद को पाऊँगा।
मुक्ति का 'राज' मिले मुझको, श्रद्धा से शीश झुकाऊँगा।।6।।

ॐ ह्रीं नवग्रहारिष्ट निवारकेभ्य: श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: पंच परमेष्ठिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

नवग्रह की बाधा हरो, चौबीसों जिनराज।
आधि-व्याधियाँ मेटने, नमन करें नित 'राज'।।

इत्याशीर्वाद : दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Created by Universal Document Converter

श्री नवग्रह शांति स्तोत्र

-श्रुतकेवली आ. श्री भद्रबाहु स्वामी

जगद्गुरुं नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरु भाषितै।
ग्रहशान्ति प्रवक्ष्यामि लोकानां सुखहेतवे ॥1॥

जिनेन्द्रा: खेचरा ज्ञेया पूजनीया विधि क्रमात्।
पुष्पैर्विलेपनेर्धूपैर्नैवेद्यैस्तुष्टि हेतवे ॥2॥

पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च।
वासुपूज्यस्य भूपुत्रो बुधश्चाष्ट जिनेशिनां ॥3॥

विमलानन्त धर्मेश शान्तिकुन्थ्वरहनमि।
वर्द्धमान जिनेन्द्राणां पाद पद्मं बुधो नमेत् ॥4॥

वृषभाजित सुपार्श्वा साभिनन्दन शीतलौ।
सुमति: संभव स्वामी श्रेयांसेषु वृहस्पति: ॥5॥

सुविधि: कथित: शुक्रे सुव्रतश्च शनैश्चरे।
नेमिनाथो भवेद्राहो: केतु: श्री मल्लिपार्श्वयो: ॥6॥

जन्मलग्नं च राशिं च यदि पीडयन्ति खेचरा:।
तदा संपूजयेद् धीमान् खेचरान् सह तान् जिनान् ॥7॥

''भद्रबाहुगुरुर्वाग्मी'', पंचम: श्रुतकेवली।
विद्याप्रसादत: पूर्वं ग्रहशांति विधि: कृता ॥8॥

य: पठेत् प्रातरुत्थाय, शुचिर्भूत्वा समाहित:।
विपत्तितो भवेच्छांति: क्षेम: तस्य पदे-पदे ॥9॥

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(प्रात:काल इस स्तोत्र का पाठ करने से क्रूर ग्रह अपना दुष्प्रभाव नहीं दिखाते। किसी ग्रह के असर होने पर 27 दिन तक प्रतिदिन 21 बार पाठ करने से अवश्य शांति होती है।)

Created by Universal Document Converter

श्री नवग्रह शान्ति स्तोत्र

गीता छन्द

श्री आदिनाथ जिनेश से, महावीर तक वन्दन करूँ,
रवि आदि नवग्रह जन्य भय दु:ख-शोक का क्रन्दन हरूँ।
नवग्रह अरिष्ट विनाश हित चौबीस जिन को ध्या रहा,
गणधर गुरु-जिनकेवली, श्रुतकेवली गुण गा रहा॥1॥

प्रारब्ध की प्रतिकूलता, जगजीव को पीड़ा करे,
नाना कला से आपदा, दे दु:खमय क्रीड़ा करे।
हो भूत-व्यंतर के उपद्रव, रोग फैले देह में,
सर्पादि के विषदंश से, जीवन पड़ा संदेह में॥2॥

कोई करे अतिघोर परिश्रम, लाभ ना हो अल्प भी,
व्यापार-विद्याभ्यास का फल, ना मिले अत्यल्प भी।
निजघर-नगर-पद-थान से, हो भ्रष्ट-च्युत जग में भ्रमें,
या मूढ़-पामर-दुष्ट बन, दुर्वासनाओं में रमें॥3॥

निज पूर्व अर्जित पाप से, आती सभी ये आपदा,
विधि-कर्म-ज्योतिष-ग्रह उपद्रव, लोक माने दु:खदा।
इनसे दु:खित दिग्मूढ़ जन, तब सेवते मिथ्यात्व को,
हो मोहवश मिथ्यात्वरत, त्यागे सुखद सम्यक्त्व को॥4॥

उनके लिए श्री भद्रबाहू, केवली की देशना,
चौबीस जिन के भक्त को हो, कष्ट-दु:ख लवलेश ना।
उनकी सुखद श्रुतभक्ति से, मैं भी करूँ यह अर्चना,
ग्रहरिष्ट नाशक भक्ति स्च, मिट जाये मम अघ वंचना॥5॥

Created by Universal Document Converter

रवि-चन्द्र-मंगल-देवगुरु-बुध, शुक्र-शनि नभ में भ्रमें,
राहु वा केतु आदि नवग्रह, लग्न गोचर में भ्रमें।
द्वादश भुवन में बैठकर, अनुकूल वा प्रतिकूल हो,
चौबीस जिन की भक्ति से, प्रतिकूल भी अनुकूल हो॥6॥

रविग्रह जनित पीड़ा हरण, हित पद्मप्रभु जगमान्य हैं,
वा चन्द्ररिष्ट विनाश हित, श्री चन्द्रजिन सम्मान्य हैं।
हो भौमग्रह कृत आपदा, भज वासुपूज्य जिनेश को,
संग्राम अग्नि आदि पीड़ा, नाश हित तीर्थेश को॥7॥

श्री विमल-अनंत व धर्म-शांति, कुंथु-अर-नमि-वीर हैं,
बुध ग्रह जनित पीड़ा हरें, भवि पा रहे भवतीर हैं।
श्री वृषभजिन श्री अजितजिन, संभव-अभीनंदन प्रभू,
सुमति-सुपारस श्रेयजिन, गुरुदोष हर शीतल विभू॥8॥

श्री पुष्पदंत जिनेश ही, ग्रहशुक्र की पीड़ा हरें,
मुनिनाथ मुनिसुव्रत सकल, शनिदोष की पीड़ा हरें।
श्री नेमीनाथ जिनेश राहु, कृत उपद्रव नाशते,
श्री मल्लि-पारसनाथ केतु दोष हर गुरुभाषते॥9॥

नक्षत्र-गोचर-लग्न-दिन-तिथि दोष कर हो ग्रह दशा,
तब अर्च लो चौबीस जिन, औ यक्ष-यक्षी सौख्यदा।
श्री पंच परमेष्ठी प्रभो वे, क्षय करें वसु ग्रह व्यथा,
उनकी शरण शिवकर नशे, मम दोष संकट सर्वथा॥10॥

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच वा, चौबीसों जिनदेव।
'गुप्ति' जिन भक्ति नशे, नवग्रह दोष सदैव॥

॥ इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

(प्रातःकाल इस स्तोत्र का पाठ करने से क्रूर ग्रह अपना दुष्प्रभाव नहीं दिखाते। किसी ग्रह के असर होने पर 27 दिन तक प्रतिदिन 21 बार पाठ करने से अवश्य शांति होती है।)

Created by Universal Document Converter

नवग्रहारिष्ट निवारक समुच्चय पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

मोह अरि के जेता भगवन धर्म चक्र के धारी हो।
सिद्ध बुद्ध सिद्धि के दाता भव-भव संकट हारी हो ॥
परमेष्ठी पाँचों श्री चौबीसों प्रभु का आह्वान करूँ।
नवग्रह की बाधा हरने को वंदन मैं शत बार करूँ॥

ॐ ह्रीं सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि-राहु-केत्वादि नवग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्र, श्री पंच परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

गुण सागर की गुणनिधि पाकर निर्मल जीवन मैं पाऊँ।
त्रय धारा जल की अर्पण कर भवसागर से तिर जाऊँ॥
चौबीसों प्रभु पंच परम परमेष्ठी जिन को नमन करूँ।
नवग्रह की बाधा हरने को अर्चन-पूजन-भजन करूँ॥

ॐ ह्रीं सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि राहु केत्वादि नवग्रहारिष्ट निवारकेभ्यः श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः पंच परमेष्ठिभ्यः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

चन्दन से शीतल प्रभु पद में चंदन लेपन मैं करता।
भवसंताप मिटाने हेतु जिनपूजा का श्रम करता॥ चौबीसों...

ॐ ह्रीं ..... भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

मुक्ता अक्षत कर युग में ले अक्षत पुंज बनाया है।
दुःख क्षय करने शिवसुख वरने अक्षयव्रत अपनाया है॥ चौबीसों...

ॐ ह्रीं ..... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

कमलादिक सब ऋतु वर्णों का पुष्प समूह सजाया है।
जिनगुण से आकर्षित हमने वाद्य समूह बजाया है॥ चौबीसों...

ॐ ह्रीं .... कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

पुड़ी इमरती बरफी आदि भर-भर व्यञ्जन थाल भरूँ।
क्षुधा विजेता के चरणों में क्षुधाविजय का भाव वरूँ॥ चौबीसों...

ॐ ह्रीं .... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

Created by Universal Document Converter

हेम रत्न नव मणि से शोभित मंगल दीप सजाता हूँ।
भक्तिभाव मय नृत्य रचाकर हे जिन ! तुम्हें रिझाता हूँ।।
चौबीसों प्रभु पंच परम परमेष्ठी जिन को नमन करूँ।
नवग्रह की बाधा हरने को अर्चन-पूजन-भजन करूँ।।

ॐ ह्रीं .... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

नववर्णों के धूप घटों में सुरभित धूप खिरायी है।
उन्हें चढ़ाऊँ जिनने जग में गुणकीर्ति बिखराई है।। चौबीसों...

ॐ ह्रीं .... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

आम जाम केला नारंगी श्री जिनवर को अर्पित हैं।
नववर्णों में षड्ऋतुओं के फल के गुच्छ समर्पित हैं।। चौबीसों...

ॐ ह्रीं .... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

नीर गंध आदिक से मिश्रित अर्घ प्रभु के चरण धरूँ।
शिवसुख दायक कर्म विघातक पद अनर्घ का वरण करूँ।।चौबीसों...

ॐ ह्रीं .... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

पंचकल्याणक *(तर्ज - धीरे-धीरे बोल...)*

जिन कल्याणक की जय हो, पंच कल्याणक की जय हो-2
हम अर्घ चढ़ायें प्रभु चरण, जिन दर्शन जग तारण-तरण। जिन...

कूर्मोन्नत योनि में आये नाथ, मात-पिता पुलकित होते हैं साथ।
शत इन्द्रों ने आन झुकाया माथ, अष्ट कुमारी जोड़े दोनों हाथ।।
ढोलक बजा, झांझर बजा-2 जिनमाता को करते नमन,
माता जग की मंगलकरण, जिनकल्याणक की जय हो...।।1।।

जन्मोत्सव का पर्व मनायें आज, साढ़े बारह कोटि बजाकर साज।
इन्द्र करें मेरुगिरि पर अभिषेक, हर्षित होते मुनि ऋद्धिधर देख।।
नाटक रचा, बाजे बजा-2 सौधर्म करे शत दश नयन,
जयकारों से गूंजा गगन, जिन कल्याणक की जय हो...।।2।।

Created by Universal Document Converter

प्रभु के जीवन में आया वैराग्य, लौकांतिक करते प्रभु से अनुराग।
प्रभु ने तप धारा था अपरम्पार, अनुमोदन कर हो जाऊँ भवपार॥
मस्तक झुका, ताली बजा-2 कीर्तन करते हैं प्रभु चरण,
प्रभु पथ का करने अनुशरण, जिन कल्याणक की जय हो...॥3॥

चार घातिया नाश करें जिनराज, परमौदारिक तन से भूषित आप।
समोशरण में बैठे प्रभु मनहार, तीन जगत के तुम हो पालनहार॥
थाली सजा, दीपक जला-2 हम आरती करते प्रभु चरण,
केवलज्ञानी की ले शरण, जिन कल्याणक की जय हो...॥4॥

योग निरोध किया प्रभु धारे ध्यान, कर्म नाश कर पहुँचे शिवपुर थान।
सिद्धक्षेत्र पर ले लाडू के थाल, अर्पण करके भक्त झुकायें भाल॥
अर्चन करें, पूजन करें-2, सब सिद्धक्षेत्र को है नमन,
हो जाये पापों का वमन, जिन कल्याणक की जय हो...॥5॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक प्राप्तेभ्य: श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- कुम्भ लिया नवरत्न मय, करें विमल त्रय धार।
स्वागत मुद्रा में करें, पुष्पांजलि उपहार॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र :- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा नम: मम सर्व ग्रहारिष्ट निवारणं कुरु-कुरु स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा - पाँचों परमेष्ठी प्रभो, चौबीसों तीर्थेश।
इनकी जयमाला हरे, नवग्रह के सब क्लेश॥

(शंभु छन्द)

जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, अष्टादश दोष विमुक्त हुए।
जय द्वादश धर्मसभा नायक, मेरूगिरि पर अभिषिक्त हुए॥
गत जन्मों में सम्यक् तप कर, सातिशय पुण्य कमाया था।
निर्दोष श्रमण चर्या करके, षोडश कारण गुण पाया था॥1॥

Created by Universal Document Converter

फिर कल्याणक से पूजित हो, पावन तीर्थंकर रूप धरा।
आतम रिपु घाति-अघाति घात, अक्षय अनंत गुण लाभ वरा॥
उनके अनंत सुख वीर्य ज्ञान, नवलब्धि अक्षय दान करें।
पूजक के नवग्रह दोष हरें, भव्यों का आत्मोत्थान करें॥2॥

चौबीसों प्रभु का नाम मात्र, भक्तों के कर्मज क्लेश हरे।
जो द्रव्य सहित भक्ति करता, वो शाश्वत सुखमय वेष धरे॥
छ्यालीस मूलगुण के धारी, अरिहंत जिनेश कहाते हैं।
शशि-शुक्र जनित ग्रह बाधायें, तुम भक्त सहज विनशाते हैं॥3॥

हैं शुद्ध बुद्ध कृतकृत्य अमल, श्रीसिद्ध प्रभो सिद्धी दाता।
उनका पूजन शुचि गुण कीर्तन, रवि-भौम जनित दुःख विनशाता॥
गुण छत्तिस धर पंचाचारी, करुणाधर आगम विद सूरी।
गुरु ग्रह कृत पीड़ा आप हरें, करते सब आशायें पूरी॥4॥

आगम का अनुभव पूर्ण ज्ञान, देते मुनि शिक्षक कहलाते।
बुध ग्रह कृत रिष्ट विनाशक वे, मुनियों द्वारा पूजे जाते॥
निर्द्वन्द निराकुल निष्कलंक, साधु की शक्ति भारी है।
राहु-केतु-शनि की माया, उनके सम्मुख ही हारी है॥5॥

त्रय चौबीसी अर्हंत् सिद्ध, ऋषिनायक पाठक ऋषियों की।
अर्चा में लीन हुआ मैं भी, आशायें तज जग विषयों की॥
जो भक्ति से जयमाल पढ़े, वो जिन गुणमाला पाते हैं।
यह भाव लिये 'गुप्तिनंदी', सुन्दर जयमाल बनाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं नव ग्रहारिष्ट निवारकेभ्यः श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः श्री पंच परमेष्ठिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्ति भावों से, **'नवग्रह शांति विधान'** करे।
नव ग्रहरिष्ट विनाशे तत्क्षण, निजपर का उत्थान करे॥
मुनि बन धर्म क्षमादिक पायें, निश्चय ही शिवराज करे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर, अक्षयसुख साम्राज्य वरे॥

इत्याशीर्वाद : दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Created by Universal Document Converter

रविग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु पूजा

(शंभु छन्द)

जय पद्मप्रभु भवि पद्मों को, तुम नाम पद्म विकसाता है।
राहु सम मोह तिमिर घन को, तुम ज्ञान भानु विनशाता है॥
मैं भक्तिभाव से द्रव्य लिये, तुम सन्मुख आज सजाता हूँ।
आरक्त कमल जसवंत लिए, आह्वानन करने आता हूँ॥1॥

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छन्द)

रक्ताभ कुम्भ कर लेय, नीर चढ़ाता हूँ।
त्रय रोग नशाने हेतु, भक्ति रचाता हूँ॥
रवि दोष हरें जिनपद्म, उनकी भक्ति करूँ।
जप-पूजन-कीर्त्तन पाठ, कर जिन शक्ति वरूँ॥

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्ट निवारकाय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

प्रभु हरते भवसंताप, भव के पाप हरें।
उनके पद में शुचि गंध, चंदन लेप करें॥ रवि दोष...

ॐ ह्रीं ..... संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

मोती अक्षत भर लेय, पुंज सजाया है।
अक्षय मुनिव्रत हम पाय, भाव बनाया है॥ रवि दोष...

ॐ ह्रीं ..... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

तुम ब्रह्मतेज को देख, काम स्वयं हारा।
इस हेतु चढ़ाऊँ पुष्प, करके जयकारा॥ रवि दोष...

ॐ ह्रीं ..... कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

Created by Universal Document Converter

बरफी पेड़ा पकवान, भर-भर थाल लिया।
कर भक्ति नृत्य अपार, प्रभु को भेंट किया।।
रवि दोष हरें जिनपद्म, उनकी भक्ति करूँ।
जप-पूजन-कीर्त्तन पाठ, कर जिन शक्ति वरूँ ।।

ॐ ह्रीं ..... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

हे मोहविनाशक ! देव, तुम दर आता हूँ।
ले दीपक-ताल-मृदंग, आरती गाता हूँ।। रवि दोष...

ॐ ह्रीं ..... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

औषधिमय सुरभित धूप, जग का ताप हरे।
मैं धूप चढ़ाऊँ भूप, कल्मष पाप हरे।। रवि दोष...

ॐ ह्रीं ..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

शुभ पुण्योदय से आज, षट्ऋतु फल लाया।
नाना विधि लेकर साज, चरणों में आया।। रवि दोष...

ॐ ह्रीं ..... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

मैं अष्टद्रव्य का थाल, अर्पित करता हूँ।
चरणों में रखकर भाल, गुणनिधि वरता हूँ।। रवि दोष...

ॐ ह्रीं ..... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

दोहा : **त्रय धारा हरदम करूँ, पद्म प्रभु के द्वार।**
शुभ मन से सुमनावलि, अर्पित है अघहार।।

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सूर्यारिष्ट निवारक श्री सिद्ध परमेष्ठी का आह्वान

दोहा- **कर्मकाष्ठ को भस्म कर, बने निरंजन सिद्ध।**
उनके ध्यान विधान से, सर्व कार्य हो सिद्ध।।

Created by Universal Document Converter

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्ट निवारक श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छन्द)

श्री सिद्ध जिन शिव सिद्धि धर सब सिद्धि के दातार हो।
वसु कर्म से आबद्ध के तुम ही प्रभो हर्त्तार हो।।
मम आत्म सिद्धी हेतु प्रभु रवि दोष पीड़ा नाश हो।
अक्षय निधि का लाभ हो शिवपुर सदन में वास हो।।

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारकेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र :- (1) ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं (इस मंत्र का जाप्य 9, 27 या 108 बार करें)

अथ यक्ष पूजा

(गीता छन्द)

श्री पद्मजिन दिवपद्म पर विहरण करें भ्रम तम हरें,
उन संग धर्म सभा चले सब लोक में मंगल करें।
उनके सुशासन के सुरक्षक पुष्प यक्ष महान हो,
उनको समर्पित अर्घ है मम भावना पर ध्यान दो।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्यामवर्ण पुष्प यक्ष अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ पुष्पयक्षाय स्वाहा। ॐ पुष्पपरिजनाय स्वाहा। पुष्पानुचराय स्वाहा। पुष्पमहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा। (14)

हे पुष्पयक्ष ! स्वगणपरिवारपरिवृत्ताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धमक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

- दिवपद्म-स्वर्ण कमल।

Created by Universal Document Converter

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांतिर्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अथ यक्षी पूजा

(शंभु छन्द)

श्री पद्मप्रभु का जिनशासन सुपार्श्व प्रभु से पूर्व रहा,
तब तुमने उसका संरक्षण यशवर्धन आदि अपूर्व करा।
तुम स्वर्ण वर्ण है चार भुजा सम्यक्त्व रत्न की धारी हो,
यह अर्घ समर्पण है तुमको, तुम सबकी संकट हारी हो॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्णवर्णे ! चतुर्भुजे खेटकृपाणधारिणिवाजिवाहने श्री पद्मप्रभ जिन शासने मनोवेगादेवी अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ मनोवेगादेव्यै स्वाहा। मनोवेगापरिजनाय स्वाहा। मनोवेगानुचराय स्वाहा। मनोवेगामहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा। (14)

हे मनोवेगादेवी ! स्वगणपरिवार परिवृत्ताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांतिर्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अथ रविग्रह पूजा

(शम्भु छन्द)

हे सूर्य ! प्रतीन्द्र मनोहारी, पूर्वाभिमुखी जिनपदसेवी।
माणिक्य इष्ट चित्राधिपति, पल्यायु धर मुनि पद सेवी॥

Created by Universal Document Converter

तुम रक्त पुष्प, आभरण, वर्ण, यज्ञोपवीत वाहन धारी।
ले रक्त ध्वजा विचरण करते, जिन सेवक के संकटहारी॥
वे[1] ढ़ाई द्वीप में भ्रमण करें, उससे आगे थिर कहें यती[2]।
मेरु की नित्य प्रदक्षिण दे, वसुधा को करते धान्यवती॥
तुम रवि ग्रह जनित सर्व बाधा, अपमृत्यु रोग विध्वंस करो।
तुम योग्य अर्घ दे तुष्ट करूँ, मम सर्व अमंगल ध्वंस करो॥

ॐ पूर्वेणदिशामुखेन विराजमान मार्तण्डमंडलमंडित अनेक कोटाकोटिशत सहस्रपरिवार परिवृत्तमहासेनाधिपते मध्यमलोकस्यमहाजनैः पूजितमेरुमेकादशभिर्योजनशतैरेकविंशतिं च परिहृत्यप्रदक्षिणपरिवृत्तजिनधर्म प्रभावकजैनशासनभक्तितत्परपुरुषवरप्रदायकचित्रानक्षत्राधिपते श्री पादपद्माराधक सर्वजीवदयापर सर्वजनोपकारक सर्वापमृत्युविध्वंसनदक्ष विदिताखिल–लोकयात्रा समुदितप्रताप प्रकाश प्रखरकर्कैतत पद्मराग बंधूशपुष्प रक्तवाससं रक्तपुष्पं रक्ताभरणं रक्तयज्ञोपवीतं रक्तवर्णवाहनं आरुढ़ं देव दानव गंधर्व किन्नर किंपुरुष गरुड़ व्यंतर प्रभृति महाभूताइव जिनशासन वत्सल ऋष्यार्यिका श्रावक–श्राविका यंष्ट्र याजक, राजमंत्री, पुरोहित, सामंतप्रभृति रक्षक (अमुकस्य...) परमपुरुषार्थ भूत प्राणोपकारक सर्वोपसर्ग विनाशन दक्ष आदित्य महाग्रह अस्मिन् मंडलमध्ये आह्वानयामहे॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्ण सर्वलक्षण सम्पन्न सम्पूर्ण स्वायुधवाहनं वधूचिन्ह सपरिवार हे आदित्य महाग्रह ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ आदित्याय स्वाहा। आदित्यपरिजनाय स्वाहा। आदित्यानुचराय स्वाहा। आदित्यमहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा॥ (14)॥

अथ अष्टकम्

ॐ आं क्रौं ह्रीं आदित्य ग्रहाय जलं समर्पयामि स्वाहा॥1॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं आदित्यग्रहाय गंधं॥2॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं आदित्यग्रहाय अक्षतान्॥3॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं आदित्यग्रहाय पुष्पं॥4॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं आदित्यग्रहाय नैवेद्यं॥5॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं क्रौं ह्रीं आदित्यग्रहाय दीपं॥6॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं आदित्यग्रहाय धूपं॥7॥

1. ढ़ाई द्वीप में कुल 132 सूर्य विमान हैं। 2. मुनि

Created by Universal Document Converter

ॐ आं क्रौं ह्रीं आदित्यग्रहाय धूपं।।8।। ॐ क्रौं ह्रीं आदित्यग्रहाय फलं।।9।। ॐ आं क्रौं ह्रीं आदित्यग्रहाय ध्वजा।।10।। ॐ आं क्रौं ह्रीं आदित्यग्रहाय यज्ञसूत्र[1] सहित आभरणं।।11।। ॐ आं क्रौं ह्रीं आदित्यग्रहाय दक्षिणा यज्ञभागार्चनं।।12।। ॐ आं क्रौं ह्रीं आदित्यग्रहाय अर्घ्यं।।13।। ॐ आं क्रौं ह्रीं आदित्यग्रहाय शांतिधारा।।14।। ॐ आं क्रौं ह्रीं आदित्यग्रहाय पुष्पांजलिं।।15।।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांतिर्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं पद्मप्रभतीर्थंकराय पुष्प यक्ष (कुसुमवर) मनोवेगा यक्षी सहिताय नमः। ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः फट् आदित्य महाग्रह मम (यजमान का नाम.....) सर्वजीवानाम् च सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा – **पद्म रखे पद पद्म में, भक्ति पद्म की थाल।**
आओ प्रभु मन पद्म में, गाता हूँ जयमाल।।

(नरेन्द्र छन्द)

जय जिन पद्म सुसीमा नंदन, धरण पिता के हो प्यारे।
कौशाम्बी के राजकुंवर तुम, पद्मवर्ण जन-मनहारे।।
पद्मराग सम आभा जिनकी, नाम पद्म कहलाया है।
मुक्तिमार्ग रत भव्य पद्मवन, तुमने ही विकसाया है।।1।।
गर्भ सुमंगल से भी पहले, धनपति रत्न गिराता है।
कोटि असंख्यों रत्न प्रतिदिन, पन्द्रह मास लुटाता है।।
जन्म हुआ जिस क्षण प्रभुवर का, तीन लोक में हर्ष हुआ।
भव्यों में चउविध सुरगण में, भावों का उत्कर्ष हुआ।।2।।
इन्द्रराज सौधर्म शची सुर, ऐरावत गज पर आये।
जन्मसदन में प्रभु दर्शन कर, इन्द्राणी अति हर्षाये।।

1. यज्ञोपवीत, जनेऊ।

Created by Universal Document Converter

सर्वश्रेष्ठ जिन बाल रूप लख, उनके भाव विशुद्ध हुए।
तत्क्षण सम्यग्दर्शन पाकर, आत्मप्रदेश प्रशुद्ध हुये ॥3॥

शचिपति प्रभु को गोदी में ले, ऐशानेन्द्र छत्र ताने।
सनत्कुंवर माहेन्द्र चंवर ले, जीवन धन्य सफल माने॥
एक हजार आठ कलशों से, मेरू पर अभिषेक करें।
तीर्थंकर प्रभु की सेवा कर, वे निज अक्षय कोष वरें॥4॥

युवावय में नृप हो प्रभु ने, जीवों को आनंद दिया।
फिर विरक्त हो नश्वर सुख से, मुनिमुद्रा का लाभ लिया॥
अल्पसमय में धर्मचक्र ले, जग का भ्रमणचक्र नाशा।
प्रभु निज कर्मचक्र का क्षय कर, वरा सिद्धसुख अविनाशा॥5॥

पुष्पयक्ष तुम शासनरक्षक, यक्षी बनी मनोवेगा।
प्रभु भक्तों के संकट नाशे, दत्तचित्त हो अतिवेगा॥
पद्मप्रभु का पूजन-कीर्त्तन, जाप रविगत दोष हरे।
गोचर-लग्न-भुवनगत रवि के, रिष्ट हरे सुख कोष वरे॥6॥

ज्योतिष देवों का रवि स्वामी, पद्मप्रभु की भक्ति करे।
पद्मप्रभु के भक्तों के अनुकूल, रहे शिव शक्ति वरे॥
चित्त पद्म को चैत्य बनाया, हे प्रभु ! इसमें आ जाओ।
'गुप्तिनंदी' के कर्म दोष हर, शिवसुखराज बता जाओ॥7॥

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्टनिवारकाय श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्तिभावों से **'नवग्रह शांति विधान'** करे।
नवग्रहरिष्ट विनाशे तत्क्षण निजपर का उत्थान करे॥
मुनि बन धर्म क्षमादिक पाये निश्चय ही शिवराज करे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षयसुख साम्राज्य वरे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Created by Universal Document Converter

चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चंद्रप्रभु पूजा

(गीता छन्द)

जय चन्द्रजिन गुणचन्द्र धर, रवि-चन्द्र के प्रतिपाल हैं।
मुनिवृन्द मानव-देव-पशु तुम, द्वार पर नतभाल हैं ।।
शशिकांत मणियुत पुष्प ले, आह्वान उनका मैं करूँ।
ग्रह सोम-तिथि-नक्षत्र कृत सब, विघ्न का भंजन करूँ।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(काव्य छन्द)

चन्द्रकांत मणि युक्त, जल के कुंभ सजाऊँ।
तीन रोग क्षय हेत, धारा तीन कराऊँ ।।
चन्द्रप्रभु को आज, निश्छल हो मैं ध्याऊँ।
चन्द क्षणों में सर्व, संकट विघ्न नशाऊँ ।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्ट निवारकाय श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

चन्दन से भी शीत, श्री जिनचन्द्र कहायें।
घिस चन्दन कर्पूर, उनके चरण लगायें।। चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं ..... भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मुक्ता अक्षत श्वेत, अर्पित प्रभु के आगे।
अक्षयपद हो प्राप्त, क्षत-विक्षत सुख त्यागे ।। चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं .... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

जूही-पद्म-गुलाब, श्वेत पुष्प ले आऊँ।
हाथ युगल में पुष्प, ले प्रभु चरण चढ़ाऊँ ।। चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं .... कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

Created by Universal Document Converter

श्वेत वर्ण के मिष्ठ, बहु पकवान्न चढ़ाऊँ ।
क्षुधारोग क्षय हेत, भक्ति नृत्य रचाऊँ ।।
चन्द्रप्रभु को आज, निश्छल हो मैं ध्याऊँ ।
चन्द क्षणों में सर्व, संकट विघ्न नशाऊँ ।।

ॐ ह्रीं .... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

चन्द्रमणि घृत दीप, लेकर आरती गाऊँ ।
प्रज्ञादीप जलाय, मोह तिमिर विनशाऊँ ।। चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं .... महामोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

सर्वौषधि मय धूप, रोग प्रदूषण हारी ।
अग्निपात्र में खेय, नाशूँ कर्म बिमारी ।। चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं ..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सरस सुवासित श्रेष्ठ, षट्ऋतु के फल लाऊँ ।
नश्वर जग सुख छोड़, शाश्वत शिवफल पाऊँ।। चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं .... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

जल आदिक वसु द्रव्य, मिश्रित अर्घ बनाया ।
हो अनर्घपद लाभ, इसविध तुम गुण गाया ।। चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं .... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा – **चन्द्रमणि मय कुम्भ से, रजत वर्ण जलधार ।**
धवल वर्ण कुंदादि की, पुष्पांजलि मनहार ।।

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री अरिहंत परमेष्ठी का आह्वान

दोहा– **चौतिस अतिशय के धनी, श्री अरिहंत महान् ।**
चन्द्रारिष्ट विनाश हित, करता हूँ आह्वान ।।

Created by Universal Document Converter

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री अरिहंत परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छन्द)

जिनने चउ घाति कर्म हने, अरिहंत श्रेष्ठ पद को पायें।
कुछ गंधकुटी में शोभ रहे, तीर्थंकर समोशरण पायें॥
उनके क्षायिक नवलब्धि वश, शुभ दान सदा ही होता है।
जो भव्य उन्हें मन से पूजे, वह शिव सुख भागी होता है॥

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारकेभ्यो श्री अरिहंत परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र : (1) ॐ ह्रीं श्री चन्दप्रभ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्राँ णमो अरिहंताणं। (इस मंत्र का जाप्य 9, 27 या 108 बार करें)

अथ यक्ष पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

चन्द्रप्रभु के धर्म तीर्थ के विजय यक्ष अनुरागी,
शासन रक्षक भव्य जनों के दुःख में हो सहभागी।
चन्द्रनाथ का धर्मचक्र ले मोहतिमिर विनशाते,
उनको हम भी आगम सम्मत मनहर अर्घ चढ़ाते॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्ण वर्ण विजय यक्ष अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ विजययक्षाय स्वाहा। विजयपरिजनाय स्वाहा। विजयानुचराय स्वाहा। विजय महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा। (14)

हे विजय यक्ष ! स्वगणपरिवारपरिवृत्ताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Created by Universal Document Converter

अथ यक्षी पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

चन्द्रप्रभु की तीर्थरक्षिका ज्वालामालिनी अम्बा है,
दुष्ट दमन हित बनती ज्वाला भक्तों की जगदम्बा है।
जिनशासन की सेवक माता संघ परायण सम्यक्त्वी,
यज्ञ भाग दे उन्हें बुलाऊँ कीर्ति बढ़ाओ जिनमत की॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेतवर्णेअष्टभुजे फलांसि चक्रांकुश बाणपाशचाप त्रिशूलहस्ते चन्द्रनाथस्य शासनदेवते ज्वालामालिनी देवी अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्। ॐ ज्वालामालिन्यै स्वाहा। ज्वालामालिनीपरिजनाय स्वाहा। ज्वालामालिनी अनुचराय स्वाहा। ज्वालामालिनी महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा॥ (14)

हे ज्वालामालिनी यक्षी ! स्वगणपरिवारपरिवृत्ताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ सोमग्रह पूजा

(शंभू छन्द)

श्री चन्द्र प्रभु के पद सेवक, औषध अमृत रसके दानी।
ज्योतिष देवों में प्रमुख इन्द्र, श्री चन्द्र देव ! सम्यग्ज्ञानी॥
तुम श्वेत वस्त्र ध्वज पुष्प मुकुट, यज्ञोपवीत वाहन धारी।
आभरण शस्त्र आसन सफेद, शशिकांत मणी तुमको प्यारी॥
अनुकूल जीव के निर्मल मन, प्रज्ञा संयम में सहयोगी।
प्रतिकूलों के दुर्मन, दुर्मद, दुष्कर्म, दुराशय, दुर्योगी॥

Created by Universal Document Converter

ग्रह गोचर लग्न दशा तिथि वा, नक्षत्ररिष्ट विध्वंस करो।
तुम योग्य द्रव्य दे शांत करूँ, अपमृत्यु व्याधि विध्वंस करो॥

ॐ पूर्व दक्षिण दिगमुखेन गगनांभोग मंडन प्रवण अनेक कोटाकोटि–शत सहस्र परिवार परिवृत्त महासेनाधिपते नित्यं गगन मार्गण स्थानमार्गेण मंदराचल प्रदक्षिणि परिवृत्त जिनधर्म प्रभावक जैन शासन भक्तियुत तत्पर पुरुषवर प्रदायक अनुराधा नक्षत्राधिपते श्री चंद्रप्रभ स्वामिनः श्री पाद पद्माराधक सर्वजीवदयापर सर्वभव्य जनोपकारक सर्वापमृत्यु विध्वंसन दक्ष चंद्रवत् अमृतमय किरणं अमृतमयशरीरिणं सर्व लोकभयहरं क्षीरवारिधि वर्धनपरिपूर्ण तत्परं गोक्षीरहार नंद्यावर्त शंखपुष्प सदृश श्वेत वाससं श्वेत पुष्पम् श्वेत रत्नाभरणम् श्वेत–यज्ञोपवीतं श्वेत वाहनं आरुढ़म् देवदानव गंधर्व किन्नर किंपुरुष गरुड़ व्यंतर प्रभृति महाभूताइव जिन शासन वत्सलऋष्यार्यिका श्रावक–श्राविका यष्ट्र याजक राजमंत्री पुरोहित सामंतप्रभृतिरक्षक (अमुकस्य) परमपुरुषार्थभूत प्राणोपकारक सर्वोपसर्ग विध्वंसनदक्ष सोम महाग्रह अस्मिन् मंडलमध्ये आह्वानयामहे।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेत वर्ण सर्वलक्षण सम्पन्न सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधूचिह्न परिवार सहित हे सोमग्रह ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ सोमाय स्वाहा। सोमपरिजनाय स्वाहा। सोमानुचराय स्वाहा। सोममहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा॥(14)॥

अथ अष्टकम्

ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम महाग्रहाय जलं समर्पयामि स्वाहा॥1॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं सोमग्रहाय गंधं॥2॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम महाग्रहाय अक्षतान्॥3॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम महाग्रहाय पुष्पं॥4॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम महाग्रहाय नैवेद्यं॥5॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम महाग्रहाय दीपं॥6॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम महाग्रहाय धूपं॥7॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं सोमग्रहाय फलं॥8॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम महाग्रहाय ध्वजा॥9॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम महाग्रहाय वस्त्रं॥10॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं सोमग्रहाय यज्ञसूत्र सहित आभरणं॥11॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं सोमग्रहाय दक्षिणायज्ञभागार्चनं॥12॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं सोमग्रहाय अर्घ्यं॥13॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं सोमग्रहाय शांतिधारा॥14॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं सोमग्रहाय पुष्पांजलिं॥15॥

Created by Universal Document Converter

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रप्रभ तीर्थंकराय श्याम यक्ष ज्वालामालिनी यक्षीसहिताय नमः। ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः फट् सोममहाग्रह मम (यजमान का नाम.....) सर्वजीवानां च सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥

(9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा – **हे जिन ! तुम जयमाल से, हुए अपूर्व कमाल।**
समंतभद्र मुनीश के, काटे संकट जाल॥

(शंभु छन्द)

जय चन्द्र कोटि रवि–चन्द्र वंद्य, जग श्रेष्ठ जगत के हित कर्त्ता।
जय सुलक्षणा माँ के नंदन, चिर सुन्दर शिवलक्ष्मी भर्त्ता॥
जन्मत दश अतिशय आप धरें, अर्हत् बन दश अतिशय पाये।
चौदह अतिशय देवों द्वारा, सुरपति करवाये सुख पाये॥1॥

सुर प्रभु की वाणी फैलाते, जो अर्द्धमागधी नाम धरे।
निज पूर्वभवों का वैर छोड़, सब प्राणी मैत्रीभाव वरें॥
प्रभु के प्रभाव से युगपत ही, षड्ऋतुओं के फल–फूल खिले।
इक योजन दर्पणवत् वसुधा, नाना रत्नों की रश्मि खिले॥2॥

औषधमय मन्द सुगंध पवन, प्रभु के विहार पथ पर चलती।
सब जीव परम आनंदित हो, हर्षे प्राणी हर्षित धरती॥
वायुकुमार जिनभक्ति वश, भूमि रज–कण्टक रहित करें।
फिर मेघकुंवर आनंदित हो, अघहर गंधोदक वृष्टि करें॥3॥

Created by Universal Document Converter

प्रभुवर के पाद युगल नीचे, होती है स्वर्णकमल रचना।
फल के भारों से झुके वृक्ष, दिखलाते प्रभु वैभव रचना॥
स्वयमेव फसल हो धान्यवती, अभिनंदन प्रभु का करती है।
सब रोग-शोक से मुक्त प्रजा, प्रभु पद की छाया वरती है॥4॥

नभ शरत् कालवत् निर्मल हो, अक्षय धर्मामृत बरसाता।
यक्षेन्द्र शीशधर धर्मचक्र, मिथ्यात्व मोह को विनशाता॥
सुरगण वसु मंगल द्रव्य लिए, श्री चन्द्रप्रभु की भक्ति करें।
सुरपति प्रभु के प्रतिहारी बन, अक्षय अनंत शिव शक्ति वरें॥5॥

शशि ग्रह, माता, कुल, सुख कारक, भू, यान, भवन सुख दातारी।
औषध, प्रज्ञा, बल, यश, वाणी, संयम मुनिव्रत में सहकारी॥
प्रतिकूल रहे तब हृदयरोग, अपघात मृत्यु का योग करे।
निर्दय, दुर्बुद्धि, दुश्चरित्र, बालारिष्टादि कुयोग करे॥6॥

जो समन्तभद्र मुनी जैसा, श्री चन्द्रप्रभु को ध्याता है।
वो शशि आदि नवग्रह बाधा, सब विघ्न रोग विनशाता है॥
हे नाथ ! तुम्हें मन से ध्याऊँ, मेरा चंचल मन शांत करो।
मुझ 'गुप्तिनंदी' की आश यही, मम सारे कर्मज क्लांत हरो॥7॥

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्ति भावों से **'नवग्रह शांति विधान'** करे।
नवग्रहरिष्ट विनाशे तत्क्षण निज-पर का उत्थान करे॥
मुनि बन धर्म क्षमादिक पाये निश्चय ही शिवराज करे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षय सुख साम्राज्य वरे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Created by Universal Document Converter

मंगलग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

वासुपूज्य वसु कर्म नाश कर, बने सिद्ध शिवधामी।
उनका मन से आह्वानन कर, बनूँ भक्त निष्कामी।।
आह्वानन सन्निधिकरण से, श्री जिनवर को ध्याऊँ।
रक्तवर्ण के पद्म पुष्प ले, भौम अरिष्ट मिटाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं भौमग्रहारिष्टनिवारक श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल की शीतल पावन धारा, श्री जिन चरण चढ़ाता हूँ।
कर्म धूल प्रक्षालन हेतु, प्रभु से प्रेम बढ़ाता हूँ।।
मंगल ग्रह की बाधा हर लो, मंगलमय मंगल कर्त्ता।
वासुपूज्य बस जायें हृदय में, सर्व शोक संकट हर्त्ता।।

ॐ ह्रीं भौमग्रहारिष्टनिवारकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

भवसागर में भटक न जाऊँ, हे प्रभु ! मुझको अपनाओ।
शीतल चंदन चरण चढ़ाता, भव की वांछा विनशाओ।। मंगल...

ॐ ह्रीं ..... संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षयनिधि के स्वामी को जो, अक्षत रोज चढ़ाता है।
अक्षय चिर सौभाग्यवान बन, सुख अनंत पा जाता है।। मंगल...

ॐ ह्रीं ..... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

रंग-बिरंगे चंपा जूही, पुष्प बाग से ले आये।
काम विजेता जिन चरणों में, हृदय कुसुम भी चढ़ जाये ।। मंगल...

ॐ ह्रीं ..... कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

पुडी-पकौड़ी-रबड़ी-लड्डू, सरस मधुर नित लाता हूँ।
प्रभु चरणों में चढ़ा-चढ़ाकर, अतिशय आनंद पाता हूँ ।।मंगल...

ॐ ह्रीं ..... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

Created by Universal Document Converter

दीप जलाकर तिमिर नशाने, प्रभु की आरती गाई है।
केवलज्ञानी की आरती से, माँ श्रुत भारती पाई है ॥
मंगल ग्रह की बाधा हर लो, मंगलमय मंगल कर्त्ता।
वासुपूज्य बस जायें हृदय में, सर्व शोक संकट हर्त्ता॥

ॐ ह्रीं ..... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

धूपघटों की धूमगंध से, समोशरण भी सुरभित है।
धूप चढ़ाऊँ प्रभु चरणों में, करने कर्म विसर्जित है ॥ मंगल...

ॐ ह्रीं ..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

आम-जाम-केला-नारंगी, ताजे रोज मंगाता हूँ।
श्री जिनवर के चरण चढ़ाकर, मनवांछित फल पाता हूँ॥ मंगल...

ॐ ह्रीं ..... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

अष्टद्रव्य से प्रभु अर्चा ही, मुक्तिमार्ग दिलवाती है।
प्रभु चरणों के दीवानों को, सर्व सुखी बनवाती है ॥ मंगल...

ॐ ह्रीं ..... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा – **रक्तवर्ण मणिरत्न युत, घट से है त्रयधार।**
लालवर्ण के पुष्प से, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मंगल ग्रहारिष्ट श्री सिद्ध भगवान का आह्वान

दोहा – **सर्व सिद्धी दातार हैं, सर्व सिद्ध भगवान।**
मोक्ष सिद्धी के लाभ हित, करता हूँ आह्वान॥

ॐ ह्रीं मंगल ग्रहारिष्ट निवारक श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छन्द)

जो त्याग तप संयम सुनय चारित्र व्रत से सिद्ध हैं।
नहीं काम क्रोध कषाय मत्सर मोह से आविद्ध हैं॥

Created by Universal Document Converter

जिनके सुमंगल नाम से हारे अमंगल सर्वथा।
उनको चढ़ाऊँ अर्घ मंगल नाश हो मम चिर व्यथा।।

ॐ ह्रीं मंगल ग्रहारिष्ट निवारकेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र :– (1) ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। (इस मंत्र का जाप्य 9, 27 या 108 बार करें)

अथ यक्ष पूजा

(काव्य छन्द)

वासुपूज्य भगवान, यथानाम नाम गुणधारी,
यक्षकुमार मनोज्ञ, उनके चरण पुजारी।
शासन रक्षक आप, धर्म प्रभाव दिखाओ,
विघ्न विनाशन हेत, तुम विधान में आओ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेत वर्ण कुमारयक्ष अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्। ॐ कुमारयक्षाय स्वाहा। कुमार परिजनाय स्वाहा। कुमारानुचराय स्वाहा। कुमारमहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा। (14)।

हे कुमार यक्ष ! स्वगणपरिवारपरिवृत्ताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अथ यक्षी पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

वासुपूज्य की शासन देवी विद्युन्मालिनी माता,
जिनशासन सेवा में तत्पर हरती सर्व असाता।
समकित गुण की धारक अम्बा धर्म प्रभाव दिखाओ,
यज्ञ भाग दे तुम्हें बुलायें जिन पूजन में आओ।।

Created by Universal Document Converter

ॐ आं क्रौं ह्रीं हरित प्रभे चतुर्भुजे मुसलाम्बुज धरे मकराधिरूढ़े श्री वासुपूज्य शासनदेवते विद्युन्मालिनीदेवी ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ विद्युन्मालिनी दैव्यै स्वाहा। विद्युन्मालिनीपरिजनाय स्वाहा। विद्युन्मालिनी अनुचराय स्वाहा। विद्युन्मालिनी महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा। (14)।

हे विद्युन्मालिनी देवी ! स्वगणपरिवार परिवृत्ताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अथ भौमग्रह पूजा

(शंभु छन्द)

मंगल नवग्रह सेनानायक समदृष्टि धर्म परायण हो।
मूंगा अभीष्ट यम दिशा ईष्ट तुम सन्मुख शत्रु पलायन हो।।
रक्ताभदीप्त ध्वज वस्त्र मुकुट फल पुष्प अर्घ्य आयुधधारी।
आरक्त वर्ण यज्ञोपवीत वाहन भूषण खग संचारी।।
तुम वक्र योग में अग्निकांड दारिद्र रोग भय आदिक हों।
अनुकूल समय में राजयोग विद्या सौभाग्य धनादिक हों।।
मंगल ग्रह गोचर लग्न दशा दुर्योग जन्य सब रिष्ट हरो।
तुम योग्य अर्घ दे शांत करें मम अपमृत्यु भय कष्ट हरो।।

ॐ दक्षिणदिग्मुखेन वियन् मंडले मंङ्नाय मान अनेक कोटाकोटिशतसहस्र परिवार परिवृत्त महासेनाधिपते मध्यलोकस्य महाजनैः पूजितमेरुमेकादशभिः योजनशतैरेकविंशति परिहृत्य प्रदक्षिणंनृलोके नित्यंगगनमार्गणस्थानमार्गेण मंदराचल प्रदक्षिणी परिवृत्त जिनधर्मप्रभावक जैनशासन भक्तितत्पर पुरुषवरप्रदायक सर्वजीव दयापर सर्वदुरित राज, कृतांत, कठोर, विघ्नविनाशन दक्ष, वक्रगमन शतभिषानक्षत्राधिपते श्री वासुपूज्य स्वामिन श्रीपाद पद्माराधक सर्वभव्यजनोपकारक, सर्वापमृत्यु विध्वंसन दक्ष मंगलं पूर्वाचलोदयीवत् दैदीप्यमान रक्तवरगात्र कर्कैतन वप्ररागवंदुशसदृशं रक्तवाससं रक्तपुष्पं, रक्ताभरणं,

Created by Universal Document Converter

रक्तयज्ञोपवीतं, रक्तवर्णवाहनं–आरुढ़ं देव, दानव, किन्नर, किंपुरुष, गरुड़, गंधर्व व्यंतर प्रभृति, महाभूताइव जिनशासनवत्सल, ऋष्यार्यिकाश्रावक–श्राविका यष्ट्रयाजक, राजमंत्री, पुरोहित सामंतप्रभृति रक्षक (अमुकस्य...) सर्वदुरितोपशांतिप्रद सर्वापमृत्युविध्वंसनदक्ष अस्मिन् मंडलमध्ये मंगलमहाग्रहं आह्वानयामहे॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्ण सर्वलक्षण सम्पन्न सम्पूर्ण स्वायुधवाहन वधूचिह्न सपरिवार हे मंगल ग्रह ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ कुजग्रहाय स्वाहा। कुजपरिजनाय स्वाहा। कुजानुचराय स्वाहा। कुजमहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा॥14॥

अथ अष्टकम्

ॐ आं क्रौं ह्रीं कुज ग्रहाय जलं समर्पयामि स्वाहा॥1॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं कुज ग्रहाय गंधं॥2॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं कुजग्रहाय अक्षतान्॥3॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं कुजग्रहाय पुष्पं॥4॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं कुजग्रहाय नैवेद्यं॥5॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं कुजग्रहाय दीपं॥6॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं कुजग्रहाय धूपं॥7॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं कुजग्रहाय फलं॥8॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं कुजग्रहाय ध्वजा॥ 9॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं कुजग्रहाय कौंशुभ वस्त्रं॥10॥ॐ आं क्रौं ह्रीं कुजग्रहाय यज्ञसूत्र सहित आभरणं ॥11॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं कुजग्रहाय दक्षिणा यज्ञभागार्कनं॥12॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं कुजग्रहाय अर्घ्यं॥13॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं कुजग्रहाय शांतिधारा॥14॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं कुजग्रहाय पुष्पांजलि॥15॥

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांतिर्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं वासुपूज्य तीर्थंकराय कुमार यक्ष गांधारी यक्षी सहिताय नमः। ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः फट् कुजमहाग्रह मम (यजमान का नाम.....) सर्वजीवानां च सर्व शांतिं कुरु–कुरु स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा – **वासुपूज्य भगवान की, गाऊँ गुण जयमाल।**
मंगल ग्रह बाधा टले, करुँ चरण नत भाल॥

चौपाई

जय–जय वासुपूज्य सुखकारी, तीन लोक के हो मनहारी।
चंपापुर को धन्य बनाया, देवों ने आ उसे सजाया॥1॥

Created by Universal Document Converter

पंद्रह मास रत्न की वर्षा, सुरगण करते हर्षा-हर्षा।
वसुदेवी स्वर्गों से आती, गर्भ सुमंगल के हित आती॥2॥
नाना द्रव्याभूषण लाती, माता की महिमा को गाती।
प्रश्न पूछती उत्तर पाती, माता के मन को बहलाती॥3॥
कोई देवी दर्पण लाती, माता को आनन दिखलाती।
कोई पंखा झलती आती, कोई केश सजाने आती॥4॥
कोई काजल नयन लगाती, कोई माता को नहलाती।
चम्पापुर में जन्मे स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी॥5॥
जन्मकल्याणक इन्द्र मनाये, मेरू पर अभिषेक कराये।
बचपन बीता यौवन आया, प्रभु ने छोड़ी सारी माया॥6॥
दीक्षा लेकर ध्यान लगाया, केवलज्ञान जिन्होंने पाया।
वासुपूज्य वसु कर्म नशाये, मुक्तिरमा से ब्याह रचाये॥7॥
मंगल की अनुकूल अवस्था, राजयोग दे सर्व व्यवस्था।
सेनापति व राष्ट्रपती हो, यतिनायक व मुक्तिपती हो॥8॥
यदि आ जाये विकल दशाएँ, जीवन का सौभाग्य नशाऐं।
युद्ध, कलह या आगजनी हो, खल पामर अतिदुर्व्यसनी हो॥9॥
पित्तादि कृत रोग सतायें, शस्त्रघात में प्राण गंवाये।
तब श्री वासुपूज्य को ध्याओ, सर्व पाप दुर्योग नशाओ॥10॥
हे प्रभु ! मैं भी तुमको ध्याऊँ, निज पापों की क्षमा कराऊँ।
'गुप्तिनंदी' गुप्ति को पायें, शिवसुखराज अचल पा जाये॥11॥

ॐ ह्रीं भौमग्रहारिष्टनिवारकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्तिभावों से **'नवग्रह शांति विधान'** करे।
नवग्रह रिष्ट विनाशे तत्क्षण निजपर का उत्थान करे॥
मुनि बन धर्म क्षमादिक पाये निश्चय ही शिवराज करे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षयसुख साम्राज्य वरे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Created by Universal Document Converter

बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री शांतिनाथ पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

शांति प्रभु शांति के दाता, मोक्षमार्ग के अधिकारी।
इनका नाम जाप सुमरण भी, रोग-शोक संकटहारी॥
नाना विधि के पुष्पों को ले, आह्वानन करने आया।
बुध ग्रह-तिथि-नक्षत्र जनित सब, बाधा को हरने आया॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्री शांतिनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

त्रय मल के प्रक्षालन हेतु, चरणों में शुचि जल लाया।
पुण्यनिधि का संचय करके, जन्म-जरा-मृत विनशाया॥
शांति प्रभु की शांत छवि लख, हृदय शांत हो जाता है।
वंदन-पूजन-कीर्त्तन करके, सब संकट टल जाता है॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारकाय श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

चन्दन से शीतल जिनपद में, चंदन लेपन मैं करता।
भव संताप मिटाने हेतु, भव का बंधन कम करता॥ शांति ...

ॐ ह्रीं....संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

भव का बंधन क्षत-विक्षत कर, अक्षयपद को प्राप्त किया।
ऐसे जिनवर के चरणों में, भर-भर अक्षत भेंट किया॥ शांति .....

ॐ ह्रीं.....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

हृदय-कमल के मल को धोने, पुष्प मनोहर मैं लाया।
सुमनाञ्जलि को अर्पण करते, रोम-रोम मम हर्षाया॥ शांति...

ॐ ह्रीं.....कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

षट्रस व्यंजन पकवानों की, थाली भरकर लाया हूँ।
क्षुधावेदनी क्षय होने के, भावों से मैं आया हूँ॥ शांति...

ॐ ह्रीं....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

Created by Universal Document Converter

ज्ञान ज्योति से महा भयंकर, मोहतिमिर हट जाता है।
जगमग दीपक लेकर भविजन, प्रभु चरणों में आता है॥
शांति प्रभु की शांत छवि लख, हृदय शांत हो जाता है।
वंदन-पूजन-कीर्त्तन करके, सब संकट टल जाता है॥

ॐ ह्रीं.....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

कर्म समूह दहन करने को, धूप दशांगी मैं लाया।
प्रभु चरणों का अनुरागी बन, साधक पथ को अपनाया॥ शांति...

ॐ ह्रीं..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

भौतिक रस से मन यह ऊबा, भक्ति रस में डूब रहा।
सरस मधुर षट्ऋतु के फल ले, प्रभु चरणों को पूज रहा॥ शांति...

ॐ ह्रीं.... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ चढ़ाकर, अष्टम भू की चाह करूँ।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से, रत्नत्रय की राह वरूँ॥ शांति...

ॐ ह्रीं...अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा- **त्रय धारा दे नीर की, पा जाऊँ भव तीर।**
सुमनाञ्जलि मन से करूँ, मेटूँ मन्मथ पीर॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री विमलनाथ भगवान का अर्घ

(गीता छन्द)

श्री विमल जिन वसु कर्म मल हरते जगत मंगल करें।
उनका मनन गुण नाम कीर्त्तन भक्त के अघ मल हरे॥
अष्टम मही की भावना से आ रहा प्रभु द्वार पे।
वसु द्रव्य अर्पित है प्रभो तारो मुझे मझधार से॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

श्री अनंतनाथ भगवान का अर्घ

(नरेन्द्र छन्द)

ध्यान कुन्त से कर्म अंत कर गुण अनंत को पाया।
दान अनंत करें त्रिभुवन को नाम अनंत कहाया॥
पद अनंत को पाने हेतू सुन्दर थाल सजाया।
भव अनंत का अंत कराने भक्ति भाव रचाया॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारकाय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ भगवान का अर्घ

(काव्य छन्द)

कर्मचक्र को मार, धर्मचक्र प्रगटायें।
धर्म तीर्थ का सार, धर्मनाथ बतलायें॥
अर्घ चढ़ाकर आज, हे जिन ! तुम गुण गाऊँ।
तुमको ध्याऊँ नाथ, धर्म रूप हो जाऊँ॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारकाय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुन्थुनाथ भगवान का अर्घ

(चौपाई)

कुन्थुनाथ त्रयपद के धारी, अशरण शरण जगत उपकारी।
प्रभु का समोशरण मनहारी, पूजे देव श्रमण नर-नारी॥
अष्ट द्रव्य का थाल सजाया, नवग्रह शांति विधान रचाया।
हे जिन ! मैंने तुमको ध्याया, प्रभु भक्ति में चित्त लगाया॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारकाय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथ भगवान का अर्घ

(शंभु छन्द)

शम दम की शक्ति अपनाकर, प्रभु ने शत्रु का नाश किया।
श्री अरहनाथ निज अरि को नश, जग में कैवल्य प्रकाश किया॥

Created by Universal Document Converter

व्रत संयम की शक्ति पाने, मैंने वसु अर्घ चढ़ाया है।
अक्षय पद की अभिलाषा से, गुणगान प्रभु का गाया है।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारकाय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथ भगवान का अर्घ

(सखि छन्द)

प्रभु नय प्रमाण के ज्ञानी, निश्चय व्यवहार बखानी।
जो नियम नये नित धारे, निर्मल निज रूप निहारें।।
श्री नमिनाथ को ध्याऊँ, उनके निर्मल गुण गाऊँ।
नीरादिक द्रव्य चढ़ाऊँ, निर्वाण क्षेत्र को पाऊँ।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारकाय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान का अर्घ

(शेर छन्द)

महावीर वीर सन्मति अतिवीर नाम है।
श्री वर्द्धमान नाम सर्व सौख्य धाम है।।
जल चंदनादि द्रव्य का शुभ थाल सजाया।
बुध ग्रह अरिष्ट नाशने विधान रचाया।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथादि आठ तीर्थंकरों के अर्घ

(शंभु छन्द)

जय विमल अनंत धरम शांति, श्री वर्द्धमान नमि कुंथु अर।
बुध ग्रह कृत दोष हरे निश्चय, आठों तीर्थंकर मंगलकर।।
श्री भद्रबाहु श्रुत केवली ने, यह आगम सूत्र बताया है।
उनके श्रद्धानी भक्तों ने, जिन भक्ति पाठ रचाया है।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारकेभ्यो श्री विमल अनंत धर्म शांति कुंथु अरह नमि वर्धमान चरणेभ्यों पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री उपाध्याय परमेष्ठी का आह्वान

दोहा – **यति पाठक उपदेश दे, द्वादशांग का ज्ञान।**
उपाध्याय मुनिराज का, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री उपाध्याय परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(त्रिभंगी छन्द)

यति धर्म धुरन्धर, शील समुन्दर, श्रुतगिरी मन्दर ज्ञान निधी।
दुःख शोक मिटाते, मार्ग दिखाते, सहज सिखाते धर्म विधी।।
उनको हम ध्यायें, अर्घ चढ़ायें, यति पाठक की भक्ति करें।
वे बुध ग्रह पीड़ा, कर्मन क्रीड़ा, नाश करें नव शक्ति भरें।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारकेभ्यो श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र :- (1) ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं। (इस मंत्र का जाप्य 9, 27 या 108 बार करें)

अथ यक्ष पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

शांति प्रभो ने चक्ररत्न तज धर्म चक्र को धार लिया,
उनके सेवक गरुड़ यक्ष ने इह पर लोक सुधार लिया।
कृष्ण वर्ण तुम चार भुजायें सम्यग्दर्शन धारी हो,
यज्ञभाग ले तुम्हें चढ़ायें तुम इसके अधिकारी हो।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्ण वर्णे चतुर्भुजे गरुड़ यक्ष अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ गरुड़ यक्षाय स्वाहा। ॐ गरुड़ परिजनाय स्वाहा। गरुड़ अनुचराय स्वाहा। गरुड़ महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

Created by Universal Document Converter

हे गरुड़ यक्ष ! स्वगणपरिवारपरिवृत्ताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अथ यक्षी पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

महामानसी शासन देवी शांतिनाथ को ध्याती है,
जिनशासन की रक्षा करके जीवन धन्य बनाती है।
वाहन मोर सुनहरी आभा चार भुजा धारण करती,
यज्ञभाग दे उनको पूजे जो सबके संकट हरती॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्णे चतुर्भुजे ईढी चक्र फलांसि वरदहस्ते, मयूरवाहने श्री शांतिनाथस्य शासन देवते महामानसी अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ महामानसी देव्यै स्वाहा। महामानसी परिजनाय स्वाहा। महामानसी अनुचराय स्वाहा। महामानसी महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

हे महामानसी देवी ! स्वगणपरिवारपरिवृत्ताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

Created by Universal Document Converter

अथ बुधमहाग्रह पूजा

(शंभु छन्द)

बुध ग्रह सम्यक्त्वी सर्वमान्य, नैऋत्य दिशा अधिनायक हो।
रोहिणी नक्षत्र अभीष्ट तुम्हें, तुम भव्यों के उपकारक हो॥
तुम हरित वस्त्र आभरण वर्ण, ध्वज, पुष्प, मुकुट वाहन धारी।
हरिताभ रत्न तुमको अभीष्ट, श्री शांतिनाथ के अनुचारी॥
अनुकूल समय तुम वाणी धन, विद्या लेखन में सहकारी।
प्रतिकूल समय चंचल, दुर्बल, दारिद्र रोग दुःख दातारी॥
बुध ग्रह, तिथि, गोचर, लग्न, दशा, प्रतिकूल योग को नष्ट करो।
तुम योग्य अर्घ अर्पण करते मम अपमृत्यु का कष्ट हरो॥

ॐ दक्षिण पश्चिमदिग्मुखेन गगन मण्डल मंडनायमान अनेक कोटाकोटि शत सहस्र परिवार परिवृत्त महासेनाधिपते नित्यं गगन मार्गण स्थानमार्गेण मंदराचल प्रदक्षिणी परिवृत्त जिनधर्मप्रभावक जैनशासन भक्तियुत तत्पर पुरुषवर प्रदायक अश्विनी नक्षत्राधिपते शांतिनाथ स्वामिनः श्रीपाद पद्माराधक सर्वजीव दया पर सर्वभव्य जनोपकारक हरितवाससं हरितपुष्पं हरिताभरणं हरितयज्ञोपवीतं हरितवर्णे वाहनं आरुढ़म् देवदानव गंधर्व किन्नर किंपुरुष गरुड़ व्यंतर प्रभृति महाभूता इव जिनशासन वत्सल ऋष्यार्यिका श्रावक-श्राविका यष्ट्र याजक राजमंत्री पुरोहित-सामंत, प्रभृतीरक्षक (यजमानस्य) सर्व दुरितोपशांतिकारक सर्वापमृत्यु विध्वंसनदक्ष बुध महाग्रहं अस्मिन् मंडल मध्ये आह्वानयामहे॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हरितवर्ण सर्वलक्षण सम्पन्न सम्पूर्ण स्वायुध वाहनवधू चिह्न सपरिवार हे बुध महाग्रह ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ बुधाय स्वाहा। बुध परिजनाय स्वाहा। बुधानुचराय स्वाहा। बुधमहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

अथ अष्टकम्

ॐ आं क्रौं ह्रीं बुधग्रहाय जलं समर्पयामि स्वाहा॥1॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं बुधग्रहाय गंधं॥2॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं बुधग्रहाय अक्षतान्॥3॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं बुधग्रहाय पुष्पं॥4॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं बुधग्रहाय नैवेद्यं॥5॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं बुधग्रहाय दीपं॥6॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं बुधग्रहाय धूपं॥7॥

Created by Universal Document Converter

ॐ आं क्रौं ह्रीं बुधग्रहाय फलं॥8॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं बुधग्रहाय ध्वजा॥9॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं बुधग्रहाय वस्त्रं॥10॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं बुधग्रहाय यज्ञसूत्र सहित आभरणं॥11॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं बुधग्रहाय दक्षिणा यज्ञभागार्चनं॥12॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं बुधग्रहाय अर्घ्यम्॥13॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं बुधग्रहाय शांतिधारा॥14॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं बुधग्रहाय पुष्पांजलिं॥15॥

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांतिर्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं शांतिनाथ तीर्थंकराय गरुड़ यक्ष महामानसी यक्षी सहिताय नमः। ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः फट् बुधमहाग्रह मम (यजमान का नाम....) सर्वजीवानां च सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा – **तीर्थंकर चक्रेश हो, कामदेव जगदीश।**
बुधग्रह बाधा नाशने, तुम्हें नवाऊँ शीश॥

(शंभु छन्द)

जयमाला प्रभु गुण की गाने, सुमनों की माला लाते हैं।
श्री शांतिनाथ के चरणों में, वसु द्रव्य सजाकर लाते हैं॥
पितु विश्वसेन-माँ ऐरा के, नंदन को वंदन है मेरा।
कुरुवंश शिरोमणि शांतिनाथ के, चरणों में मिटता फेरा॥1॥
त्रय पद के धारी प्रभुवर की, त्रयकाल वंदना करता हूँ।
प्रभु तीर्थंकर का नाम सुमर, सब तीर्थ वंदना करता हूँ॥
सबके मन को हरने वाले, प्रभु कामदेव जगख्यात हुए।
षट्खण्ड विजेता शांतिप्रभु, वे चक्रवर्ती पद प्राप्त हुए॥2॥
पाँचों कल्याणक से भूषित, पंचम गति को पाने वाले।
पंचम पद की अभिलाषा से, हम आये प्रभु के मतवाले॥
आजन्मजात वैरी अपना, वैरत्व छोड़ प्रभु शरण खड़े।
उस समोशरण की यशगाथा, गाते-गाते भवि भक्त बढ़े॥3॥

Created by Universal Document Converter

ऊँचे अशोक तरु के नीचे, प्रभु का सुन्दर तन मोह रहा।
जैसे काले बादल नीचे, रवि का मण्डल है शोभ रहा ।।
पुष्पों की पुष्पांजलि सुरगण, नभ से हर्षित होकर करते।
पर अचरज होता त्रिभुवन को, जब पुष्प सभी सीधे गिरते।।4।।
बहुकोटि प्रमित दुंदुभि बाजे, सुर इन्द्र बजायें हर्ष भरे।
श्री शांति प्रभु का दर्शन पा, निज भावों का उत्कर्ष करें ।।
मणि-मुक्तारत्न खचित आसन, उसके ऊपर है कमलासन।
उससे भी चतुरंगुल ऊपर, तुम शोभ रहे प्रभु अधरासन।।5।।
स्याद्वाद विभूषित दिव्यध्वनि, सर्वात्म प्रदेशों से खिरती।
शत सप्त अठारह भाषा में, सबके सबविध भ्रम को हरती।।
त्रयछत्र त्रिजग परमेश्वर के, त्रिभुवन में शासन सिद्ध करें।
उसके नीचे श्री शांति प्रभु, जग के सब मंगल सिद्ध करें।।6।।
चौसठ चवरों युत यक्ष युगल, मनहारी नृत्य रचाते हैं।
जन-मन शासक की भक्ति कर, आगामी शिव सुख पाते हैं।।
कोटि रवि-शशि का तेज हरे, हे देव ! तुम्हारा मुख मण्डल।
उसका प्रतीक बन शोभ रहा, जिनरवि सम भाषित भामण्डल।।7।।
वसु प्रातिहार्य निधि से पूजित, श्री शांति प्रभो अघहारी हो।
बुध ग्रह कृत सर्व अरिष्ट हरें, तुम भव्यों के उपकारी हो ।।
तुम सम जिन गुण सम्पत पाने, हे नाथ ! तुम्हारे गुण गाऊँ।
त्रय 'गुप्ति' धर शिवराज वरूँ, भव भ्रमण शृंखला विनशाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्ति भावों से **'नवग्रह शांति विधान'** करे।
नवग्रह रिष्ट विनाशे तत्क्षण निज पर का उत्थान करे ।।
मुनिबन धर्म क्षमादिक पाये निश्चय ही शिवराज करे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षयसुख साम्राज्य वरे।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Created by Universal Document Converter

गुरुग्रहारिष्ट निवारक श्री आदिनाथ पूजा

(गीता छन्द)

हे आदि ब्रह्मा ! आदि युगधर, आद्य प्रभु आदीश जिन।
यह लोक व्याकुल हो गया, जग बन्धु आदिनाथ बिन॥
मैं स्वर्ण वर्णी पुष्प ले, आह्वान अभिनंदन करूँ।
गुरु ग्रह-तिथि-नक्षत्र कृत, सब कष्ट का भंजन करूँ॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक श्री आदिनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छन्द)

पुखराज मणि युत स्वर्ण कुम्भ, उससे जल की त्रयधार करूँ।
शुचि सम्यक् रत्नत्रय पाऊँ, त्रय रोगों का परिहार करूँ॥
हे आद्य ! बंधु जिन आदीश्वर, मैं तुम गुण पूजन-भजन करूँ।
गुरु ग्रह कृत सर्व अमंगल हर, श्री आदि प्रभु को नमन करूँ॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारकाय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

चिर पाप-ताप-संतापों ने, हे नाथ ! मुझे झुलसाया है।
मम अतिशय पुण्य प्रताप आज, तव चरणन् गंध लगाया है॥ हे आद्य...

ॐ ह्रीं.....भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

निज मोह कषाय विभाव नाश, तुमने अक्षय सुख पाया है।
उसको पाने पुष्कर मुक्ता, अक्षत का पुंज चढ़ाया है॥ हे आद्य...

ॐ ह्रीं....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

मैं पीत पुष्प जल-भूमिज ले, प्रभु पद में रख अति हर्षाया।
संसार बीज का हनन करूँ, यह भाव आप सन्मुख आया॥ हे आद्य...

ॐ ह्रीं.....कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

Created by Universal Document Converter

बरफी-पपड़ी-खाजे बहुविध, भक्ति से व्यंजन थाल भरा।
उन क्षुधा विजेता को अर्पित, जिसने सुख श्रेष्ठ विशाल वरा॥
हे आद्य ! बंधु जिन आदीश्वर, मैं तुम गुण पूजन-भजन करूँ।
गुरु ग्रह कृत सर्व अमंगल हर, श्री आदि प्रभु को नमन करूँ॥

ॐ ह्रीं.....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

मोहान्ध तिमिर नाशक जिन को, मैं दीप चढ़ा कर सुख पाऊँ।
उन सन्मुख दीपक नित्य रखूँ, निज केवलरवि को प्रगटाऊँ॥ हे आद्य...

ॐ ह्रीं.....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

अध्यात्म जगत के भूप आप, मैं आया धूप चढ़ाने को।
कैसे तुमने वसु कर्म नशे, यह सूत्र समझने पाने को॥ हे आद्य...

ॐ ह्रीं..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

निष्फल चिरकाल गया मेरा, अब सफल हुआ तुमको पाया।
उसके प्रतिफल में भक्ति सहित, आमादिक बहुविध फल लाया॥ हे आद्य...

ॐ ह्रीं..... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

हे नाथ ! आप पूजन-दर्शन, अक्षय अनर्घ्य पद दातारी।
मैं अर्घ चढ़ाऊँ नृत्य करूँ, बनने क्षायिक लब्धिधारी॥ हे आद्य...

ॐ ह्रीं..... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा – **पुष्कर मणि शोभित कलश, करें नीर की धार।**
प्रभु पद में अर्पण करें, पीत पुष्प का हार॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री अजितनाथ भगवान का अर्घ

(शेर छन्द)

हम द्रव्य भाव दोनों से भक्ति रचायेंगे।
मनहर प्रभु को अर्घ चढ़ा गीत गायेंगे॥

Created by Universal Document Converter

श्री अजितनाथ के चरण कमल को ध्यायेंगे।
अजेय शक्ति पाने को प्रभु द्वार आयेंगे।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्ट निवारकाय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभवनाथ भगवान का अर्घ

(गीता छन्द)

भव-भव दुःखों को नाशते संभव प्रभु निज ध्यान से।
मम सब असंभव पूर्ण हो शुभ अर्चना मय ध्यान से।।
मैं नीर चंदन और अक्षत आदि अर्घ चढ़ा रहा।
शुभ भावना से मोक्षपद की कामना ले आ रहा।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्ट निवारकाय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनंदन भगवान का अर्घ

(नरेन्द्र छन्द)

श्री अभिनंदन प्रभु का नंदन बनने को मैं आया।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर पूजन करने आया।।
पद अनर्घ मुझको मिल जाये यही भावना भाता।
प्रभु चरणों का कीर्त्तन वंदन ध्यान लगाने आता।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्ट निवारकाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमतिनाथ भगवान का अर्घ

(काव्य छन्द)

सम्यक् मति दातार, सुमतिनाथ सुखकारी।
करते सुर नर-नार, प्रभु भक्ति अघहारी।।
मनहर वसु विधि अर्घ, सर्वोत्तम ले आया।
पाऊँ सौख्य अनर्घ, भक्ति स्चाने आया।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्ट निवारकाय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

श्री सुपार्श्व प्रभु का अर्घ

(चौपाई)

विश्व विजेता कर्म विजेता, मोक्षमार्ग के तुम अभिनेता।
श्री सुपार्श्व प्रभु नाम तिहारा, भव्यजनों का तारणहारा॥
जो प्रभुवर की शरणा आये, नवग्रह की बाधा नश जाये।
वसु विधि अर्घ सजाकर लाये, पद अनर्घ का भाव जगाये॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्ट निवारकाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ भगवान का अर्घ

(शंभु छन्द)

शशि सम कांति देने वाले, चंदन सम शीतलता देते।
रवि सम जिनका है तेज प्रबल, प्रभु मिथ्यातम को हर लेते॥
ऐसे शीतल प्रभुवरजी को, मैं अर्घ समर्पण करता हूँ।
त्रय योगों से वंदन करके, शिव सुख रमणी को वरता हूँ॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्ट निवारकाय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान का अर्घ

(सखि छन्द)

श्रेयांस श्रेय के दाता, श्रेयस सन्मार्ग प्रदाता।
निश्रेयस शिवसुख धाता, श्रेयार्थ उन्हें शिर नाता॥
श्रेयस्कर अर्घ चढ़ाऊँ, श्रेयांसनाथ को ध्याऊँ।
श्रेयस्कर पद पा जाऊँ, श्रेयस्कर भक्ति रचाऊँ॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्ट निवारकाय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वृषभादि आठ तीर्थंकरों के अर्घ

(शंभु छन्द)

ऋषभाजित संभव अभिनंदन, जय सुमति सुपारस नाथ प्रभो।
भवताप विनाशक शीतल जिन, कल्याण करें श्रेयांस विभो॥

Created by Universal Document Converter

आठों प्रभु गुरु ग्रह दोष हरें, यह भद्रबाहु की वाणी है।
मैं पूजन अर्चन भजन करूँ, प्रभु पूजा ही कल्याणी है॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्ट निवारकेभ्यो श्री वृषभादि अष्ट तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री आचार्य परमेष्ठी का आह्वान

दोहा – **गणधर चौसठ ऋद्धि धर, श्री आचार्य महान।**
गुरु ग्रह की पीड़ा हरें, उनका है आह्वान॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्ट निवारक श्री आचार्य परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छन्द)

शिव सिद्धी चौसठ ऋद्धिधर गणधर गणेश महान हैं।
श्रुत नयन आगम वयन धर आचार्य करुणावान हैं॥
उनको सुमंगल अर्घ दे हम भक्ति से वंदन करें।
वे गुरु जनित सब दोष पीड़ा विघ्न का भंजन करें॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्ट निवारकेभ्यो श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र :- (1) ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं (इस मंत्र का जाप्य 9, 27 या 108 बार करें)

अथ यक्ष पूजा

(शंभु छन्द)

पा वृषभ चिह्न श्री वृषभ देव ने, वृषभ धर्म अपनाया था,
अक्षय अनंत आतम गुण पा, वृषभोत्तम मार्ग दिखाया था।
उन प्रभु के शासन यक्षपति, श्री गोमुख सम्यग्दृष्टि हो,
हम तुमको अर्पित अर्घ करें, भव्यों पर वरदा दृष्टि हो॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेत वर्णे चतुर्भुजे गोमुख यक्ष अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

Created by Universal Document Converter

ॐ गोमुख यक्षाय स्वाहा। गोमुख परिजनाय स्वाहा। गोमुख अनुचराय स्वाहा। गोमुख महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

हे गोमुख यक्ष ! स्वगणपरिवारपरिवृत्ताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अथ यक्षी पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

धर्म चक्र ले कर्म चक्र का भ्रमण चक्र जो छुड़वायें,
ज्ञान चक्र से कुनय चक्र का सहज प्रखंडन करवायें।
उनकी यक्षी चक्रेश्वरी माँ शासन सेवक सद्ज्ञानी,
शास्त्र विशारद उनको पूजें, कहती आगम की वाणी।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्णे द्वादशभुजे वज्रचक्रफलांसि वरदहस्ते, गरुड़वाहने श्री आदिनाथ जिनशासने चक्रेश्वरीदेवी अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ चक्रेश्वरी देव्यै स्वाहा। चक्रेश्वरी परिजनाय स्वाहा। चक्रेश्वरी अनुचराय स्वाहा। चक्रेश्वरी महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

हे चक्रेश्वरी देवी ! स्वगणपरिवारपरिवृत्तायै तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

Created by Universal Document Converter

अथ गुरु ग्रह पूजा

(शंभु छन्द)

सम्यक्त्वी ज्योतिष देव गुरु जिन धर्म परायण बृहस्पति।
पुखराज रत्न तुमको अभीष्ट तुम हो वायव्य दिशाधिपति॥
तुम पीत वर्ण यज्ञोपवीत ध्वज मुकुट वस्त्र वाहन धारी।
आभरण पुष्प फल पीत वर्ण या स्वर्ण वर्ण मंगलकारी॥
शुभ रूप भाग्य वैराग्य धैर्य गांभीर्य ज्ञान बल दातारी।
दुष्कर्मा पामर जीवों को, तुम हो प्रतिकूल महाभारी॥
तुम योग्य अर्घ ध्वज वस्त्रादि, लाया हूँ इसको ग्रहण करो।
मम अपमृत्यु दुःख रोग शोक, संकट पीड़ा का हनन करो॥

ॐ पश्चिमोत्तर दिग्मुखेन गगन मण्डल मंडनायमान अनेक कोटाकोटि शत सहस्र परिवार परिवृत्त महासेनाधिपते नित्यं चतुरनुयोगाभ्यास तत्पर देवगुरुमुख्योपाध्याय उत्तराफाल्गुनीनक्षत्राधिपते श्री आदिनाथ स्वामिनः श्रीपाद पद्माराधक सर्वजीव दयापर सर्वभव्य जनाभिष्टफलप्रदायक अहवति समान क्रांतिमंतमपि नितांत अतुलदिधिति मतदांत शांत स्वांत मतैकांत चिंताजंतु रितभिति संत्रासक, सिद्धांत इष्टपते बृहस्पते सुवर्ण पुष्पराग चंपकादि पुष्प सदृश पीतवसनं पीत पुष्पं पीतरत्नाभरणं पीतयज्ञोपवीतं पीतवर्णे वाहनं आरुढ़म् देव दानव गंधर्व किन्नर किंपुरुष गरुड़ व्यंतरप्रभृति महाभूताइव जिनशासन वत्सल ऋष्यार्यिका श्रावक–श्राविका यष्ट्र याजक राजमंत्री पुरोहित सामंत प्रभृतीरक्षक (अमुकस्य...) परम पुरुषार्थ भूत प्राणोपकारक सर्वदुरितोपशांतिकारक सर्वापमृत्यु विध्वंसनदक्ष अस्मिन् मंडल मध्ये बृहस्पति महाग्रह आह्वानयामहे।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्ण सर्वलक्षण सम्पन्न सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न सपरिवार हे बृहस्पति ! महाग्रह अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ बृहस्पतिग्रहाय स्वाहा। बृहस्पति परिजनाय स्वाहा। बृहस्पति अनुचराय स्वाहा। बृहस्पति महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

Created by Universal Document Converter

अथ अष्टकम्

ॐ आं क्रौं ह्रीं बृहस्पतिग्रहाय जलं समर्पयामि स्वाहा।।1।। ॐ आं क्रौं ह्रीं बृहस्पतिग्रहाय गंधं।।2।। ॐ आं क्रौं ह्रीं बृहस्पतिग्रहाय अक्षतान्।।3।। ॐ आं क्रौं ह्रीं बृहस्पतिग्रहाय पुष्पं।।4।। ॐ आं क्रौं ह्रीं बृहस्पतिग्रहाय नैवेद्यं।।5।। ॐ आं क्रौं ह्रीं बृहस्पतिग्रहाय दीपं।।6।। ॐ आं क्रौं ह्रीं बृहस्पतिग्रहाय धूपं।।7।। ॐ आं क्रौं ह्रीं बृहस्पतिग्रहाय फलं।।8।। ॐ आं क्रौं ह्रीं बृहस्पतिग्रहाय ध्वजा।। 9।। ॐ आं क्रौं ह्रीं बृहस्पतिग्रहाय वस्त्रं।।10।। ॐ आं क्रौं ह्रीं बृहस्पतिग्रहाय यज्ञसूत्र सहित आभरणं।।11।। ॐ आं क्रौं ह्रीं बृहस्पतिग्रहाय दक्षिणा यज्ञभागार्चनं।।12।। ॐ आं क्रौं ह्रीं बृहस्पतिग्रहाय अर्घ्यम्।।13।। ॐ आं क्रौं ह्रीं बृहस्पतिग्रहाय शांतिधारा।।14।। ॐ आं क्रौं ह्रीं बृहस्पतिग्रहाय पुष्पांजलिं।।15।।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांतिर्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथ तीर्थंकराय गोमुख यक्ष चक्रेश्वरी यक्षी सहिताय नमः। ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः फट् गुरु महाग्रह मम (यजमान का नाम.....) सर्वजीवानां च सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा : **आदि ब्रह्म आदीश जिन, आद्य सुविधि कर्तार।**
आदि नाम जयमाल ही, कर्म शैल हर्त्तार।।

चौपाई

जय-जय आदि जिनेश हमारे, मरुदेवी नंदन मनहारे।
नाभिराय के नयन सितारे, साकेता के राजदुलारे।।1।।
जग में सुंदर रूप तुम्हारा, शचि को समकित गुण दातारा।
तन से रंच भी स्वेद न आये, नहीं खेद तन क्लांति नशाये।।2।।
सब पर तुम वात्सल्य अपारा, इस विध बहे श्वेत रज धारा।
लक्षण सहस अठोत्तर पाये, सर्वश्रेष्ठ जग में कहलाये।।3।।
मधुर श्रेष्ठ हित-मित-प्रिय वाणी, सर्व जगत को है कल्याणी।
उत्तम संहनन तुमसे शोभे, भव्य जगत को प्रतिपल लोभे।।4।।

Created by Universal Document Converter

चउविध दान किया करवाया, मुनिसेवा का फल अब आया।
बल अतुल्य जिनवर ने पाया, पाँच शतक धनु ऊँची काया॥5॥
सम चौरस प्रभु का संस्थाना, अनुपम-अद्भुत श्रेष्ठ महाना।
तन भी सुरभित गंध बहाये, पाप-ताप सब रोग नशाये॥6॥
स्वर्गों का प्रभु भोजन पाये, जिसका हर कण बल बन जाये।
स्वेद नहीं नीहार नहीं है, रोग-शोक लवलेश नहीं है॥7॥
ये दश अतिशय जन्मत पाये, दस अरिहंत बने तब आये।
चौदह अतिशय सुरकृत होते, धर्म बीज वे जग में बोते॥8॥
पांच सुमंगल जिनके होते, जो जग मंगल में रत होते।
ऐसे श्री जिन आदि हमारे, सब दुःख-संकट कष्ट निवारे॥9॥
जिसका पाप उदय जब आये, गुरु ग्रह बाधा उसे सताये।
पीड़ायें बहु रूप बनावें, मरणतुल्य भी संकट आवे॥10॥
बहु परिश्रम पर लाभ ना होवे, सुलझे कार्य उलझते होवे।
विद्याभ्यास निरर्थक जाता, याद नहीं हो समझ न आता॥11॥
धन डूबा-व्यापार में घाटा, जीवन में छाया सन्नाटा।
इत्यादिक बहुविध पीड़ायें, प्रभु का नाम सहज विनशायें॥12॥
जग में नाम सुना तुम भारी, मैं भी आया शरण तुम्हारी।
मेरी अर्ज सुनो हे स्वामी !, मुझे बनाओ शिवपथगामी॥13॥
धर्म मार्ग में दृढ़ मैं होऊँ, निर्मल मुनिव्रत में रत होऊँ।
त्रय 'गुप्ती' की सिद्धी पाऊँ, शिवसुख राज सहज पा जाऊँ॥14॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारकाय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्तिभावों से **'नवग्रह शांति विधान'** करे।
नवग्रह रिष्ट विनाशे तत्क्षण निज पर का उत्थान करे॥
मुनि बन धर्म क्षमादिक पाये निश्चय ही शिवराज करे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षयसुख साम्राज्य वरे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Created by Universal Document Converter

शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत पूजा

(गीता छन्द)

श्री पुष्पदंत जिनेश की, यशगंध जग विख्यात है।
गणधर गुरु शत इंद्र भी, जिस द्वार पर नत माथ है ॥
बहुपुष्प ले जिनपुष्प का, आह्वान अभिनंदन करूँ।
ग्रह शुक्र-तिथि-नक्षत्र वा, वसुकर्म का बंधन हरूँ॥

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंतजिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

चामर छन्द

स्वच्छ नीर वज्रयुक्त हेमकुम्भ में भरूँ ।
तीन धार दे अनादि रोग तीन को हरूँ॥
शुक्र दोष नाश हेतु पुष्पदंत को जजूँ।
भक्ति-पाठ-जाप से निजात्म सौख्य को भजूँ॥

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारकाय श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

गंध चन्दनादि ले जिनेश पाद चर्चता।
पाप-ताप नाश हेतु आपको हि अर्चता ॥ शुक्र .....

ॐ ह्रीं...भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

श्वेत दीप्त वा अखंड शालि हाथ में लिए।
पाँच पुंज सर्वश्रेष्ठ ज्येष्ठ नाथ को चढ़े॥ शुक्र .....

ॐ ह्रीं...अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

Created by Universal Document Converter

श्वेतकुंद पुष्प वा गुलाबपद्म आदि ले।
आपको चढ़ा अनादि काम व्याधि को नशे॥
शुक्र दोष नाश हेतु पुष्पदंत को जजूँ।
भक्ति-पाठ-जाप से निजात्म सौख्य को भजूँ॥

ॐ ह्रीं...कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

श्वेत वर्ण श्रेष्ठमिष्ट व्यजनांदि थाल से।
श्री जिनेश को चढ़ा क्षुधादि व्याधि जीत लें॥ शुक्र .....

ॐ ह्रीं...क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

दीपराग भक्ति-नृत्य साथ आरती करूँ।
मोहध्वांत नाश आत्मज्ञान भारती वरूँ॥ शुक्र .....

ॐ ह्रीं... मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

श्वेतधूप ले अनूप धर्मभूप को चढ़ा।
दैत्यरूप बंधभूप कर्म को जला रहा॥ शुक्र .....

ॐ ह्रीं... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

आम-जाम-संतरा मनोज्ञ थाल में सजा।
आप द्वार आय भक्त भक्ति भाव से सजा॥ शुक्र .....

ॐ ह्रीं... मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

ढोल-बांसुरी-मृदंग से जजूँ जिनेश को।
अर्घ को चढ़ा वरूँ अनर्घ सिद्धवेष को॥ शुक्र .....

ॐ ह्रीं...अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा : **पुष्प पत्र युत कुंभ से, करूँ नीर त्रय धार।**
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, हरूँ काम का भार॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Created by Universal Document Converter

शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री अरिहंत परमेष्ठी का आह्वान

दोहा – **नेता मुक्ति मार्ग के, श्री अरिहंत जिनेश।**
आह्वानन स्थापना, उनकी करूँ हमेश।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री अरिहंत परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छन्द)

अरिहंत कर्मन् अंत कर, शिवमार्ग के नायक बने।
सर्वार्थ दायक शिव विधायक, विश्व के ज्ञायक बने।।
ऐसे परम करुणा निधि, अरिहंत की पूजन करें।
ग्रह शुक्र की बाधा नशाने, नमन गुण कीर्त्तन करें।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारकेभ्यो श्री अरिहंत परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र :- (1) ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं (इस मंत्र का जाप्य 9, 27 या 108 बार करें)।

अथ यक्ष पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

अजित यक्ष जिन शासन रक्षक, पुष्पदंत का ध्यान करें।
धर्म मार्ग की बाधा हरते, दुखियों का उत्थान करें।।
सम्यक्त्वी जिन धर्म प्रभावक, धर्म सभा में वास करें।
यज्ञभाग दे उन्हें बुलाऊँ, मेरी पूरी आश करें।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्णे चतुर्भुज स्वायुध वाहन वधू चिह्न सपरिवार हे अजित यक्ष ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ अजित यक्षाय स्वाहा। ॐ अजित परिजनाय स्वाहा। अजितानुचराय स्वाहा। अजित महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये

Created by Universal Document Converter

स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

हे अजितयक्ष ! स्वगणपरिवारपरिवृत्ताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अथ यक्षी पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

पुष्पदंत ने कर्म अंत कर गुण अनंत को पाया था,
जिनका शुभ यश भूमण्डल के हर कण–कण पर छाया था।
जिनकी यक्षी शासन देवी भ्रकुटि अम्बा सम्यक्त्वी,
यज्ञ अंश दे उन्हें बुलाऊँ जिनपद भक्ति जो करती।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्णवर्णे चतुर्भुजे मुद्गरवज्रफल वरदहस्ते कूर्मवाहने श्री पुष्पदंत शासनदेवते भ्रकुटी देवी अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्। ॐ भ्रकुटी देव्यै स्वाहा। ॐ भ्रकुटीदेवी परिजनाय स्वाहा। ॐ भ्रकुटीदेवीअनुचराय स्वाहा। भ्रकुटीदेवी महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

हे भ्रकुटी देवी ! स्वगणपरिवार परिवृत्ताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

Created by Universal Document Converter

अथ शुक्र ग्रह पूजा

(शंभु छन्द)

जो पवन दिशा का अधिनायक, नभ में हीरे सा चमक रहा,
संगीत सृजेता दीप्तवान जिन धर्मसभा में दमक रहा।
तुम श्वेत वर्ण के वस्त्र पुष्प, यज्ञोपवीत वाहन धारी,
आभरण मुकुट ध्वज श्वेत शस्त्र, श्वेताभ दीप्त तन के धारी॥
कर्मों के मारे जीवों पर, तुम दृष्टि बड़ी प्रतिकूल पड़े,
जो भक्त बने जिन चरणों के, उनको सब विध अनुकूल बने।
मैं लाया हूँ तुम योग्य अर्घ, ध्वज वस्त्र पुष्प को ग्रहण करो,
ग्रह शुक्र जनित अपमृत्यु रोग, दुःख शोक विघ्न का हनन करो॥

ॐ पश्चिमोत्तर दिग्मुखेन गगन मण्डल मंडनायमान अनेक कोटाकोटि शत सहस्र परिवार परिवृत्त महासेनाधिपते नित्यं गगनमार्गण स्थान मार्गेण मंदराचल प्रदक्षिणीपरिवृत्त जिनधर्मप्रभावक जैनशासन भक्ति युततत्पर पुरुषवर प्रदायक मूलनक्षत्राधिपते श्री पुष्पदंत स्वामिनः श्री पादपद्माराधक सर्व जीवदयापर प्रथमानुयोगादि चतुरनुयोग पारंगतसर्वभव्यजनाभिष्टफल प्रदायक शक्रसमान विक्रमाक्रांत गोदश्चक्र गोक्षीर हारतर शशिचंद्रकांत शिलावर्ण संपूर्णक्षीरवारिधी मल्लिशांकुंदपुष्प श्वेतवसनं श्वेतपुष्पं श्वेतरत्नाभरणं श्वेत–यज्ञोपवीतं श्वेतवर्णवाहनं आरुढ़ं देव दानव गंधर्व किन्नर किंपुरुष गरुड़ व्यंतर प्रभृति महाभूताइव जिनशासनवत्सल ऋष्यार्यिका श्रावक–श्राविका यष्ट्र याजक राजमंत्री पुरोहित सामंत प्रभृतिरक्षक (अमुकस्य.....) परम पुरुषार्थ भूत प्राणोपकारक सर्वापमृत्युविध्वंसनदक्ष अस्मिन् मंडल मध्ये शुक्र महाग्रह आह्वानयामहे।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेत वर्ण सर्वलक्षण सम्पन्न सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिह्न परिवार सहित हे शुक्र महाग्रह ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ शुक्रग्रहाय स्वाहा। ॐ शुक्र परिजनाय स्वाहा। शुक्रानुचराय स्वाहा। शुक्रमहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

Created by Universal Document Converter

अथ अष्टकम्

ॐ आं क्रौं ह्रीं शुक्रग्रहाय जलं समर्पयामि स्वाहा ॥1॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शुक्रग्रहाय गंधं॥2॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शुक्रग्रहाय अक्षतान्॥3॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शुक्रग्रहाय पुष्पं॥4॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शुक्रग्रहाय नैवेद्यं॥5॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शुक्रग्रहाय दीपं॥6॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शुक्रग्रहाय धूपं॥7॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शुक्रग्रहाय फलं॥8॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शुक्रग्रहाय ध्वजा॥9॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शुक्रग्रहाय वस्त्रं॥10॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शुक्रग्रहाय यज्ञसूत्र सहित आभरणं॥11॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शुक्रग्रहाय दक्षिणा यज्ञभागार्चनं॥12॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शुक्रग्रहाय अर्घ्यम्॥13॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शुक्रग्रहाय शांतिधारा॥14॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शुक्रग्रहाय पुष्पांजलिं॥15॥

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांतिर्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पदंत तीर्थंकराय अजित यक्ष भृकुटि यक्षी सहिताय नमः। ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः फट् शुक्र महाग्रह मम (यजमान का नाम.....) सर्वजीवानां च सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा – **पुष्पदंत का जाप कर, भविजन होय निहाल।**
उनकी जय गुणमाल पढ़, पायें जिन गुणमाल॥

(शंभु छन्द)

जय पुष्पदंत तुम तीर्थवंत, श्री मुक्तिपंथ के अधिकारी।
सुग्रीव पिता के कुलदीपक, जयरामा नंदन मनहारी॥
कांकदी के हो राजकुंवर, सौ धनुष प्रमित ऊँची काया।
तन कुन्दपुष्प सम श्वेतवर्ण, जिसको लख सुरपति शर्माया॥1॥
द्वय लाख पूर्व आयु पाकर, भव्यों का भाग्योद्धार किया।
अक्षय अनंत गुणनिधि पाने, तुमने अंतिम तन धार लिया॥
प्रभु की केवलरविकिरणों ने, अद्भुत आश्चर्य दिखाया था।
सुरपति ने समवशरण विस्तृत, मनभावन भव्य बनाया था॥2॥

Created by Universal Document Converter

जिनके चारों दिश में सुभिक्ष, सौ-सौ योजन तक रहे सदा।
नभ प्रांगण में वे गमन करें, वसुधा उनको पाकर प्रमुदा॥
प्रभु का वात्सल्य वलय जग में, हिंसा का भाव मिटाता है।
प्राणीवध या उपसर्ग नहीं, मैत्री के सुमन खिलाता है॥3॥

जिनवर अक्षयबल के धारी, अतएव ना कवलाहार करें।
सब विद्याओं के वे स्वामी, भवि जीवों का उद्धार करें॥
अनिमेष नयन चहुँदिश आनन, नख-केश कभी नहीं बढ़ते हैं।
छाया विरहित तव रूप देख, भव्यों के भाव उमड़ते हैं॥4॥

इत्यादिक छ्यालिस गुणधारक, श्री पुष्पदंत गुण गाता हूँ।
दुर्दैव, कर्म, विधि, ज्योतिष कृत, सब विघ्नों को विनशाता हूँ॥
ग्रह शुक्र जहाँ प्रतिकूल बना, दुष्कर्म-दुराशय उपजाता।
दुष्कृत्य व्यसन सब पापों में, सत्पुरुषों को भी फंसवाता॥5॥

कफ-रक्त-चर्म या राज रोग, अपमृत्यु संकट आ घेरे।
जो श्रद्धा वश प्रभु नाम जपे, उसके सब दिन प्रभु ने फेरे॥
हे प्रभु ! मैं भी चिर रोगी हूँ, मेरी सब बाधा विनशाओ।
'गुप्तिनंदी' शिव सदन वरे, ऐसा वह सूत्र बता जाओ॥6॥

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारकाय श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्तिभावों से **'नवग्रह शांति विधान'** करे।
नवग्रह रिष्ट विनाशे तत्क्षण निज-पर का उत्थान करे॥
मुनि बन धर्म क्षमादिक पाये निश्चय ही शिवराज करे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षयसुख साम्राज्य वरे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Created by Universal Document Converter

शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा

(गीता छन्द)

मुनिनाथ मुनिसुव्रत प्रभो, पूरण करें मम आश को।
मम भव भ्रमण क्षय पूर्व तक, पूजूँ सदा तुम पाद को ॥
ले कृष्ण पद्म गुलाब नीले, भक्ति आह्वानन करूँ।
शनिग्रह-तिथि-नक्षत्र कृत, सब विघ्न का भंजन करूँ॥

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(काव्य छन्द)

घट में ले शुचि नीर, प्रभु के चरण पखारूँ।
जन्म-जरा-मृत नाश, हित प्रभु रूप निहारूँ॥
मुनिसुव्रत प्रभु नाम, हर क्षण ध्यान करूँगा।
ले पूजन की थाल, शनिग्रह दोष हरूँगा॥

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारकाय श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

भव-भव का संताप, मुझको कष्ट दिलाता।
प्रभुपद चंदन लेप, मन शीतलता पाता॥ मुनिसुव्रत .....

ॐ ह्रीं.....संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

अक्षयनिधि के नाथ, अक्षयपद के दाता।
भर-भर अक्षत पुंज, अक्षयपद हित लाता॥ मुनिसुव्रत .....

ॐ ह्रीं.....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

कामबाण को नाश, ब्रह्मरूप को ध्याऊँ।
जल-भूमिज बहुपुष्प, पदपंकज मैं लाऊँ॥ मुनिसुव्रत .....

ॐ ह्रीं.....कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

Created by Universal Document Converter

क्षुधावेदनी त्रास, नाशन हित मैं आया।
बहु नेवज मिष्ठान्न, अर्पण कर हर्षाया।।
मुनिसुव्रत प्रभु नाम, हर क्षण ध्यान करूँगा।
ले पूजन की थाल, शनिग्रह दोष हरूँगा।।

ॐ ह्रीं.....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

जगमग दीप प्रकाश, तम को दूर भगाता।
भक्त प्रभुपद पाय, ज्ञानरश्मि को पाता।। मुनिसुव्रत .....

ॐ ह्रीं.....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

ध्यान अग्नि से आप, कर्मकलंक नशाया।
कर्मविनाशन हेत, घट में धूप खिराया।। मुनिसुव्रत .....

ॐ ह्रीं.....अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सुफल कामना साथ, फल का थाल सजाया।
इच्छापूरक नाथ, शरण तिहारी आया।। मुनिसुव्रत .....

ॐ ह्रीं.....महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

गुण अनंत के ईश, भव का अंत कराते।
अर्घ माल के संग, भविजन नृत्य रचाते।। मुनिसुव्रत .....

ॐ ह्रीं.....अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा – **नीलमणिमय कुंभ से, करता हूँ त्रय धार।**
नील-कृष्ण बहु पुष्प की, पुष्पांजलि मनहार।।

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री साधु परमेष्ठी का आह्वान

दोहा – **श्रमण धर्म की साधना, करते साधु महान्।**
शनि ग्रह रिष्ट विनाश हित, उनका है आह्वान।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री साधु परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

Created by Universal Document Converter

(तर्ज : मैं तो भूल...)

हम तो आये मुनिवर के द्वार, भक्ति से पूजन करें-2
वसु द्रव्य चढ़ा मनहार, भक्ति से पूजन करें-2
विषयों की आशा को जिसने है छोड़ा-2
ज्ञान मनन में मन को है जोड़ा-हो ऽऽऽ
ऐसे साधु ही-2 मुक्ति के द्वार-2॥ भक्ति से पूजन करें...
दुःख शोक शनि ग्रह मुझको सतायें-2
साधु शरण में पूजा रचायें-हो ऽऽऽ
शनि ग्रह का-2 करें परिहार-2॥ भक्ति से पूजन करें...

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारकेभ्यो श्री सर्वसाधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र :- (1) ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं। (इस मंत्र का जाप्य 9, 27 या 108 बार करें)।

अथ यक्ष पूजा

(काव्य छन्द)

मुनिव्रत के दातार, मुनिसुव्रत जिन स्वामी,
उनके शासन भक्त, वरुण यक्ष अनुगामी।
सम्यग्दृष्टि आप, धर्म प्रभाव बढ़ाओ,
देऊँ पूजन भाग, जिन पूजन में आओ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेतवर्ण हे वरुण यक्ष ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्। ॐ वरुणयक्षाय स्वाहा। ॐ वरुण परिजनाय स्वाहा। वरुणानुचराय स्वाहा। वरुण महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

हे वरुणयक्ष ! स्वगणपरिवारपरिवृत्ताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अथ यक्षिणी पूजा

(गीता छन्द)

मुनिनाथ मुनिसुव्रत प्रभो मुनि संघ के आधार हैं,
जिनधर्म शासक तीर्थकर जिन तीर्थ के दातार हैं।
उनकी सुशासन सेविका बहुरूपिणी जगख्यात है,
यज्ञांश अर्पित है उन्हें जिसको सुदृष्टि प्राप्त है।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे खड्ग खेटफल वरदहस्ते श्री मुनिसुव्रत शासनदेवते श्री बहुरूपिणी देवी अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ बहुरूपिणी देव्यै स्वाहा। ॐ बहुरूपिणीदेवी परिजनाय स्वाहा। ॐ बहुरूपिणीदेवी अनुचराय स्वाहा। बहुरूपिणीदेवी महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

हे बहुरूपिणी देवी ! स्वगणपरिवार परिवृत्ताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अथ शनि ग्रह पूजा

(शंभु छन्द)

शनि ग्रह ज्योतिष जग में प्रसिद्ध कुबेर दिशा के अधिकारी,
निर्ग्रन्थ श्रमण के सेवक तुम जिनधर्म सभा तुमको प्यारी।

Created by Universal Document Converter

तुम कृष्ण पुष्प ध्वज वस्त्र मुकुट यज्ञोपवीत भूषण धारी,
वाहन नीलम मय दीप्तवान सम्यक्त्व रत्न निधी के धारी॥
तुम विकल समय दारिद्र दोष दुर्बुद्धि दुराशय दुर्योगी,
अनुकूल समय धन गुप्त ज्ञान वैराग्य आदि में सहयोगी।
शनि ग्रह तिथि गोचर लग्न दशा कृत सर्व अशुभ दुःख ध्वंस करो,
तुम योग्य अर्घ दें तुष्ट करें मम अपमृत्यु विध्वंस करो॥

ॐ उत्तर दिग्मुखेन गगनमण्डल मंडनायमान अनेक कोटाकोटिशत सहस्र परिवार परिवृत्त महासेनाधिपते नित्यं गगनमार्गण स्थान मार्गेण मंदराचल प्रदक्षिणीपरिवृत्त जिनधर्मप्रभावक जैनशासन भक्तियुत तत्पर पुरुषवर प्रदायक मंदगामिन यमोपम श्रवणरूप अश्विनी नक्षत्राधिपते श्री मुनिसुव्रत स्वामिनः श्रीपाद पद्माराधक सर्वभव्यजन प्रातीतार्थाभीष्ट फलप्रदायक शनैश्चर विथच्चरं आयुष्यकरं कृष्णवाससम् कृष्णपुष्पं कृष्णरत्नाभरणं कृष्णयज्ञोपवीतं कृष्णवर्ण वाहनं आरुढ़ं देव दानव किन्नर किंपुरुष गरुड़ गंधर्व व्यंतर प्रभृति महाभूताइव जिनशासनवत्सल ऋष्यार्यिका श्रावक–श्राविका यष्ट्र याजक राजमंत्री पुरोहित सामंत प्रभृतीरक्षक (अमुकस्य...) परम पुरुषार्थ भूत प्राणोपकारक सर्वापमृत्युविध्वंसनदक्ष अस्मिन् मंडल मध्ये शनैश्चर महाग्रह आह्वानयामहे।

ॐ आं क्रौं ह्रीं नीलवर्ण सर्वलक्षण सम्पन्न सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिह्न परिवार सहित हे शनि महाग्रह ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ शनिग्रहाय स्वाहा। ॐ शनिग्रह परिजनाय स्वाहा। शनिग्रहानुचराय स्वाहा। शनिग्रह महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

अथ अष्टकम्

ॐ आं क्रौं ह्रीं शनिग्रहाय जलं समर्पयामि स्वाहा॥1॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शनिग्रहाय गंधं॥2॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शनिग्रहाय अक्षतान्॥3॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शनिग्रहाय पुष्पं॥4॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शनिग्रहाय नैवेद्यं॥5॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शनिग्रहाय दीपं॥6॥ ॐ आं क्रौं

Created by Universal Document Converter

ह्रीं शनिग्रहाय धूपं ॥7॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शनिग्रहाय फलं ॥8॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शनिग्रहाय ध्वजा ॥9॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शनिग्रहाय वस्त्रं ॥10॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शनिग्रहाय आभरणं ॥11॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शनिग्रहाय दक्षिणा यज्ञभागार्चनं ॥12॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शनिग्रहाय अर्घ्यम् ॥13॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शनिग्रहाय शांतिधारा ॥14॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं शनिग्रहाय पुष्पांजलिं ॥15॥

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांतिर्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं मुनिसुव्रत तीर्थंकराय वरुण यक्ष बहुरूपिणी यक्षी सहिताय नमः। ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः फट् शनैश्चर महाग्रह मम (यजमान का नाम.....) सर्वजीवानां च सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

सोरठा : **मुनियों के मुनिनाथ, मुनिसुव्रत व्रत के धनी।**
भक्त करें सब साथ, जयमाला जयकार से॥

दोहा

गुण मणियों की माल से, गाऊँ मैं जयमाल।
मुनिसुव्रत जिननाथ जी, करते मालामाल॥1॥
यदुवंश शोभित हुआ, राजगृही का आज।
पद्मा माँ के उर बसे, मुनिसुव्रत जिनराज॥2॥
रत्नवृष्टियाँ हो रही, देव करें जयकार।
धन–वैभव से हो रहा, सबको हर्ष अपार॥3॥
जन्में त्रिभुवन नाथ जब, प्रमुदित सुर–नर–इन्द्र।
सुरपति का आसन हिला, करें नमन सुरवृंद॥4॥
हर्षित हो शचि आ रही, प्रभुदर्शन के काज।
प्रभुमुद्रा को लख करे, सम्यग्दर्शन प्राप्त॥5॥

Created by Universal Document Converter

तप करने प्रभुजी चले, लौकांतिक सुर आय।
भाव आकिंचन धार कर, वीतराग पद पाय॥6॥
ज्ञान दर्शनावरण वा, मोहनीय रिपु कर्म।
अन्तराय चउ घातिया, गुण को नाशे कर्म॥7॥
गुण अनंत को धारते, घातिकर्म को नाश।
समोशरण प्रभु राजते, भविजन बैठे पास॥8॥
द्वादश कोठे मध्य में, गंधकुटी मनहार।
बैठे चउ अंगुल अधर, प्रभु जग तारणहार॥9॥
दिव्यध्वनि सुन कर रहे, भविजन पाप विनाश।
प्रभु साक्षी व्रत धारकर, पाने मुक्तिनिवास॥10॥
गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान और, कल्याणक निर्वाण।
पंच परावर्तन हरें, प्रभुपद में हम आन॥11॥
शनिग्रह बाधा से जनित, सब अरिष्ट मिट जाय।
प्रभु पद में वंदन-नमन, कर्म कलंक मिटाय॥12॥
मोक्षमार्ग के राज को, वरें श्रमण निर्ग्रन्थ।
'गुप्ति' की श्रम साधना, देती मुक्तिपंथ॥13॥

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्तिभावों से **'नवग्रह शांति विधान'** करे।
नवग्रह रिष्ट विनाशे तत्क्षण निजपर का उत्थान करे॥
मुनि बन धर्म क्षमादिक पाये निश्चय ही शिवराज करे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षयसुख साम्राज्य वरे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Created by Universal Document Converter

राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ पूजा

(गीता छन्द)

नरनाथ गणधर इन्द्रशत, नागेन्द्र नित नमते जहाँ।
नेमीश बाल यतीश की, पदछाँव में रहते सदा ॥
हम कृष्ण पद्म गुलाब ले, आह्वान अभिनंदन करें।
नक्षत्र-राहू-ग्रह-दशादिक, विघ्नकृत क्रंदन हरें॥

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्टनिवारक श्री नेमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छन्द)

ले नीर कृष्ण कुंभ में त्रयधार करायें।
त्रय रोग नाशें रत्न तीन आपसे पायें॥
श्री नेमीनाथ की करेंगे श्रेष्ठ अर्चना।
जिन भक्ति से नशे अनादि कर्म वंचना॥

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्टनिवारकाय श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

चन्दन कपूर मिश्र आप पाद में धरें।
जग श्रेष्ठ आप भक्ति हि भवताप को हरे॥ श्री नेमीनाथ की ...

ॐ ह्रीं..... संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

मुक्ता व अक्षतों के पुंज श्रेष्ठ चढ़ायें।
अक्षय अखंड लब्धि हेतु भक्ति रचायें॥ श्री नेमीनाथ की ...

ॐ ह्रीं..... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

राजुल को छोड़ नेमि काम शत्रु नशायें।
इस हेतु कृष्ण पद्म पुष्प चर्ण चढ़ायें ॥ श्री नेमीनाथ की ...

ॐ ह्रीं..... कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

Created by Universal Document Converter

छप्पन प्रकार श्रेष्ठ मिष्ठ नेवजों को ले।
प्रभु को चढ़ा क्षुधादि सर्व रोग को हरें।।
श्री नेमीनाथ की करेंगे श्रेष्ठ अर्चना।
जिन भक्ति से नशे अनादि कर्म वंचना।।

ॐ ह्रीं..... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

हम भक्ति-नृत्य साथ आज आरती करें।
मोहांध नाश पूर्ण ज्ञान भारती वरें।। श्री नेमीनाथ की ...

ॐ ह्रीं..... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

लाये हैं धूप सर्वरोग हारी सौख्यदा।
उनको चढ़ायें जिनने आठों कर्म को हना।। श्री नेमीनाथ की ...

ॐ ह्रीं..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

फलगुच्छ षड्ऋतु के हमने आज सजायें।
शिवफल की चाह में चढ़ा शुभ नृत्य स्चायें।। श्री नेमीनाथ की ...

ॐ ह्रीं..... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

जल आदि अष्टद्रव्य लेय अर्घ सजायें।
अक्षय अनर्घ आत्म सिद्धी लाभ कमायें।। श्री नेमीनाथ की ...

ॐ ह्रीं..... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

दोहा – **कोहिनूर नीलम जड़ित, घट से त्रय जलधार।**
कृष्ण कमल पुष्पाद्य से, सुमनांजलि सुखकार।।

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री साधु परमेष्ठी का आह्वान

दोहा – **मंगलमय जिनवेष धर, मुनि निर्ग्रन्थ महान्।**
सर्वोत्तम सिद्धार्थ हित, उनका है आह्वान।।

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्ट निवारक श्री साधु परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

Created by Universal Document Converter

(शंभु छन्द)

निस्पृह वैरागी महापुरुष, निर्ग्रन्थ रूप को धरते हैं।
सब ऋद्धि-सिद्धि जिनको पूजे, नवग्रह नित वंदन करते हैं॥
निर्वाण धाम जिनको चाहे, उनको हम अर्घ चढ़ाते हैं।
राहू ग्रह रिष्ट मिटाने को, जिन भक्ति जाप कराते हैं॥

ॐ ह्रीं राहूग्रहारिष्ट निवारकेभ्यो श्री सर्वसाधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र :- (1) ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं। (इस मंत्र का जाप्य 9, 27 या 108 बार करें)।

अथ यक्ष पूजा

(कुसुमलता छन्द)

नेमिनाथ जिनशासन के जो विघ्नों का परिहार करें,
धार्मिक जन का संरक्षण कर दुष्टों का उद्धार करें।
सम्यक्त्वी सर्वाण्ह यक्ष श्री नेमिनाथ के पद पूजक,
यज्ञभाग ले तुम्हें बुलाऊँ तुम हो सबके हितचिंतक॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे सर्वाण्ह यक्ष ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ सर्वाण्हयक्षाय स्वाहा। ॐ सर्वाण्हयक्षाय परिजनाय स्वाहा। सर्वाण्हयक्षानुचराय स्वाहा। सर्वाण्हयक्ष महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

हे सर्वाण्हयक्ष ! स्वगणपरिवारपरिवृत्ताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

Created by Universal Document Converter

अथ यक्षिणी पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

नेमिनाथ जिनधर्म प्रवर्त्तक गणिनी राजुल माता है,
शासन यक्षी कुष्मांडिनी माँ सच्ची विघ्न विघाता है।
धर्मप्रेम प्रवचन वात्सल की तुमने डोर संभाली है,
जिन पूजन में तुम्हें बुलायें भेट द्रव्य की थाली ले॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं नीलवर्णे द्विभुजे सहकार फलधारिणी सिंहवाहने श्री नेमिनाथस्य शासनदेवते श्री कुष्माण्डिनीदेवी अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ कुष्माण्डिनी देव्यै स्वाहा। ॐ कुष्माण्डिनीदेवी परिजनाय स्वाहा। कुष्माण्डिनी अनुचराय स्वाहा। कुष्माण्डिनी महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

हे कुष्माण्डिनीदेवी ! स्वगणपरिवार परिवृत्ताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अथ राहू ग्रह पूजा

(शंभु छन्द)

राहू ग्रह ज्योतिष देव ख्यात श्री नेमिनाथ की भक्ति करें,
निर्ग्रंथ श्रमण सेवक के वे निश्चय से संकट कष्ट हरें।
तुम कृष्ण वर्ण ध्वज पुष्प मुकुट भूषण वाहन आयुध धारी,
यज्ञोपवीत भी कृष्ण वर्ण, औ कृष्ण वस्त्र है मनहारी।
तुम सरल रूप में साहस सुख वैराग्य भाग्य में सहकारी,
प्रतिकूल रहे तब दुस्साहस दुष्कर्म दुराशय दातारी।

Created by Universal Document Converter

राहू ग्रह गोचर लग्न दशा कृत सर्व अरिष्ट विनाश करो, दुर्योग सकल दुःख अपमृत्यु वा कालसर्प का नाश करो।।

ॐ पूर्वोत्तरदिग्मुखेन गगनमण्डल मंडनायमान अनेक कोटाकोटिशत सहस्र परिवार परिवृत्त महासेनाधिपते नित्यगगन मार्गण स्थानमार्गेण मंदराचल प्रदक्षिणीपरिवृत्त जिनधर्मप्रभावक जैनशासन भक्तियुत तत्पर पुरुषवरप्रदायक चित्रानक्षत्राधिपते श्री नेमिनाथ स्वामिनः श्रीपादपद्माराधक सर्व जीवदयापर कालदृष्टि कालसमान सर्वभव्यजनप्रातितार्थ अभीष्टफलप्रदायक सर्वापमृत्यु विध्वंसन दक्ष राहू महाग्रहं महामहो प्रदोषक श्री नेमिनाथाराधक शीघ्रगामी कालोरग महासर्पाकार कृष्णवाससं कृष्णरत्नाभरणं कृष्णपुष्पं कृष्णयज्ञोपवीतं कृष्णवर्णवाहनं आरुढ़ं देव दानव किन्नर किंपुरुष गरुड़ गंधर्व व्यंतर प्रभृति महाभूताइव जिनशासनवत्सल ऋष्यार्यिका श्रावक–श्राविका यष्ट्र याजक राजमंत्री पुरोहित सामंत प्रभृतीरक्षक (अमुकस्य...) परम पुरुषार्थ भूत प्राणोपकारक सर्वोपसर्ग विध्वंसनदक्ष अस्मिन् मंडल मध्ये राहू महाग्रह आह्वानयामहे।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्णवर्ण सर्वलक्षण सम्पन्न सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिह्न परिवार सहित हे राहू महाग्रह ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ राहूमहाग्रहाय स्वाहा। ॐ राहूग्रहाय परिजनाय स्वाहा। राहूग्रहायानुचराय स्वाहा। राहूग्रहाय महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

अथ अष्टकम्

ॐ आं क्रौं ह्रीं राहूग्रहाय जलं समर्पयामि स्वाहा।।1।। ॐ आं क्रौं ह्रीं राहूग्रहाय गंधं।।2।। ॐ आं क्रौं ह्रीं राहूग्रहाय अक्षतान्।।3।। ॐ आं क्रौं ह्रीं राहूग्रहाय पुष्पं।।4।। ॐ आं क्रौं ह्रीं राहूग्रहाय नैवेद्यं।।5।। ॐ आं क्रौं ह्रीं राहूग्रहाय दीपं।।6।। ॐ आं क्रौं ह्रीं राहूग्रहाय धूपं।।7।। ॐ आं क्रौं ह्रीं राहूग्रहाय फलं।।8।। ॐ आं क्रौं ह्रीं राहूग्रहाय ध्वजा ।।9।।ॐ आं क्रौं ह्रीं राहूग्रहाय वस्त्रं।।10।। ॐ आं क्रौं ह्रीं राहूग्रहाय आभरणं।।11।। ॐ आं क्रौं ह्रीं राहूग्रहाय दक्षिणा यज्ञभागार्चनं।।12।। ॐ आं क्रौं ह्रीं राहूग्रहाय अर्घ्यम्।।13।। ॐ आं क्रौं ह्रीं राहूग्रहाय शांतिधारा।।14।। ॐ आं क्रौं ह्रीं राहूग्रहाय पुष्पांजलिं।।15।।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

Created by Universal Document Converter

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं नेमिनाथ तीर्थंकराय सर्वाण्ह यक्ष कुष्माण्डिनी यक्षी सहिताय नमः। ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः फट् राहूमहाग्रह मम (यजमान का नाम....) सर्वजीवानां च सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा : **रत्नत्रय रथ पर चले, श्री नेमी जिनराज।**
राजुल तज तुमने वरी, मुक्तिरमा शिवराज॥

(शंभु छन्द)

जय नेमि जिनेश्वर जगत्प्रभो, तुम धर्म अहिंसा अवतारी।
जय मातशिवा के नंदन तुम, नृप समुद्रजय सुत मनहारी॥
तन इन्द्रनील सम श्यामसुभग, दशधनुष प्रमाण सुयश दाता।
जिसमें लक्षण अठ इकहजार, सर्वोच्च श्रेष्ठ मंगल दाता॥1॥

त्रयखंडपति श्री वासुदेव, बलभद्र अनुज तुम कहलाये।
यदुवंश शिरोमणि जगत्पिता, राजुलमति को ब्याहन आये॥
पशु क्रन्दन सुन वैराग्य जगा, जगबंधन से मन घबराया।
निर्ग्रंथ बनें छप्पन दिन में, अर्हत् तीर्थंकर पद पाया॥2॥

धनपति आज्ञा ले सुरपति की, शुभ समोशरण निर्माण करें।
वसु मंगलद्रव्य लिए सुरगण, नेमीप्रभु का गुणगान करें॥
झालर मुक्ता मणि रत्न खचित, त्रय छत्र लगे अतिमनहारे।
प्रभु का शासन त्रय लोकों में, त्रय काल रहे यह स्वीकारें॥3॥

सुरयक्ष चंवर चौसठ लेकर, प्रभु के चहुँदिश में लहराये।
रत्नत्रय दायक नृत्य रचा, जयकारों से नभ गुंजाये॥
घंटों का नाद मधुर मंगल, भव्यों को नित्य बुलाता है।
जिन दिव्यध्वनि का अधिकारी, घंटे का दान बनाता है॥4॥

Created by Universal Document Converter

मणि कंचन रत्नों की झारी, ले आयीं सुरकन्या सारी।
प्रभु सन्मुख भक्ति नृत्य करें, सम्यक्त्व वरें विस्मयकारी।।
शुभवर्ण-चिह्नयुत धर्मध्वजा, प्रभु के चहुँदिश में फहराये।
निर्मल यशधर की कीर्तिध्वजा, भव्यात्म जगत को हर्षाये।।5।।

जिनवर को पंखा भेंट करें, सौधर्म-शचि मंगल गायें।
सुरगण भी दर्पण अर्पण कर, निज काम दर्प को विनशायें।।
स्वस्तिक मंगलमय मंगलकर, मन के सब पाप गलाता है।
सुरपति वसु मंगलद्रव्य चढ़ा, चहुँगति का भ्रमण मिटाता है।।6।।

वसु मंगलद्रव्यों-प्रातिहार्य, पूजित श्री नेमी जिनेश्वर हैं।
राहुग्रहकृत सब कष्ट विघ्न, हरते जिनवर करुणाधर हैं।।
दुर्व्यसनी-तस्कर-खल-वँचक, राहू प्रतिकूल बनाता है।
अपमृत्यु संकट कालसर्प, आदिक दुर्योग बनाता है।।7।।

राहू आदिक नवग्रह पीड़ा, प्रभु पूजा ही विनशाती है।
निर्ग्रन्थ श्रमण की सेवा भी, ग्रह की पीड़ा विनशाती है।।
हे जिनवर ! तव पद पूजा से, मैं भी सब विघ्न विनाश करूँ।
मैं 'गुप्तिनंदी' तव पथ अनुचर, शिवराजसदन में वास करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं राहु ग्रहारिष्ट निवारकाय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्तिभावों से **'नवग्रह शांति विधान'** करे।
नवग्रह रिष्ट विनाशे तत्क्षण निज-पर का उत्थान करे।।
मुनि बन धर्म क्षमादिक पाये निश्चय ही शिवराज करे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षयसुख साम्राज्य वरे।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Created by Universal Document Converter

केतुग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ पूजा

(गीता छन्द)

श्री कर्मजेता मोक्षनेता, भव्यत्रेता आप हो।
श्री पार्श्वनाथ अनाथ के, हरते सकल संताप हो॥
बहु कृष्ण पद्म गुलाब ले, मैं भक्ति आह्वानन करूँ।
ग्रह केतु-तिथि-नक्षत्र कृत, सब विघ्न का भंजन करूँ॥

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

त्रय रोग नाशक जिन चरण में नीर की धारा करूँ।
त्रय रोग का मम नाश हो त्रय रत्न निधि धारण करूँ॥
आनंदरस के धाम श्री पारस प्रभु की अर्चना।
समता सुरस देती हमें हरती हमारी वंचना॥

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारकाय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

भवताप के संताप से घबरा चरण आया प्रभो।
लेपन करूँ चंदन प्रभु संताप मेटो हे विभो !॥ आनंद रस...

ॐ ह्रीं ..... संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

मोती समान अखण्ड अक्षत मुट्ठी भर-भर ला रहा।
उज्जवल अखंडित गुण मिले यह भावना मैं भा रहा॥ आनंद रस...

ॐ ह्रीं ..... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

श्री बालयति तीर्थेश को बहुभांति पुष्प चढ़ा रहा।
मैं कामबाण विनाश हेतु जिन चरण को ध्या रहा॥ आनंद रस...

ॐ ह्रीं ..... कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

गुजिया कचौड़ी रसभरी षट्रसमयी व्यजंन लिये।
संगीत भक्ति नृत्य संग जिननाथ को अर्पण किये॥ आनंद रस...

ॐ ह्रीं ..... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

Created by Universal Document Converter

कंचन-रजत-घृत-रत्न की दीपावली से आरती।
भक्ति स्चा मिथ्यात्व हर पाऊँ सकल श्रुत भारती॥
आनंदरस के धाम श्री पारस प्रभु की अर्चना।
समता सुरस देती हमें हरती हमारी वंचना॥

ॐ ह्रीं ..... मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

कर्मठ कमठ सम कर्म काष्ठ जला दिये शुचि ध्यान से।
इस हेतु मैं भी धूप ले अर्चा करूँ सद्ज्ञान से॥ आनंद रस...

ॐ ह्रीं ..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

तुम मोक्षफल से फल गये मेरा सफल जीवन करो।
मीठे सरस फल ले खड़ा भगवन मेरी झोली भरो॥ आनंद रस...

ॐ ह्रीं ..... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

पारस प्रभु के द्वार पर वसुद्रव्य लेकर आ रहा।
संसार दुःख का क्षय मेरा हो भावना यह भा रहा॥ आनंद रस...

ॐ ह्रीं ..... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा – **कोहिनूर युत कुंभ ले, करता शांतिधार।**
पुष्प अंजलि में लिए, अर्पण है मनहार॥

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

केतुग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ भगवान का अर्घ

(काव्य छन्द)

मल्लिनाथ भगवान, मोह मल्ल को नाशे।
समोशरण के नाथ, केवलज्ञान प्रकाशे॥
बालयति तीर्थेश, केतु अरिष्ट मिटाये।
उनको पूजन थाल, हम सब भक्त चढ़ाये॥

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्ट निवारकाय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री साधु परमेष्ठी का आह्वान

दोहा – **केतु अरिष्ट विनाशते, श्रमण मुनि निर्ग्रन्थ।**
उनका आह्वानन करें, करें कर्म का अंत।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्ट निवारक श्री सर्वसाधु परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखि छन्द)

अठबीस मूलगुण धारी, जग जीवों के आधारी।
मुनि समता तप के धारी, हम आयें शरण तुम्हारी।।
केतु ग्रह की दुष्क्रीड़ा, तुम हरते तत्कृत पीड़ा।
हम अर्घ सजाकर लाये, प्रभु हरो सकल ग्रह पीड़ा।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्ट निवारकेभ्यो श्री सर्वसाधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र :- (1) ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं। (इस मंत्र का जाप्य 9, 27 या 108 बार करें)।

अथ यक्ष पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

क्रूर कमठ ने पार्श्व प्रभो पर जब भीषण उपसर्ग किया,
पार्श्व भक्त धरणेन्द्र यक्ष ने आकर निज फण तान दिया।
पार्श्व रूप को देख कमठ शठ भागा अति भयभीत हुआ,
इस कारण हम अर्घ चढ़ाते तुम प्रति यह मन मीत हुआ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र महायक्ष ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्। ॐ धरणेन्द्राय स्वाहा। ॐ धरणेन्द्र परिजनाय स्वाहा। धरणेन्द्रानुचराय स्वाहा। धरणेन्द्र महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)। हे धरणेन्द्रयक्ष ! स्वगणपरिवारपरिवृताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे-यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अथ यक्षिणी पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

पार्श्वप्रभु को निज मस्तक पर धारे पद्मावती माता,
पार्श्वभक्त की तुम सहयोगी कष्ट मिटाती जग त्राता।
जिन पूजा में यज्ञभाग दे तुम्हें बुलाये आ जाओ,
पार्श्व प्रभो की यशोपताका फिर जग में फहरा जाओ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं विद्रुमवर्णे चतुर्भुजे पाशांकुशाभय फलहस्ते श्री पार्श्वनाथस्य शासनदेवते श्री पद्मावतीदेवी अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ पद्मावतीदेव्यै स्वाहा। ॐ पद्मावती परिजनाय स्वाहा। पद्मावती अनुचराय स्वाहा। पद्मावती महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

हे पद्मावतीदेवी ! स्वगणपरिवार परिवृताय तुभ्यमिदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे–यजामहे प्रतिगृह्यतां–प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अथ केतु ग्रह पूजा

(शंभु छन्द)

जिनभक्ति परायण दीप्यमान, श्री पार्श्वप्रभु के अनुचर हो,
निर्ग्रन्थ श्रमण के पद सेवक, भव्यात्म जनों को सुखकर हो।
तुम कृष्ण वर्ण ध्वज वस्त्र पुष्प, भूषण वाहन आयुध धारी,
यज्ञोपवीत व रत्नमुकुट, कृष्णाभ दिव्य अति मनहारी।

Created by Universal Document Converter

अनुकूल समय साहस यश धन, वैभव सुख कीर्ति बढ़ाते हो,
प्रतिकूल समय में कालसर्प, आदिक दुर्योग बनाते हो।
केतुग्रह जनित सकल संकट, मम सर्व विघ्न को ध्वंस करो,
तुम योग्य अर्घ मैं भेंट करूँ, मम अपमृत्यु विध्वंस करो॥

ॐ दक्षिणदिग्मुखेन गगनमण्डल मंडनायमान अनेक कोटाकोटिशत सहस्र परिवार परिवृत्त महासेनाधिपते नित्यगगन मार्गण स्थानमार्गेण मंदराचल प्रदक्षिणीपरिवृत्त जिनधर्मप्रभावक जैनशासन भक्तियुत तत्पर पुरुषवरप्रदायक विशाखानक्षत्राधिपते श्री पार्श्वनाथ स्वामिनः श्रीपादपद्माराधक सर्व जीवदयापर सर्वभव्यजनप्रातितार्थ अभीष्टफलप्रदायक केतुधर्मायतानानध केतुआराधक सुख हेतु काल समान सर्वदुरित राजकृतांत लोकविघ्नविनाशन दक्ष धुम्रवाससं धुम्रपुष्पं, धुम्रवर्णं आभरणम्, धुम्रयज्ञोपवीतं, धुम्रवाहनम् आरुढ़ं देव दानव गंधर्व किन्नर किंपुरुष गरुड़ गंधर्व व्यंतर प्रभृति महाभूताइव जिनशासनवत्सल ऋष्यार्यिका श्रावक–श्राविका यष्ट्र याजक राजमंत्री पुरोहित सामंत प्रभृतीरक्षक (अमुकस्य...) परम पुरुषार्थ भूत प्राणोपकारक सर्वापमृत्युविध्वंसनदक्ष अस्मिन् मंडल मध्ये केतुमहाग्रह आह्वानयामहे।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्णवर्ण सर्वलक्षण सम्पन्न सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिह्न परिवार सहित हे केतु महाग्रह ! अत्रागच्छागच्छेत्याह्वाननम्। स्थापनम्। सन्निधिकरणम्।

ॐ केतुग्रहाय स्वाहा। ॐ केतुग्रहाय परिजनाय स्वाहा। केतुग्रहायानुचराय स्वाहा। केतुग्रहाय महत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वाहा। स्वधा स्वाहा।(14)।

अथ अष्टकम्

ॐ आं क्रौं ह्रीं केतुग्रहाय जलं समर्पयामि स्वाहा॥1॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं केतुग्रहाय गंधं॥2॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं केतुग्रहाय अक्षतान्॥3॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं केतुग्रहाय पुष्पं॥4॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं केतुग्रहाय नैवेद्यं॥5॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं केतुग्रहाय दीपं॥6॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं केतुग्रहाय धूपं॥7॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं केतुग्रहाय फलं॥8॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं केतुग्रहाय ध्वजा ॐ आं क्रौं ह्रीं केतुग्रहाय वस्त्रं॥9॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं केतुग्रहाय यज्ञ सूत्रसहित आभरणं॥10॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं केतुग्रहाय दक्षिणा यज्ञभागार्चनं॥11॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं केतुग्रहाय अर्घ्यम्॥12॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं केतुग्रहाय शांतिधारा॥13॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं केतुग्रहाय पुष्पांजलिं॥14॥

Created by Universal Document Converter

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शांति र्भवेत्सदा।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं पार्श्वनाथ तीर्थंकराय धरणेन्द्र यक्ष पद्मावती यक्षी सहिताय नमः। ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः फट् केतुमहाग्रह मम (यजमान का नाम.....) सर्वजीवानां च सर्वशांतिं कुरु–कुरु स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा – **पार्श्वप्रभु का नाम है, सुख शांति का धाम।**
उनकी जयमाला पढ़ूँ, ध्याऊँ आठों याम।।

चौपाई

जय–जय पार्श्व प्रभु मनहारी, जयमाला जिनकी सुखकारी।
जयमाला प्रभु की हम गायें, जिनगुण की मणिमाला पायें।।1।।

मात–पिता की महिमा गायें, प्रभुजी जिनके पुत्र कहाये।
काशी नगरी स्वर्ग समाना, दृश्य निराला सबने जाना।।2।।

जन्मत दश अतिशय को धारा, गूंजे नभ में जय–जयकारा।
सुरपति–शचि ऐरावत लायें, प्रभु को मेरू पर ले जायें ।।3।।

क्षीरोदधि से न्हवन कराये, श्रमणों ने शुचिभाव बनाये।
पारस नाम जगत हितकारी, सुरपति घोष करें अघहारी।।4।।

बालक की क्रीड़ायें न्यारी, संकटमोचन हित उपकारी।
बचपन बीता यौवन आया, एक दिवस मन को यह भाया।।5।।

संग मित्रों के सैर करूँगा, मन की इच्छा पूर्ण करूँगा।
वन में इक तापस को पाया, जिसने पंचाग्नि तप ध्याया ।।6।।

अवधिज्ञान से प्रभु ने जाना, जिसका सम्यक् किया निदाना।
प्रभु ने तापस को समझाया, खोटे तप को क्यों अपनाया।।7।।

Created by Universal Document Converter

प्रभु की बात उसे ना भायी, मन में उसके दया न आयी।
फिर भी प्रभु जी खेद न करते, नाग युगल पे करुणा करते॥8॥

महामंत्र नवकार सुनाया, जलते नाग युगल ने पाया।
महामंत्र को मन में धारे, मरकर वे पाताल सिधारे॥9॥

पद्मावती-धरणेन्द्र कहाये, प्रभु का नाम सुमर हर्षाये।
पारस प्रभु ने दीक्षा धारी, वीतराग मुद्रा मनहारी॥10॥

कर्म नशाने तप को धारा, जग जीवों का यही सहारा।
मन-वच-तन को वश करते थे, चिंतन कर्मों का करते थे॥11॥

पूर्व जन्म का वैरी आया, बदला लेना मन में भाया।
ओले-शोले-पत्थर-पानी, दैत्य कमठ करता मनमानी॥12॥

सात दिवस तक दैत्य सताता, किंचित् प्रभु को हिला न पाता।
परम ध्यान प्रभुवर ने ध्याया, सुर धरणेंद्र शची संग आया॥13॥

पद्मावती ने शीश बिठाया, अहिपति ने फणछत्र लगाया।
पारस प्रभु उपसर्ग विजेता, कर्म विजेता सबके त्रेता॥14॥

श्री अरिहंत सिद्ध गुण गायें, अपने सारे पाप नशायें।
जब केतु ग्रह बाधा होवे, गुरु भक्ति में मन रत होवे॥15॥

जयमाला की माला लायें, पारस के रस में रम जायें।
'गुप्तिनंदी' गुप्ति को धारें, समता धर शिवराज सम्हारे॥16॥

ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारकाय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

जो भविजन भक्तिभावों से **'नवग्रह शांति विधान'** करे।
नवग्रह रिष्ट विनाशे तत्क्षण निजपर का उत्थान करे॥
मुनि बन धर्म क्षमादिक पायें निश्चय ही शिवराज करे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशाकर अक्षयसुख साम्राज्य वरे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Created by Universal Document Converter

वृहद् जयमाला

(काव्य छन्द)

परम पूज्य भगवंत, पाँचों पद को ध्याऊँ।
चौबीसों जिनराज, उनके गुण मैं गाऊँ॥
जयमाला से आज, नवग्रह बाधा टालूँ।
पूजन कीर्त्तन जाप, करके पुण्य कमालूँ॥

(शंभू छंद)

जयमाला पंच परम पद की चौबीसों जिनवर की गाऊँ।
गणधर गुरु की भक्ति करने पुष्पों की माला मैं लाऊँ॥
जिननाथ आप हैं वीतराग सर्वज्ञ देव हित उपदेशी।
पूजन वंदन करने वाले बनते शिवराही के वेषी॥1॥

जग के सब राग भगाकर जिन अध्यातम फाग रचाते हैं।
अष्टादश दोष मिटाकर वे श्री वीतराग कहलाते हैं॥
चउ घाति कर्म का क्षय कर वे नव क्षायिक लब्धि को पाते।
सब ज्ञेयों को युगपत जानें सर्वज्ञ हितंकर कहलाते॥2॥

अरिहंत देव हित उपदेशक हितकर सन्मार्ग दिखाते हैं।
इनका उपदेश ग्रहण करके प्राणी जिन सम बन जाते हैं॥
ये दिव्यध्वनि ओंकारमयी संशय विमोह विभ्रम नाशे।
स्याद्वादमयी गुण अनेकांत सम्यक्त्व ज्ञान रवि समभासे॥3॥

हम भी इस वाणी को पाकर जीवन को सफल बनायेंगे।
सम्पूर्ण गुणों को पाने हित साहस से कदम बढ़ायेंगे॥
श्री धर्म सभा अतिशय सुन्दर तीर्थंकर प्रभु मन मोह रहे।
जिन सेवा में शासन रक्षक सब देव देवियाँ शोभ रहे॥4॥

Created by Universal Document Converter

अतिश्रेष्ठ अमल अद्भुत अनुपम अकलंक अटल तुम नाम रहे।
वे सार्थक सफल प्रबल शाश्वत, संज्ञी के सर्व विषाद हरें॥
जगज्येष्ठ जगत्पति जगत्पिता जगबंधु जगत्त्रय जगत्राता।
सिद्धार्थ सिद्ध श्री सिद्ध साध्य सिद्धांत श्रेय सिद्धी दाता॥5॥

विश्वात्म विश्वविद् विश्वरूप विश्वेश विश्व विद्याधारी।
धर्मात्म धर्मध्वज धर्मधुरा धर्मेश धर्म धन आधारी॥
तुम दान श्रेष्ठ दृग्ज्ञान श्रेष्ठ सुख वीर्य श्रेष्ठ नव लब्धिपती।
तुम रूप श्रेष्ठ पुरुषार्थ श्रेष्ठ परमात्म श्रेष्ठ तुम मुक्तिपती॥6॥

प्रभु चरणों की रज पाने मैं जिन दर्शन करके सुख वरता।
वंदन पूजन कीर्त्तन अर्चन भगवंत प्रभु का नित करता॥
दुःखों और कर्मों का क्षय हो बोधि समाधि प्रभु चरणों में।
श्री सिद्ध लोक जिनगुण वैभव नव लब्धि लाभ तुम चरणों में॥7॥

नवग्रह की बाधा हरने को वसु द्रव्य मनोज्ञ चढ़ाता हूँ।
चौबीसों जिन परमेष्ठी वा गणधर को शीश झुकाता हूँ॥
नवग्रह अरिष्ट नशने हेतु मंगल जयमाला गाता हूँ।
मैं 'गुप्तिनंदी' शिवराज वरूँ यह आश हृदय में लाता हूँ॥8॥

ॐ ह्रीं नवग्रह अरिष्ट निवारकेभ्यः श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो श्री पंच परमेष्ठिभ्यो, सर्व गणधर चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

जो भविजन भक्ति भावों से 'नवग्रह शांति विधान' करे।
नवग्रह रिष्ट विनाशे तत्क्षण निज पर का उत्थान करे॥
मुनि बन धर्म क्षमादिक पाये निश्चय ही शिवराज करे।
त्रय 'गुप्ति' से कर्म नशा कर अक्षय सुख साम्राज्य वरे॥

॥ इत्याशीर्वाद॥

Created by Universal Document Converter

प्रशस्ति

(शम्भू छन्द)

वृषभांत वीर चौबीसों जिन, उनका जय-जय गुणगान करूँ।
श्री वृषभसेन से गौतम तक, गणधर प्रभू का आह्वान करूँ॥
जिनवर भाषित गणधर गुम्फित, माँ जिनवाणी का ध्यान करूँ।
नव कोटि न्यून त्रय मुनियों को, वंदन कर निज उत्थान करूँ॥1॥
अनुबद्ध केवली श्रुत केवली, आगम कर्त्ता गुरु को ध्याऊँ।
श्री भद्रबाहु श्रुतकेवली की, शरणा पाकर मन हर्षाऊँ॥
नवग्रह शांति स्तोत्र सुखद, श्री भद्रबाहु कृत जग जाने।
भक्ति श्रद्धा से पढ़े सुने, वह भव्य सकल ग्रह दुःख हाने॥2॥
मम नवग्रह शांति विधान सृजन, उस रचना पर आधारित है।
सब दुःख नाशक जग सुखदायक, जिनभक्ति गुणों से पूरित है॥
संवत् द्वय शत दश साठ श्रेष्ठ[1], श्रावण शुक्ला तेरस प्यारी[2]।
रविवार रत्न अंकुर अमृत, द्वय योग बने मंगलकारी॥3॥
मम चित्त संघ के अधिनायक, श्री शांतिनाथ की छाया में।
निज कर्म कलंक मिटाने को, यह भक्ति ग्रंथ रचाया है।
पच्चिस सौ इकतिस वीराब्दे[3], आषाढ़ शुक्ल गुरु पूनम[4] थी।
चिंतामणि पारस बाबा के, चरणों में भीड़ अनुपम थी॥4॥
महाराष्ट्र सांगली गाँव भाग, उसको शुभ अवसर प्राप्त हुआ।
जिन भक्ति पूजन पूर्ति में, मेरा अन्तर्मन व्याप्त हुआ॥
सब रोग शोक दुःख निर्धनता, नवग्रह विधान हर लेता है।
आठों कर्मों का नाश करे, श्री जिन गुण सम्पत देता है॥5॥

दोहा- यश सुख प्रज्ञा शांति दे, नवग्रह शांति विधान।
'गुप्तिनंदी' भी कर सके, निज स्वरूप का भान॥

॥ ॐ नमः॥

1. विक्रम संवत 2060, 2. 10 अगस्त 2003, 3. वीर संवत् 2531, 4. 2 जुलाई 2014

Created by Universal Document Converter

श्री नवग्रह शांति विधान की आरती -1

(तर्ज : भाया कई जमानों आ गयो रे...)

घुंघरु छम छमा छम छन नन नन नन बाजे रे बाजे रे
श्री जिनवर की आरती में मेरा मनवा नाचे रे

नवरत्नों की थाली में हम, जगमग दीप सजायें।
नवग्रह की बाधा हरने को, प्रभुवर के गुण गायें।। घुंघरु...

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म गुण गाऊँ।
चंद्र पुष्प शीतल सुपार्श्वजिन, वासुपूज्य को ध्याऊँ।। घुंघरु...

श्री श्रेयांस अनंत विमल जिन, धर्म शांति सुखकारी।
कुंथु अरह मल्लि मुनिसुव्रत, नमि नेमि दु:खहारी ।। घुंघरु...

पार्श्व वीर चौबीसों प्रभुवर, शिवपुर राह दिखाओ।
पंच परम परमेष्ठी मेरा, गमनागमन मिटाओ ।। घुंघरु...

ढोल मंजीरा झांझर घुंघरु, ढपली बांसुरी बाजे।
भक्ति नृत्य करते भक्तों के, बीच प्रभुजी राजे ।। घुंघरु...

नवग्रह शांति विधान रचाकर, प्रभु की आरती गायें।
'गुप्तिनंदी' भी मुक्ति पाने, प्रभु शरणा अपनायें ।। घुंघरु...

आरती -2 *(तर्ज : नागिन...)*

जय-जय बोलो आरती कर लो, श्री नवग्रह शांति विधान की।
हम करें सभी मिल आरतिया।।

पद्म चन्द्र श्री वासुपूज्य जिन, शांति वृषभ सुखकारी।
पुष्पदंत श्री मुनिसुव्रत जिन, पार्श्व नेमि दु:खहारी।। प्रभु जी...
ढोलक बाजे, झांझर बाजे, श्री नवग्रह शांति विधान की। हम...

चौबिस जिन का नाम सुमरकर, पंच परम पद ध्यायें।

Created by Universal Document Converter

जगमग दीपों की थाली ले, आरती करने आये।। प्रभु जी...
ढपली बाजे, वीणा बाजे, श्री नवग्रह शांति विधान की। हम...

श्री नवग्रह शांति विधान से, अपने पाप नशायें।
चारों गति के गमन मिटाने, 'राज' शरण में आये।। प्रभु जी...
घुंघरू बाजे, घंटा बाजे, श्री नवग्रह शांति विधान की। हम करें...

चन्द्र शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री अरिहन्त परमेष्ठी की आरती-1

(तर्ज : ॐ जय...)

ॐ जय अरिहन्त प्रभो, स्वामी जय अरिहन्त प्रभो।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर-2 हित उपदेशी विभो।। ॐ जय अरिहन्त...

चार घातिया कर्म नशायें, गुण अनन्त पायें। स्वामी गुण...
धर्म सभा में राजे-2, अमृत बरसायें।। ॐ जय अरिहन्त...

वसु मंगल द्रव्यों से पूजित, प्रातिहार्य भारी। स्वामी प्राति...
चौंसठ चँवर ढुराये-2, यक्ष मनोहारी।। ॐ जय अरिहन्त...

तीर्थंकर चौबीस भरत के, बहुविध अर्हंता। स्वामी बहुविध...
उनकी वाणी झेले-2, गणधर गण नेता।। ॐ जय अरिहन्त...

चन्द्र-शुक्र नवग्रह पीडाऐं, अर्हत् नाम हरे। स्वामी अर्हत्...
रोग शोक निर्धनता-2, अर्हत् भक्ति हरे।। ॐ जय अरिहन्त...

जिसने तुम गुण गाया जिनवर, उसने सुख पाया। स्वामी उसने...
मुक्ति राजश्री पाने-2, 'गुप्तिनंदी' आया।। ॐ जय अरिहन्त...

आरती-2 *(तर्ज : मिलो न तुम तो...)*

अरिहन्तों के गुण हम गायें, मंगल दीप जलायें, करें हम आरती...
सुरभित घृत के दीप जलाकर, मंगल वाद्य बजायें। करें हम आरती...

Created by Universal Document Converter

तीन भुवन के स्वामी, त्रिभुवन को सुखकार हो,
त्रय काल ज्ञाता जिनवर, रत्नत्रय दातार हो,
छत्रत्रय सुर यक्ष लगायें, मंगल द्रव्य सजायें।।
करें हम आरती...

घाति कर्म के हर्ता, चतु संघ के आधार हैं,
छ्यालिस गुण के धारी, केवली श्रुत भंडार हैं,
ज्ञान ज्योति का दीप जलायें, मंगल नृत्य रचायें।।
करें हम आरती...

नवलब्धियों के धारी, नवग्रह दोष निवारते,
धर्म सभा में प्राणी, शुक्र-चन्द्र बाधा परिहारते,
'गुप्तिनंदी' त्रय गुप्ति पाने, मंगल भाव बनाये।।
करें हम आरती...

रवि-मंगल ग्रहारिष्ट निवारक श्री सिद्ध परमेष्ठी की आरती

(तर्ज : कभी राम बनके, कभी श्याम बनके...)

चंदा चांदनी दे, सूरज किरणें दे,
करें सिद्ध प्रभु की हम आरती।

प्रभु आठों कर्म विनाशे, फिर सिद्ध शिला में राजे।
सब लोकालोक प्रकाशे, लोकाग्र क्षेत्र में राजे।।
जय-जय बोले, मेरा मन डोले,
करें सिद्ध प्रभु की हम आरती।

समकित दर्शन गुण ज्ञानी, अगुरुलघु अव्याबाधी।
सूक्ष्मत्व वीर्य अवगाही, अक्षय अनंत गुण धारी।।
ज्योति चमके रे, घुंघरू छनके रे,
करें सिद्ध प्रभु की हम आरती।

Created by Universal Document Converter

हम दीपमालिका लायें, निज आतमदीप जलायें।
सब सिद्धों के गुण गायें, रवि-मंगल दोष नशायें॥
त्रय गुप्ति वरें, शिवराज करें,
'चन्द्रगुप्त' करे है प्रभु आरती।

आरती-2 *(तर्ज : माईन-माईन...)*

श्रीमत् परम विशुद्ध प्रभु की, आरती करने आये।
अजर अमर पदवी को पाने, सिद्धों के गुण गाये॥ प्रभुवर ऽऽऽऽ...

कामशत्रु को हरने वाले, शुक्ल ध्यान के धारी।
घन घाति कर्मों को नाशे, बने शुद्ध अविकारी॥
अष्ट कर्म क्षय करके भगवन, गुण अनंत प्रगटायें।
अव्याबाध अचल अविनाशी, अगुरुलघु गुण पाये॥ जिनवर ऽऽऽ...

शुद्ध बुद्ध लोकोत्तर स्वामी, लोकनाथ कहलाते।
विश्ववंद्य गुण नायक निर्मल, जिनशासन बतलाते॥
निष्कलंक निर्ग्रंथ निरंजन, जगत्प्रभु को ध्याये।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभुजी, विघ्न समूह नशाये॥ प्रभुवर ऽऽऽऽ...

सर्व ज्ञेय के ज्ञातादृष्टा, निज आतम में रमते।
रवि-मंगल ग्रह की बाधायें, सिद्ध जिनेश्वर हरते॥
देवों के जो देव कहाते, स्वयंबुद्ध कहलाये।
सिद्ध अनंतानंत प्रभु को 'आस्था' शीश झुकाये॥ जिनवर ऽऽऽ...

गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री आचार्य परमेष्ठी की आरती

(तर्ज : ना कजरे की...)

हम लाये दीपक थाल, गुरु सन्मुख हो नत भाल।
आचार्य मुनीश महान्, गुरु की आरती करते आज॥

Created by Universal Document Converter

गुरु पंच महाव्रत धारी, श्रुत ज्ञान निधि भंडारी।
व्रत संयम के दातारी, कहलाते पंचाचारी।
ये दयालु, हैं कृपालु-2, तोड़े कर्मों के जाल।। हम लाये....

गंभीर हैं सागर जैसे, हित मित प्रिय वाणी कहते।
है सिंह समान पराक्रम, शिष्यों का पालन करते।
दीक्षा दाता, शिक्षा दाता-2, महिमा इनकी है विशाल।। हम लाये....

आचार्य दर्श हम पायें, गुरु ग्रह का कष्ट मिटायें।
'राजश्री' शीश झुकायें, भव सागर से तिर जाये।
भक्ति गायें, मुक्ति पायें-2, गुरु सबके हैं प्रतिपाल।। हम लाये....

बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री उपाध्याय परमेष्ठी की आरती

(तर्ज : प्यारा लागे...)

पाठक गुरु ऋषिराज, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ, गुरु चरण पखारूँ-2।। हो बुध बाधा शांत.....

पच्चीस मूलगुणों के धारी, ऋषिवर पाठक ज्ञानी ध्यानी।
करदो भव से पार, आज थारी आरती उतारूँ।।

पठन और पाठन करवाते, शिष्यों का अज्ञान हटाते।
मिट जाये अज्ञान, आज थारी आरती उतारूँ।।

ज्ञान किरण विकसाने वाले, निज स्वरूप को पाने वाले।
ज्ञान मूरति गुरुराज, आज थारी आरती उतारूँ।।

समता रस का पान जो करते, निज में निज संग रमते रहते।
सौम्य शांत मनहार, आज थारी आरती उतारूँ।।

'क्षमाश्री' गुरुवर गुण गाये, भक्ति भाव के पुष्प चढ़ाये।
हो गुरु प्राणाधार, आज थारी आरती उतारूँ।।

Created by Universal Document Converter

शनि-राहु-केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री साधु परमेष्ठी की आरती

(तर्ज : स्याद्वाद के...)

ज्ञान ध्यान में रत गुरुओं को, वंदन करने आया हूँ।
जगमग दीपों की थाली ले, आरती करने आया हूँ।।

पंच महाव्रत धारण करते, पंच परावर्तन हरते। पंच-
निर्मल भावों के धारी को, सुर नर किन्नर सब नमते। सुर-
गमनागमन मिटाओ मेरा, कीर्तन करने आया हूँ 2।।
जगमग दीपों की थाली ले.....

चलते-फिरते तीर्थ गुरु का, दर्शन सब सुख का दाता। दर्शन-
मोक्ष मार्ग के पथ दर्शक का, नाम सुमर मन हर्षाता। नाम-
गुरु पद छाँव तले जीवन का, सुमन खिलाने आया हूँ 2।।
जगमग दीपों की थाली ले.....

धीर वीर गंभीर अचल बन, क्षमा धैर्य गुण को धारे। क्षमा-
वेष दिगम्बर धारण करके, वसु कर्मों को परिहारे। वसु-
व्रत संयम की शक्ति जगा दो, भक्ति करने आया हूँ 2।।
जगमग दीपों की थाली ले.....

गुरु आशीष हमें मिल जाये, ज्ञान सुधा रस पान करें। ज्ञान-
'राज' गुरु की शरणा पाके, पूरण निज अभियान करे। पूरण-
राहु-केतु-शनि सर्व ग्रहों की, बाधा हरने आया हूँ 2।।
जगमग दीपों की थाली ले.....

***

Created by Universal Document Converter

नवग्रह होम कुंड मंडप

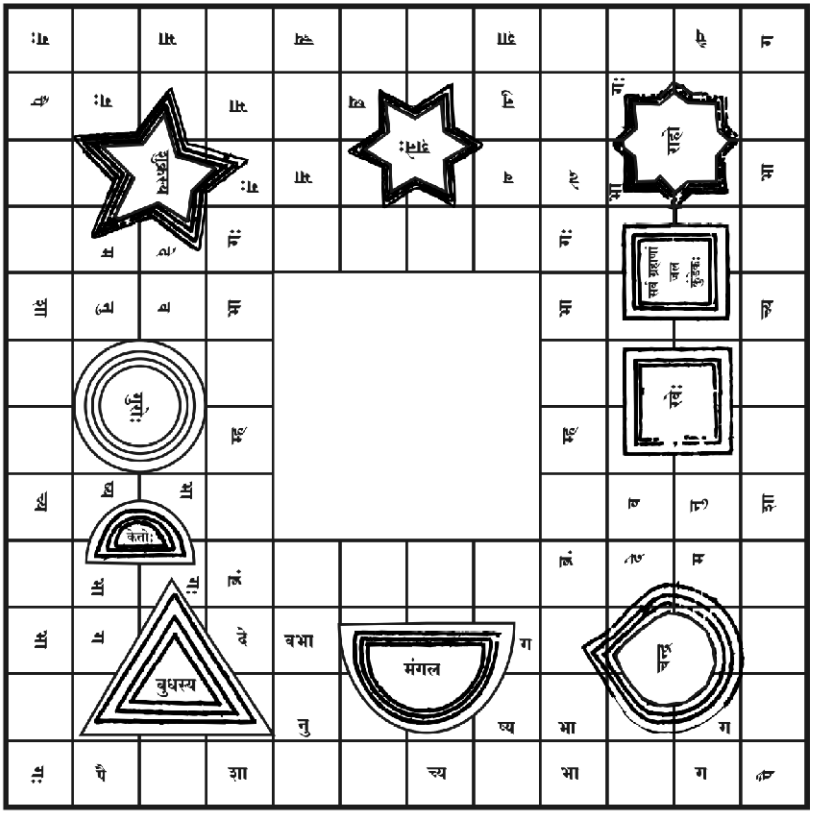

Created by Universal Document Converter

पंचम श्रुतकेवली आचार्यश्री भद्रबाहु स्वामी की पूजा

रचनाकार–मुनि श्री चन्द्रगुप्त

(गीता छन्द)

श्री पाँचवें श्रुतकेवली गुरु, भद्रबाहु प्रसिद्ध हैं।
श्रुतज्ञान द्वादश अंगमय, जिनवाणी जिनको सिद्ध है॥
मेरे हृदय की वेदिका, जिस पर सिंहासन आपका।
ले पुष्प आज पुकारता, सुस्वागतम् गुरु आपका॥

ॐ ह्रीं श्री प.पू. पंचम श्रुतकेवली आचार्यश्री भद्रबाहु स्वामी ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननम्, अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छन्द)

गुरुदेव भद्रबाहु की है भद्र भावना।
उनके चरण पखारने की मेरी भावना॥
गुरु भद्रबाहु भद्रता प्रदान कीजिये।
हे पाँचवें श्रुतकेवली श्रुतज्ञान दीजिये॥1॥

ॐ ह्रीं श्री प.पू. पंचम श्रुतकेवली आचार्यश्री भद्रबाहु स्वामी चरणेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! आपके चरण हैं चंद्रगिरी पर ।
चंदन चढ़ाऊँ आज, जाके चंद्रगिरी पर॥ गुरु...॥2॥

ॐ ह्रीं श्री..... संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हर शब्द–शब्द आपका आगम प्रमाण है।
अक्षत चढ़ा मुझे मिलेगा मुक्तिधाम है॥ गुरु...॥3॥

ॐ ह्रीं श्री..... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुदेव कामबाण पर ही बाण चलाये।
ये भक्त पुष्पमाल लेके भक्ति रचाये॥ गुरु...॥4॥

ॐ ह्रीं श्री..... कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

सम्यक्त्व वचन आपके मधुर मिठाई है।
मैंने चढ़ा मिठाई वो मिठाई पाई है।।
गुरु भद्रबाहु भद्रता प्रदान कीजिये।
हे पाँचवें श्रुतकेवली श्रुतज्ञान दीजिये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री..... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये लाख-लाख दीप की शिखाएँ मिल रही।
गा आरती कली-कली हृदय की खिल रही।। गुरु...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री..... मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत गुफा वनों में करें आप साधना।
मैं धूप चढ़ा चाहूँ आप जैसी साधना।। गुरु...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे त्याग के शिखर मुझे भी त्याग सिखाओ।
फल अर्चना का दिव्य सुफल आज चखाओ।। गुरु...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री..... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं अर्घ चढ़ाऊँ सरस्वती के पुत्र को।
दो पद अनर्घ नाथ अपने इस सुपुत्र को।। गुरु...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री..... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सज-धज कर गज ज्यों करे, गज लक्ष्मी पर धार।
वैसे मैं गुरु-चरण में, करता शांतिधार।।

शांतये शांतिधारा..

दोहा- बाग-बाग में घूमकर, पुष्प चुने हैं आज।
बाग-बाग मन हो गया, पुष्पांजलि कर आज।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- द्वादशांग के ज्ञान से, गुरुवर मालामाल।
भद्रबाहु गुरुदेव की, गाऊँ मैं जयमाल।।

Created by Universal Document Converter

(शंभु छंद)

जयकार भद्रबाहु गुरु की, जयकार भद्रपरिणामी की।
जय यथानाम गुणधारी की, जय यथाजात छवि ज्ञानी की॥
शुभ देश पुण्ड्रवर्धन जिसकी, कोटिक नगरी धन-धान्यवती।
धनभाग पुरोहित सोमशर्म, जय मात सोमश्री भाग्यवती॥1॥
जिनने ब्राह्मण कुल के दीपक, श्री भद्रबाहु को जन्म दिया।
वय आठ वर्ष की होने पर, मौजी बंधन उपनयन किया॥
चौथे श्रुतकेवलज्ञानी श्री, गोवर्द्धन गुरु वहाँ आये।
जिनके संग मुनि हजारों थे, सबके मन इक अचरज छाये॥2॥
सबने क्रीड़ांगण में देखा, श्री भद्रबाहु की टोली को।
जो खेल-खेल में चढ़ा रहा, इक पर इक तेरह गोली को॥
ये पंचम श्रुतकेवलज्ञानी, होगा गुरुवर ने जान लिया।
उस तीक्ष्ण बुद्धि बालक ने आ, गुरुवर को भव्य प्रणाम किया॥3॥
बालक का हाथ पकड़कर के, गुरुवर उसके घर पर आये।
फिर मात-पिता की स्वीकृति ले, गुरुवर बालक को ले जाये॥
तब माँ बोली गुरुवर मेरे, लल्ला को दीक्षा मत देना।
गुरुवर तथास्तु कहकर बोले, विश्वास करो मेरा बहना॥4॥
सम्पूर्ण जिनागम पढ़ा उसे, गुरुवर ने वापस घर भेजा।
हर्षाया मात-पिता का मन, श्री भद्रबाहु ने घर पे जा॥
विद्वानों से शास्त्रार्थ किया, जिनमत का शंख बजाया था।
दीक्षा दे द्वादश अंगों से, गुरुवर ने तुम्हें सजाया था॥5॥
गोवर्द्धन गुरु स्वर्गस्थ हुए, तुमको आचार्य बनाकर के।
शोभे चौबीस हजार मुनि, तुमसा ज्ञानी गुरु पाकर के॥
तब मुकुटबद्ध अंतिम राजा, श्री चंद्रगुप्तजी मौर्य हुए।
भारत के कोने-कोने में, उन पुण्य पुरुष का शौर्य छुए॥6॥
उस निकट भव्य ने रात्रि में, देखे अद्भुत सोलह सपने।
कलियुग का दुःखदायी चित्रण, देखा श्री चन्द्रगुप्त नृप ने॥

Created by Universal Document Converter

तब ही उज्जैन नगर आये, श्री भद्रबाहु गुरु संघ लिये।
अगवानी करके झूम रहे, सब श्रावक ढोल-मृदंग लिये॥7॥
गुरु भद्रबाहु ने राजन को, सपनों का फल ये बतलाया।
ये पंचम काल दुःखों का घर, दुःख जहाँ काल बनकर आया॥
मध्यांचल में सबसे पहले, जिनधर्म नष्ट हो जायेगा।
धीरे-धीरे से धर्म छोड़, ये देश भ्रष्ट हो जायेगा॥8॥
दक्षिण भारत में ही केवल, अंतिम तक धर्म-ध्वजा होगी।
जहाँ चंद्र समान मुनि होंगे, आर्यिका चंद्रिका सम होगी॥
इस कलियुग में सम्यग्दृष्टि, जुगनू जैसे थोड़े होंगे।
जैनी भी जैनाभासी बन, जिनमत का गला मरोड़ेंगे॥9॥
फिर भी जिनधर्म स्वरूपी रथ, युवा और युवती खीचेंगे।
आचार्य मुनि आर्यिका बन, जिनधर्म बगीचा सीचेंगे॥
सपनों का ऐसा दुष्फल सुन, नृप चन्द्रगुप्त भयभीत हुए।
तब मुकुटबद्ध तज राजमुकुट, मुनि बन हर मन का गीत हुए॥10॥
करने आहार नगरियाँ में, गुरु भद्रबाहु इक दिवस चले।
तब कहे एक शिशु 'गच्छ-गच्छ', जबकि पलने में पले-फले॥
फिर अंतराय करके गुरुवर, 'कति बरस' शिशु से बोल रहे॥
तब बालक 'बार बरस' ऐसे, तुतलाते शब्द अमोल कहे॥11॥
अष्टांग निमित ज्ञानी गुरु ने, शिशु के संकेतों को जाना।
उत्तर भारत बारह वर्षों, दुष्काल ग्रस्त होगा जाना॥
गुरुवर बोले सब मुनियों से, अब दक्षिण भारत जायेंगे।
दुष्काल ग्रस्त इस उत्तर में, कैसे मुनि धर्म निभायेंगे॥12॥
तबसे मुनि संग विभाज्य हुआ, आधा ही संघ प्रयाण करें।
श्री श्रवणबेलगोला तक जा, सब चंद्रगिरी पर ध्यान करें॥
तब 'यहीं ठहर जाओ' ऐसा, अंबर यह वाक्य बुलंद करें।
गुरुदेव मरण को निकट जान, शुभ मृत्यु महोत्सव धन्य करें॥13॥

Created by Universal Document Converter

हे श्रुतकेवलज्ञानी मुझको, श्रुतकेवलज्ञान प्रदान करो।
कल्याणों के मंदिर गुरुवर, इस बालक का कल्याण करो॥
हे नाथ ! आपके लघुनंदन, श्री चंद्रगुप्त मुनि कहलाए।
यह 'चंद्रगुप्त' भी अरज करें, मुनि चंद्रगुप्त सम बन जाए॥14॥

ॐ ह्रीं श्री प.पू. पंचम श्रुतकेवली आचार्यश्री भद्रबाहु स्वामी चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भद्रबाहु गुरु आपके, चरणों में यह शीश।
उस पर दोनों हाथ रख, गुरुवर दो आशीष॥

इत्याशीर्वादः, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प.पू. कविहृदय प्रज्ञायोगी आचार्यश्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव की आराधना

रचनाकार : मुनिश्री चन्द्रगुप्त

(नरेन्द्र छन्द)

श्री गुप्तिनंदी गुरुवर जी, कविहृदय प्रज्ञायोगी।
हृदय कमल में आन विराजो, बन जाऊँ मैं भी योगी॥
मन मंदिर की तुम हो प्रतिमा, कैसे महिमा गाऊँ मैं।
सुरभित मनहर पुष्पांजलि से, आह्वानन कर ध्याऊँमैं॥1॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव अत्र अवतर-अवतर सवौषट् आह्वाननम्, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीरोदधि सम निर्मल गुरुवर, निर्मलता पाने आया।
क्षीरोदधि का जल लेकर मैं, चरण कमल धोने आया॥
प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी, त्रय गुप्ति के पालक हो।
सबके लालन-पालनकर्त्ता, श्रमण संघ संचालक हो॥

ॐ ह्रीं आचार्यश्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

Created by Universal Document Converter

गुरुवर तुमने मुनिपद धारा, भवसंताप मिटाने को।
तुम पद चंदन आज चढ़ाता, भव आताप नशाने को॥
प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी, त्रय गुप्ति के पालक हो।
सबके लालन-पालनकर्त्ता, श्रमण संघ संचालक हो॥

ॐ ह्रीं .... संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

भौतिक पद के त्यागी गुरुवर, गुण महिमा गाने आया।
मुक्ता अक्षत अर्पण करके, अक्षयपद पाने आया ॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं .... अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

कमल केतकी जूही चम्पा, पुष्प मनोहर लाता हूँ।
पद पंकज में सुमन चढ़ाकर, भक्तिनृत्य रचाता हूँ ॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं ....कामबाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

मधुर-मधुर वाणी है तेरी, जो हित का उपदेश करे।
षटरस व्यंजन से अर्चाकर, क्षुधा अरि का क्लेश हरे ॥ प्रज्ञायोगी...

ॐ ह्रीं .... क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

केवल प्रज्ञा दीप जलाने, जगमग दीप सजाता हूँ।
ज्ञान दिवाकर के चरणों में, मंगल आरती गाता हूँ॥ प्रज्ञायोगी.....

ॐ ह्रीं .... मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

आठों कर्म नशाने गुरुवर, द्वादश तप को धरते हैं।
धूप घटों में धूप खिरा हम, पाप कर्म को हरते हैं ॥ प्रज्ञायोगी.....

ॐ ह्रीं .... अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

षट् ऋतुओं के फल लेकर मैं, गुरुभक्ति करने आया।
मोक्ष महाफल की आशा ले, नतमस्तक होने आया॥ प्रज्ञायोगी.....

ॐ ह्रीं .... महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

जलगंधादि अष्टद्रव्य ले, जय-जय घोष लगाते हैं।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से, उत्तम अर्घ चढ़ाते हैं॥ प्रज्ञायोगी.....

ॐ ह्रीं .... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

Created by Universal Document Converter

दोहा : शांतिदूत गुरु चरण में, करते शांतिधार।
चरण-पुष्प में हम करें, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा...दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र ॐ ह्रूँ गुप्तिनंदी सूरिभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

(सखी छंद)

गुणमाला गुरु की गायें, फूलों की माला लायें।
हम जय-जयकार लगायें, जयमाला गुरु की गायें॥

(तर्ज : माईन माईन...)

श्रद्धा के फूलों की माला, भक्त सभी ले आये।
श्री गुप्तिनंदी गुरुवर की, जयमाला हम गाये॥ गुरुवर हो ऽऽऽ.....

सावन वद साते को खुशियाँ, सावन बनकर बरसे।
जन्म हुआ भोपाल नगर में, कोमलचंद जी हर्षे॥
मात त्रिवेणी बाल शिशु को, निरख निरख हर्षायें।
श्री गुप्तिनंदी गुरुवर की, जयमाला हम गायें॥ श्री गुप्तिनंदी....

पड़गाहन राजेन्द्र करे, गुरुवर को घर ले आये।
भक्ति से आहार दिया पर, अंतराय आ जाये॥
बोला मैं उपवास करूँगा, गुरुवर तब समझाये। श्री गुप्तिनंदी....

घर वालों से आज्ञा माँगी, मुक्तिपथ की ठानी।
बोले जब तक ना जाने दो, लूँ ना भोजन पानी॥
करके अनशन तीन दिवस का, शरणा गुरु की पायें। श्री गुप्तिनंदी....

रोहतक नगरी में आ करके, कुंथुगुरु को ध्यायें।
वर्ष अठारह की लघुवय में, उनसे मुनिव्रत पायें॥
श्री आचार्य कनकनंदी को, शिक्षा गुरु बनायें। श्री गुप्तिनंदी....

Created by Universal Document Converter

गोम्मटेश के द्वारे गोम्मट, गिरी इन्दौर नगर में।
नर-नारी जयघोष करें, आचार्य पदारोहण में॥
श्रुतपंचमी को मुनिवर 'गुप्ति', जैनाचार्य कहायें। श्री गुप्तिनंदी....

हे गुरुवर ! तुम कविहृदय हो, मनहर काव्य बनाते।
कलम चला भौतिक मानव की, भौतिकता छुड़वाते॥
जो तेरे चरणों में आये, सच्चा भक्त कहाये। श्री गुप्तिनंदी....

हे भवसिंधु तारणहारी, मेरी नाव तिराना।
मुक्तिराजश्री पाने हेतु, संयम शक्ति दिलाना॥
'चन्द्रगुप्त' गुरु शरणा पाके, पूजन-भजन बनायें। श्री गुप्तिनंदी....
ॐ ह्रीं ...जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : झाँझर-ढपली-ढोल ले, करते जय-जयनाद।
श्री गुप्तिनंदी गुरु, दे दो आशीर्वाद॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

प.पू. कविहृदय, आर्षमार्ग संरक्षक, ज्ञानदिवाकर, प्रज्ञायोगी
आचार्यश्री गुप्तिनंदी गुरुदेव की पूजा

रचयित्री : गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी

(शंभु छंद)

हे पंचमहाव्रत ! के धारी, हे बालयोगी ! मुनि को वन्दन।
हम हृदयकमल में बुला रहे, करने भावों से स्थापन॥
हो सौम्य शांत प्रतिभाधारी, गुण गाते हैं सब नर-नारी।
सन्निकट हमारे सदा रहें, बन जायें तुम सम अविकारी॥1॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्॥

Created by Universal Document Converter

निर्मल मन के धारी गुरु को, निर्मल जल चरण चढ़ाते हैं।
भावों की शुचिता पाने को, गुणगान तिहारा गाते हैं।।
गुरुवर की आरती पूजन से, मन में शांति हो जाती है।
गुरु गुप्तिनंदी की शरणा पा, जीवन में क्रांति आती है।।

ॐ ह्रीं आचार्यश्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

शीतल स्वभाव के धारी मुनि, हम चंदन से अर्चा करते।
संसार ताप से बचने को, गुरु शरण धर्म चर्चा करते।। गुरुवर.....।।

ॐ ह्रीं.....संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

रत्नत्रय धारी हैं गुरुवर, अक्षय पद को पाने वाले।
शुभ अक्षत चरण चढ़ाते हैं, बनकर तेरे हम मतवाले।। गुरुवर.....।।

ॐ ह्रीं.....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

पुष्पों से कोमल हे गुरुवर !, दुर्लभ संयम अपनाया है।
इस काम अरि से बचने को, चरणों में पुष्प चढ़ाया है।। गुरुवर.....।।

ॐ ह्रीं.....कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

वश करने क्षुधावेदनी को, कर पात्र एक भुक्ती करते।
ऐसे गुरुवर के चरणों में, नैवेद्य चढ़ा दु:ख से बचते।। गुरुवर.....।।

ॐ ह्रीं..... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

अज्ञान अँधेरे में भटके, प्राणी को ज्ञान बताया है।
हम दीप चढ़ाते चरणों में, हमने ज्ञानी गुरु पाया है।। गुरुवर.....।।

ॐ ह्रीं.....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

आठों कर्मों से लड़ने को, असिव्रत तुमने है धार लिया।
यह धूप धूपायन में खेकर, हमने तेरा यशगान किया।। गुरुवर.....।।

ॐ ह्रीं..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

Created by Universal Document Converter

अनुपम फल को पाने वाले, शिवपुर के राही हे गुरुवर।
हम सुफल चढ़ाकर पूज रहे, पाने मुक्ति पथ की ये डगर॥
गुरुवर की आरती पूजन से, मन में शांति हो जाती है।
गुरु गुप्तिनंदी की शरणा पा, जीवन में क्रांति आती है॥

ॐ ह्रीं.....महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

गुप्तिनंदी गुप्तिधारी, हो मोक्षपुरी के अधिकारी।
हम अष्टद्रव्य का अर्घ चढ़ा, बन जायें संयम के धारी॥गुरुवर.....॥

ॐ ह्रीं.....अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र ॐ ह्रूँ गुप्तिनंदी सूरिभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **गुप्तिनंदी गुरुदेव जी, करते निज कल्याण।**
जयमाला पढ़कर करें, गुरुवर का गुणगान॥

(तर्ज : झीनी-झीनी उड़ी रे गुलाल, चालो रे मंदरिया में..)

माँ त्रिवेणी के भाग्य जगे थे, कोमलचन्द घर वाद्य बजे थे।
खुशियाँ अपरम्पार॥ चालो रे... ॥1॥

एक अगस्त उन्नीस सौ बहत्तर, गुरुवर तुमने जन्म लिया था।
हो गया मंगलकार॥ चालो रे... ॥2॥

नगर भोपाल से चमका सितारा, छोड़ दिया गुरु ने घर बारा।
मच गया हाहाकार॥ चालो रे... ॥3॥

वर्ष अठारह की लघुवय में, मुनिव्रत धार लिया गुरुवर ने।
हो गई जय-जयकार॥ चालो रे... ॥4॥

Created by Universal Document Converter

सूरीपद गोम्मटगिरि पाया, भक्तों ने जयकार लगाया,
बने स्व पर सुखकार॥ चालो रे... ॥5॥

छत्तिस गुण को पालन करते, निर्भय हो परिषह भी सहते।
करते पाप निवार॥ चालो रे... ॥6॥

विविध कलायें इनको आतीं, जो जन-जन के मन को लुभातीं।
हो जग के मनहार॥ चालो रे... ॥7॥

काव्य रचा जिनभक्ति बनाते, प्रवचन से सबको हर्षाते।
करते जग उद्धार॥ चालो रे... ॥8॥

नहीं किसी से मोहित होते, किन्तु सबका मन हर लेते।
हो जन मन आधार॥ चालो रे... ॥9॥

हे गुरुवर ! हम तव गुण गायें, भव दु:खों से हैं घबराये।
कर दो बेड़ा पार॥ चालो रे... ॥10॥

शरण आपकी हम नित पायें, अपना जीवन धन्य बनावें।
पावें मुक्तिद्वार॥ चालो रे... ॥11॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : अल्प बुद्धि मैं हूँ, गुरु 'क्षमा' करें गुरुराज।
शक्ति हीन हूँ हे गुरु !, दे दो शरणा आज॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Created by Universal Document Converter

प.पू. प्रज्ञायोगी आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव की पूजा

रचयित्री : आर्यिका आस्थाश्री माताजी

स्थापना (गीता छंद)

छत्तीस गुणधारी गुरु, पालन करें त्रय गुप्तियाँ।
गुरु गुप्तिनंदी धर्म की, नित बाँटते हैं सूक्तियाँ॥
ऐसे गुरु की अर्चना, सौभाग्य से हमको मिले।
आह्वान करने आपका, हम पुष्प ले आये खिले॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्॥

(नरेन्द्र छंद)

काव्य कुशलता गुरुवर तेरी, प्रमुदित भाव बनाती है।
इतनी प्यारी वाणी तेरी, हमको राह दिखाती है॥
करें पाद-प्रक्षाल नीर से, जन्म-जरा-मृत हर लेना।
हे गुप्तिनंदी ! सूरिश्वर, हमको चरण-शरण देना॥1॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

(नाराच छंद)

आप पादपद्म में, सुगंध ये लगा रहे।
पाप ताप नाश हेत, शीश पे लगा रहे॥
आपकी सदा करें, सुभक्ति से सुअर्चना।
गंध आपको चढ़ा, करें सदा सुवंदना॥2॥

ॐ ह्रीं.....संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपेन्द्रवज्रा छंद)

अखंड अक्षत गजमोती लाये, गुरु चरण में अक्षत चढ़ायें।
गुरु के जैसा कोई न दूजा, करें सदा हम गुरु की पूजा॥
गुरु गुप्तिनंदी त्रय गुप्तिधारी, कृपालू गुरुवर जय हो तुम्हारी।
महाकविश्वर विनती हमारी, सदा करें हम भक्ति तुम्हारी॥3॥

Created by Universal Document Converter

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

(काव्य छंद)

रंग बिरंगे फूल, चढ़ा रहे हम माला।
पाने तव पद धूल, आये शरण कृपाला॥
कुंथु गुरु के लाल, सबके कष्ट मिटायें।
बालयति गुरु गुप्ति, हम सब शीश झुकायें॥4॥

ॐ ह्रीं.....कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(पंच चामर छंद)

जहाँ-जहाँ गुरु चले, वहाँ करे प्रभावना।
करें प्रचार धर्म का, सुज्ञान की सुभावना॥
मनोज्ञ ले मिठाइयाँ, सुअर्चना रचा रहे।
क्षुधादि रोग नाशने, सुभक्ति से चढ़ा रहे॥4॥

ॐ ह्रीं..... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

लक्ष्य-लक्ष्य दीपों से गुरु की आरती।
गुरु आरती मोह तिमिर परिहारती॥
वीणा ढ़पली ढ़ोल मृदंग बजा रहे।
नृत्य गीत संग, हम सब भक्ति रचा रहे॥6॥

ॐ ह्रीं.....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

जिनवाणी के सूत्र बताते, जिनवाणी घर-घर पहुँचाते।
विधि विधान के गुरुवर ज्ञाता, दुःखियों के हो भाग्य विधाता॥
गुरु के रंग में हम रंग जायें, गुरु भक्ति की धूम मचायें।
सुरभित होवे दशों दिशायें, ऐसी गुरु को धूप चढ़ायें॥7॥

ॐ ह्रीं..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

(शंभु छंद)

गुप्ति गुरुवर हर भक्तों को, जिनवृष[1] की शिक्षा देते हैं।
उनके संस्कारों को पा हम, जिनधर्म सुधानंद लेते हैं॥
हे कविहृदय ! प्रज्ञायोगी, हम तेरी महिमा गाते हैं।
नाना रंगों के हरे-भरे, शुचि फल के गुच्छ चढ़ाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं ..... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी ने, कमाल कर दिया।
वात्सल्य से सभी को, मालामाल कर दिया॥
गुरुदेव मुस्कुराके, आशीर्वाद दीजिये।
पूजा हमारी आप ये, स्वीकार कीजिये॥9॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा- शांति पथ पर चल रहे, गुप्तिनंदी गुरुराज।
त्रय धारा हम नित करें, पाने सुख का राज॥ शांतये शांतिधारा.....

दोहा- निर्गुंडी उत्पल जुही, कमल केवड़ा फूल।
गुरु चरणों में भेंट हैं, पाने चरणन् धूल॥ दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रूँ गुप्तिनंदी सूरिभ्यो नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

सखी छंद- गुरु की जयमाला गायें, सुन्दर सी थाल सजायें।
नाना द्रव्यों की थाली, ध्वज श्रीफल नेवज वाली॥

(शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी का जयकार कीजिये।
गुरु नाम मंत्र का सदैव जाप कीजिये॥
कुंथु गुरु के लाल का सुंदर सा प्यारा नाम।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥1॥

1. जिनधर्म।

Created by Universal Document Converter

है जन्म भूमि आपकी भोपाल नगरिया।
नगरी को छोड़ आप चले मोक्ष डगरिया॥
माता-पिता ने आपका राजेन्द्र रखा नाम।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥2॥

कुंथु गुरु के पास में ली आपने दीक्षा।
गुरु कनकनन्दी जी से ली है ज्ञान की शिक्षा॥
मुनि से बने आचार्य आप गोम्मटेश[1] धाम।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥3॥

पूजन भजन विधान कवितायें बनायें।
जिनभक्त को जिनभक्ति में गुरुदेव लगायें॥
हर एक विषय का विशेष आपको है ज्ञान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥4॥

सब कर्म-कष्ट-रोग हरे रत्नत्रय विधान।
धन-धान्य से पूरण करें, गणधर वलय विधान॥
सुख-शांति विद्या ऋद्धि देवें, चालीसा प्रधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥5॥

श्री विजय पताका त्रिकाल चौबीसी विधान।
श्री तीस चौबीसी नवग्रह शांति का विधान।
जिन पंचकल्याणक व सिद्धचक्र का विधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥6॥

है सर्वकार्य सिद्धी व श्रुतदेवि का विधान।
जिनदेव के विधान हैं कविता में सावधान॥
इत्यादि गुरुदेव ने लिखे सरल विधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥7॥

गुरुवर जहाँ चरण धरें वो भूमि तीर्थ है।
गुरुवर की प्रेरणा से बना धर्म तीर्थ है॥

1. गोम्मटगिरी, इन्दौर।

Created by Universal Document Converter

भक्ति से 'आस्था' करें, गुरुदेव का गुणगान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी आर्षमार्ग संरक्षक, श्रावक संस्कार उन्नायक, कविहृदय, महाकवि आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– श्रद्धा से 'आस्था' नमे, जोड़े दोनों हाथ।
गुरु चरणों में विनय से, सदा झुकाऊँ माथ।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रज्ञायोगी आचार्यश्री गुप्तिनंदी गुरुदेव की आरती

(तर्ज : मैं तो भूल...)

हम तो आरती उतारे गुरुराज हमें मुक्ति द्वारा मिले।
पाया हमने गुरु का साथ हमें मुक्ति द्वारा मिले।।

कुन्थु गुरु से मुनि पद को धारा।–2
कनकनंदी से ज्ञान विस्तारा। होऽ
तुमने छोड़ा–2, परिग्रह पाप।। हमें मुक्ति...

काव्य रचाते हो पूजा बनाते।–2
धर्मोपदेश से मन को लुभाते।। होऽ
करते हो–2, जगत उद्धार।। हमें मुक्ति...

जिनवाणी माता का संदेश न्यारा।–2
करते हैं गुरुवर जी उसका प्रचारा।। होऽ
करें जग में–2, धरम का प्रचार।। हमें मुक्ति...

सुबह शाम गुरु आरती कीजे।–2
यश कीर्ति सुख और आनंद लीजे ।। होऽ
पाये 'राजश्री'–2, मुक्ति का द्वार।। हमें मुक्ति...

Created by Universal Document Converter

गुप्तिनंदी गुरुदेव की आरती

(तर्ज : इंजन की सीटी में...)

सगला चालो रे भाया मंदिर होले होले,
गुरुवर की भक्ति में म्हारो-मन डोले-2

बाल ब्रह्मचारी हैं गुरुवर, सौम्य मूर्ति के धारी।
इनके दर्शन करने आवे, मिल के सब नर नारी।। सगला.....

बाल वय में दीक्षा धारी, वरने मुक्ती नारी।
सकल परिग्रह त्याग बने, जो वेष दिगम्बर धारी।।सगला.....

ज्ञान ध्यान में रत जो रहते, परिषह को भी सहते।
कर्म विजेता बनने को जो, उपसर्गों को सहते।। सगला.....

बाल युवा इनके मन भावें, शिक्षा इनसे पावें।
धर्म नीति की शिक्षा देकर, जन मन को हर्षावे।। सगला.....

भक्ति योग के रस में रमते, औरों को रमवाते।
भौतिक रस के दीवानों को, आतम रस पिलवाते।। सगला.....

नहीं किसी से पक्षपात है, समता रस के धारी।
'क्षमा' करो सब दोष हमारे, आये शरण तिहारी।। सगला.....

गुप्तिनंदी गुरुदेव की आरती

तर्ज : माईन माईन...

गुप्ति गुरु मम हृदय विराजो, मुक्ति पाने आया।
स्वर्ण पात्र में रत्न दीप ले, आरती करने आया।।
गुरुवर के चरणों में नमन-2

Created by Universal Document Converter

श्री गुरुवर की आरती करके, मिथ्या भाव हटायें।
चंचल मन को गुरु सन्मुख कर, सम्यक् भाव बनायें॥
कोमलचंद के राज दुलारे, माँ त्रिवेणी के प्यारे।
नगर भोपाल में जन्म हुआ था, सब जन मंगल गाये॥
गुरुवर के चरणों में नमन-2

कर्म विजेता बनने निकले, छत्तीस गुण के धारी।
संयम पथ पर चलकर उनने, छोडी माया सारी॥
सूरी पद के धारी गुरुवर, पंचाचार विहारी।
सौम्य मूर्ति के धारी तुम हो, मुक्ति पथ अधिकारी॥
गुरुवर के चरणों में नमन-2

झाँझर ढपली ढोल बजाकर, गुरु की भक्ति गाऊँ।
भक्ति भाव से नृत्य रचाकर, अतिशय पुण्य कमाऊँ॥
गुरु की शरणा पाकर मैंने, संयम पथ अपनाया।
गुप्ति गुरु के गुण गाने को, 'सुयश' शरण में आया॥
गुरुवर के चरणों में नमन-2

***

Created by Universal Document Converter

नवग्रहारिष्ट निवारक यंत्र-मंत्र

सूर्य ग्रह यंत्र-1

6	1	8
7	5	3
2	9	4

चंद्र ग्रह यंत्र-2

7	2	9
8	6	4
3	10	5

मंगल ग्रह यंत्र-3

8	3	10
9	7	5
4	11	6

बुध ग्रह यंत्र-4

9	4	11
10	8	6
5	12	7

गुरु ग्रह यंत्र-5

10	5	12
11	9	7
6	13	8

शुक्र ग्रह यंत्र-6

11	6	13
12	10	8
7	14	9

शनि ग्रह यंत्र-7

12	7	14
13	11	9
8	15	10

राहू ग्रह यंत्र-8

13	8	15
14	12	10
9	16	11

केतु ग्रह यंत्र-9

14	9	16
15	13	11
10	17	12

साभार:
मंत्र संहिता
आचार्य देवनन्दीजी

विधि–अशुभ ग्रहों की शांति के लिये शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन सूर्य को, सोमवार के दिन चंद्र को, मंगलवार के दिन मंगल को, बुधवार के दिन बुध को, गुरुवार के दिन गुरु को, शुक्रवार के दिन शुक्र को, शनिवार के दिन शनि को, बुधवार के दिन राहू को, रविवार के दिन केतु यंत्र को, अष्टगंध व अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर ताँबा, चांदी, सोने के ताबीज में डालकर लाल डोरे में पिरोकर पुरुष के व स्त्री के गले में बाँधे। राहू केतु यंत्र को काले डोरे में बाँधे। प्रत्येक ग्रह का यंत्र उस दिन से 45 दिन तक रोज (1 माला) 108 यंत्र लिखें। 45वें दिन ग्रह पूजा व हवन करें। शांति हो।

Created by Universal Document Converter

पूज्या प्र.ग. आर्यिका 105 श्री विजयमती माताजी की डायरी से

ग्रह निवारक मंत्र–

1. सूर्य ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः। (7000 जप अर्थात् 70 माल फेरें)
2. चन्द्र ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः। (11000 जप)
3. मंगल ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्याय जिनेन्द्राय नमः। (10000 जप)
4. बुध ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः। (9000 जप)
5. गुरु ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः। (19000 जप)
6. शुक्र ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः। (16000 जप)
7. शनि ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः। (23000 जप)
8. राहू ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथाय नमः। (18000 जप)
9. केतु ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय नमः। (10000 जप)

(जिन भगवान का जाप करें उनकी पूजन भी करें।)

नवग्रह दोष निवारक णमोकार मंत्र

1. सूर्य ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। (10 माला)
2. चन्द्र ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं। (10 माला)
3. मंगल ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। (10 माला)
4. बुध ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं। (10 माला)
5. गुरु ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं। (10 माला)
6. शुक्र ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं। (10 माला)
7. शनि ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं। (10 माला)
8. राहू ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं। (10 माला)
9. केतु ग्रह निवारक– ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं। (10 माला)

***

Created by Universal Document Converter

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार,

Created by Universal Document Converter

सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रान्ते–नगरे.....मासानांमासे..... मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥

आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥

छत्र चँवर भामंडल चम–चम, देव–दुंदुभि बजती दुम–दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥

Created by Universal Document Converter

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये ॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक ॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान ॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द ॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान ॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय ॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***

Created by Universal Document Converter

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

अतिशय क्षेत्र धर्मतीर्थ, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा
आर्ष मार्ष संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य
श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री वृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री वृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री वृहद नवग्रह शान्ति विधान
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री पंच परमेष्ठी (सर्व सिद्धि) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री जिन सहस्त्रनाम विधान
39. श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान

Created by Universal Document Converter

40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान
42. श्री सर्व दोष प्रायश्चित्त विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्ठी व्रत विधान
47. आचार्य शांतिसागर विधान
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनकनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी (आचार्य श्री कनकनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति (गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)

सी.डी.

1. श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा (सी.डी.)
2. श्री रत्नत्रय आराधना व महाशांति धारा (डी.वी.डी.)
3. श्री नवग्रह शांति चालीसा (सी.डी.)
4. श्री बाहुबली पूजा (सी.डी.)
5. ये नवग्रह शांति विधान है (सी.डी.)
6. गुप्तिनंदी गुणगान (सी.डी.)
7. वात्सल्यमूर्ति माँ राजश्री (डी.वी.डी.)
8. मेरे पारस बाबा (डी.वी.डी,)
9. देहरे के चन्दा बाबा (एम.पी. 3)
10. श्री कुन्थु महिमा (डी.वी.डी.)
11. कनकनंदी गुरुदेव तुम्हारी जय हो (एम.पी.3)
12. गुप्तिनंदी अभिवन्दना (डी.वी.डी.)
13. जयति गुप्तिनंदी डाक्यूमेन्ट्री (डी.वी.डी.) I,II
14. श्री गुप्तिनंदी संघ हिट्स
15. श्री रत्नत्रय जिनार्चना

* * *

Created by Universal Document Converter

Created by Universal Document Converter